खण्ड-07 सत्र-03 (भाग-02) / अंक-26

मंगलवार 05 जुलाई, 2022 / 14 आषाढ़, 1944 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

सातवीं विधान सभा

तीसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड-07 सत्र-03 (भाग-02) में अंक 25 से अंक 26 तक सम्मिलित हैं)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

राज कुमार

सचिव

RAJ KUMAR

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप-सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र-3 (भाग-2)   मंगलवार, 05 जुलाई, 2022/14 आषाढ़, 1944(शक)   अंक-26

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1-2
2.	संकल्प एवं उस पर चर्चा	3-53
3.	निंदा प्रस्ताव एवं उस पर चर्चा	54-90
4.	सदन पटल पर प्रस्तुत कागजात	91-93
5.	अल्पकालिक चर्चा (नियम-55)	94-145
6.	प्रतिवेदन से सहमति	146-147

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-3 (भाग-2) मंगलवार, 05 जुलाई, 2022/14 आषाढ़, 1944(शक) अंक-26

दिल्ली विधान सभा

सदन पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुआ।

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए:

1	श्री अजेश यादव	10	श्री धर्मपाल लाकडा
2	श्री अखिलेश पति त्रिपाठी	11	श्री दुर्गेश पाठक
3	श्रीमती ए. धनवती चंदेला ए.	12	श्री जय भगवान
4	श्री अजय दत्त	13	श्री जरनैल सिंह
5	सुश्री आतिशी	14	श्री करतार सिंह तंवर
6	श्री अमानतुल्ला खान	15	श्री कुलदीप कुमार
7	श्री अब्दुल रहमान	16	श्री महेन्द्र गोयल
8	सुश्री भावना गौड़	17	श्री मुकेश कुमार अहलावत
9	श्री भूपेन्द्र सिंह जून	18	श्री महेन्द्र यादव

19 श्री नरेश बाल्यान
20 श्री नरेश यादव
21 श्री प्रल्हाद सिंह साहनी
22 श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस
23 श्री ऋतुराज गोविन्द
24 श्री रघुविन्दर शौकीन
25 श्री राजेश गुप्ता
26 श्रीमती राज कुमारी ढिल्लों
27 श्री रोहित कुमार
28 श्री शरद कुमार चौहान
29 श्री सोमदत्त
30 श्री शिव चरण गोयल
31 श्री सोमनाथ भारती
32 श्री सौरभ भारद्वाज
33 श्री सहीराम
34 श्री एस.के. बग्गा
35 श्री सुरेन्द्र कुमार
36 श्री विनय मिश्रा
37 श्री वीरेंद्र सिंह कादियान
38 श्री अभय वर्मा
39 श्री अनिल कुमार बाजपेयी
40 श्री अजय कुमार महावर
41 श्री जितेन्द्र महाजन
42 श्री मदन लाल
43 श्री मोहन सिंह बिष्ट
44 श्री ओमप्रकाश शर्मा
45 श्री पवन शर्मा
46 श्री राजकुमार आनन्द
47 श्री राजेश ऋषि
48 श्री शोएब इकबाल
49 श्री विशेष रवि

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र-3 (भाग-2) मंगलवार, 05 जुलाई, 2022/14 आषाढ़, 1944(शक) अंक-26

दिल्ली विधान सभा

सदन पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुआ।

माननीया अध्यक्ष महोदय (श्रीमती राखी बिरला) पीठासीन हुई।

श्री सौरभ भारद्वाजः माननीय अध्यक्षा जी, आज अखबार के अंदर खबर छपी है एक, विधायक अगर किसी की ट्रांस्फर के लिए किसी का फारवर्ड कर रहे हैं तो उसके लिए भी हम सीबीआई जांच करेंगे और उसके अंदर हमारे विधायक साथी संजीव झा और मुकेश अहलावत का नाम है और उसमें कहा गया है कि कुछ डीटीसी कंडक्टरों की ट्रांस्फर की रिकवेस्ट इन विधायकों ने जो है डीटीसी के डीएम को दी है और सीबीआई ने जब वहां पर छापा मारा है तो उनको वो विधायकों के लैटर हैड पर वो पत्र मिले हैं और ये खबर जो है अब वो छपवाई गई है। मेरे बीजेपी के साथी यहां पर हैं। सबका अधिकार है और ये..

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः एक बार तो सभी सम्मानित साथियों से निवेदन है कि एक-एक करकर अपनी बात को रखें अगर एक साथ सब बोलेगें तो विषय समझ में नहीं आएगा।

श्री संजीव झाः देखिए ये बात किसी एक का नहीं है ये पक्ष-विपक्ष की बात मैं नहीं कर रहा। पर कल मुझे कुछ पत्रकारों के फोन आए और उन्होंने कहा कि आप एक कोई डीटीसी का कोई अफसर गया होगा सीबीआई उसको अरेस्ट किया होगा तो आपकी कुछ चिटिठयां गई हैं तो हमने कहा ये जानकारी आपको कैसे मिली तो उन्होंने कहा कि हमें सीबीआई जो कवर करते हैं वहां से जानकारी मिली कि इस तरह की चिटिठयां आपने लिखा है। मैंने कहा लिखा होई, हो सकता है बहुत सारी चिटिठयां लिखते हैं भई कोई जनता अगर मेरे पास आए कि भई मैं बुराड़ी में रहता हूं मेरा ट्रांस्फर मुण्डका कर दिया, मेरा द्वारका कर दिया वो बहुत दूर है तो हम कहते हैं जरा संभव हो तो देख लीजिए इसको। ऐसी रोज चिटिठयां आती हैं तो मैं चिटठी लिखा हूंगा हो सकता है और मुझे पर्टिकूलर केस याद नहीं है किस केसीस के बारे में बात कर रहे हैं आप। आज सभी पेपर्स में हमने ये देखा है। देखिए, दो चीजें हैं एक क्या ये कोई साजिश है और अगर विधायक मैं जनप्रतिनिधि हूं अगर जनता की बात उचित प्लेटफॉम तक नहीं पहुंचाएंगे तो मेरा काम क्या है तो मुझे ये लगता है कि ये बहुत गंभीर विषय है। ये आज हाऊस के संज्ञान में इसलिए ला रहे हैं कि अगर चिटठी लिखना अपराध है तो फिर देश के सारे जन प्रतिनिधि जेल में होंगे वो बाहर नहीं होंगे या अब सीबीआई काम बता दे कि मंदिर में जा के पूजा-पाठ करना है, झाल बजाना है वही काम कर लेंगे हम। तो एक विषय है कि अनर्गल इसमें घसीटा जा रहा है और दूसरा

selective leak भी कराया जा रहा है। ये बदनाम करने की भी कोशिश है कि selectively कैसे मीडिया को बताया जाता है मीडिया के जरिए फोन हमारे पास आता है। आज मैं सारे पेपर में देख रहा हूं ये छपा पड़ा हुआ है तो ये बहुत गंभीर विषय है अध्यक्षा जी मुझे लगता है कि इसको हाऊस के संज्ञान में भी आना चाहिए और सभी विधायक साथी मैं देख रहा हूं बहुत सारे विधायक साथी को फोन भी आया। विधायक साथियों को स्पेसिफिक विषय को लेकर रोज़ भी है उनको और मैं विपक्ष में जो साथी हैं मैं उनको भी कह रहा हूं भई आप भी चिटिठयां, लिखना भी चाहिए। अगर इस तरह से अगर विधायकों को घसीटा जाएगा। इस तरह से अगर मान लीजिए लोगों को हम लोगों को प्रताड़ित किया जाएगा तो फिर जनता का काम कैसे होगा या तो आप ये कह दो कि जनता का काम आपको नहीं करना है। ये आज देखिए ये पीटीआई का खबर है ये जिसमें मेरा भी नाम है और मेरे और एक विधायक साथी अहलावत जी हैं उनका भी नाम है तो ये बहुत गंभीर विषय है और इसको मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूं बाकी कुछ विधायक साथी भी कुछ कहना चाह रहे हैं। मैं उनसे भी निवेदन, बाकी आप देखिए अब इस पर?

श्री जितेन्द्र महाजनः अध्यक्षा जी, मैं इस विषय पर कहना चाहता हूं...

माननीया अध्यक्षः ऐसे अपनी मर्जी से तो कोई भी उठकर अगर कुछ भी बोलने लग जाएगा तो सदन की कार्यवाही और समय की बाधयता और मर्यादा फिर कुछ रह नहीं जाएगी।

श्री ऋतुराज गोविंदः अध्यक्षा महोदय,

श्री जितेन्द्र महाजनः मैं निवेदन करना चाहता हूं।

माननीया अध्यक्षः आप निवेदन कर लीजिए समय होगा तो जरूर मौका मिलेगा। जी।

श्री ऋतुराज गोविंदः अध्यक्षा महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया। ये बहुत ही शर्म की बात है एक जनता का चुना हुआ प्रतिनिधि जो अपने आफिस में बैठता है लोगों के बीच में रहता है उसके पास हर तरह के लोग आते हैं उसके पास वो व्यक्ति भी आता है जो किसी तरह का मैडिकल प्राबलम को झेल रहा होता है। बहुत दूर उसकी पोस्टिंग होती है वो अपना एक रिकवेस्ट करता है और उसकी मदद करने के लिए जनप्रतिनिधि होने के नाते हम सभी लोग कोशिश करते हैं कि भई उसकी मदद हो जाए। किसी का मैडिकल ग्राऊंड होता है। किसी की वाईफ प्रेगनेंसी होती है। किसी का कुछ होता है। बहुत ज्यादा डिस्टेंस होता है। इस केस में हम लोग चिट्ठियां लिखते हैं लेकिन जिस प्रकार से दिल्ली के विधायकों के काम में केन्द्र की सरकार, भाजपा की सरकार षडयंत्र करने का प्रयास कर रही है, मैं ये कहना चाहता हूं इस पटल से कि यहां पर एकनाथ शिंदे और यहां पर कोई गोहाटी जाने वाला नहीं है। ये फर्जी केस बनाकर के अगर आप चाहते हो कि दिल्ली के विधायक डर जाएंगे, अगर आप चाहते हो कि हम इससे झुक जाएंगे और आप जो है सो यहां पर काम में डिसटर्बेंस पैदा कर लोगे तो मैं इस सदन के माध्यम से बताना चाहता हूं कि हम सभी चिट्ठी लिखते हैं और चिट्ठी आगे भी लिखेगें क्योंकि हमारा कर्तव्य बनता है कि लोगों की मदद जिस प्रकार से भी की जाए हम करेंगे और नहीं डरेंगे। भाजपा वालो शर्म करो। भाजपा वालो शर्म करो।

...व्यवधान...

(सभी विधायक नारे लगाते हुए वैल में आ गए।)

माननीया अध्यक्षः ये अचानक ही...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मेरा सभी साथियों से...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मेरा, एक मिनट। एक मिनट मेरा सभी साथियों, रोहित जी एक मिनट। रोहित जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मेरा सभी साथियों से निवेदन है एक बार मेरी बात तो सुन लीजिए। बात तो सुन लीजिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः नारेबाजी करने से, दो मिनट मेरी बात सुन लीजिए। सारे साथी एक बार सीट पर जाएं। मेरा सभी सदस्यों से निवेदन है ऐसे शोर करने से तो आपकी समस्या और आपकी जो बात है इसका समाधान नहीं निकल सकता। चर्चा कर कर इसका समाधान निकले... चर्चा पर ही समाधान निकाला जाएगा। चर्चा...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मेरा सभी साथियों से निवेदन है...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सदन की कार्यवाही दस मिनट के लिए स्थगित।

(सदन की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित की गई।)

सदन प्रातः 11.24 बजे पुनः समवेत हुआः

माननीया अध्यक्ष (श्रीमती राखी बिरला) पीठासीन हुई।

माननीया अध्यक्षः मैं सभी साथियों से ये कहना चाहती हूं कि जो विषय अभी थोड़ी देर पहले माननीय विधायक संजीव झा जी और सौरभ भारद्वाज जी समेत समस्त साथियों ने जो उठाया वो बहुत गंभीर विषय है। ऐसे तो कोई भी सरकार पूरे देश में चुना हुआ कोई भी प्रतिनिधि अपनी क्षेत्र की जनता के लिए कभी भी सेवाएं नहीं दे पाएगा, तो मुझे ऐसा लगता है इस मामले की गंभीरता को देखते हुए और इसकी महत्वत्ता को समझते हुए आज की जो 280 में जिन जिन सदस्यों के विषय लगे हुए थे उनको पढ़ा हुआ माना जाता है और तुरंत प्रभाव से इस विषय पर चर्चा के लिए मैं अनुमति देती हूं जिसकी शुरूआत सौरभ भारद्वाज जी करेंगे।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय, पहली बात तो मैं आपका बहुत हृदय की गहराइयों से धन्यवाद करूंगा कि आपने..

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः इनके अनुसार ये जिस प्रकार का अपने प्रस्ताव को यहां ले के आए हैं उसके लिए कम से कम वो प्रस्ताव सदन के अंदर रखा जाए तब उस पर बहस की जाए ऐसा थोड़ी कि सदन कानून से हटकर के फिर इसके लिए क्यूं रूल्स बुकस बनाई गई हैं। मैं ये आपसे निवेदन कर

रहा हूं बिल्कुल नहीं ये गलत तरीका है। ये पहले प्रस्ताव को लिख कर के आपको देना चाहिए उसके बाद उस में बहस होनी चाहिए। मैं किसी का कोई, जी।

माननीया अध्यक्षः आप लोग बैठिए। जब सदन सर्वसम्मति से इस बात की इच्छा प्रकट कर चुका है और विरोध स्वरूप अपनी आवाज भी बुलंद कर चुका है जिसकी वजह से पूरे पच्चीस मिनट सदन की कार्यवाही में देरी हुई है तो मुझे ऐसा नहीं लगता कि इसके लिए विशेष तौर पर कोई रूलिंग लाने की जरूरत है, कोई जो है किसी रूलबुक को फॉलो करने की जरूरत है क्योंकि यहां पर सभी चुने हुए विधायक हैं और चाहे सत्ता पक्ष हो, चाहे विपक्ष हो।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मैं कंपलीट कर लूं।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मैं कंपलीट कर लूं। मैं पूरी बोल लूं अपनी बात। चाहे सत्ता पक्ष का साथी हो, चाहे विपक्ष का साथी हो और पूरे देश में कोई भी चुना हुआ प्रतिनिधि हो ये उसके विशेषाधिकार का और उसकी कार्यशैली का हनन है और जब सर्वसम्मति से सदन में कोई आवाज उठाई जाती है तो मुझे लगता नहीं है कि उसके लिए किसी भी विशेष प्रकार की किसी नियमावली को जो है फॉलो करने की जरूरत है। इसलिए आपके प्वाईट को ना मानते हुए मैं एक बार पुनः सदस्य सौरभ भारद्वाज जी को कहना...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः शांत...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सब कुछ होता है। आप रूल बुक पढ़िए। आप कौन से रूल के तहत बोल रहे हैं। आप कौन से रूल के तहत बोल रहे हैं। आप कौन से रूल के तहत बोल रहे हैं।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्टः बताइए कौन से रूल के तहत..

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मैं तो पूर्ण रूप से सदन की इच्छा, पूर्ण रूप से सदन की इच्छा...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः पूर्ण रूप से...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बता तो रही हूं। बता तो रही हूं। बता तो रही हूं।

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय, मैं रूल बता देता हूं।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः फिर आप सुनिए ना। आप सुनना नहीं चाहते।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः हां तो आप सुनिए ना।

...व्यवधान....

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय...

...व्यवधान....

माननीया अध्यक्षः आप सुनिए, आप सुनिए।

...व्यवधान....

माननीया अध्यक्षः एक मिनट।

...व्यवधान....

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय...

...व्यवधान....

माननीया अध्यक्षः सौरभ जी आप दो मिनट बैठिए। दो मिनट बैठिए। मैं माननीय विधायक जी आपको यह बता दूं कि पहले तो आप किस रूल के तहत मुझे रोक रहे हैं। जब सर्वसम्मति से सदन ये चाहता है कि एक विषय पर चर्चा हो तो चर्चा होगी। चर्चा होगी।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्ट: किस रूल के तहत

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: आप किस रूल के तहत रोक रहे हैं।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: आप किस रूल के तहत रोक रहे हैं, आप बताइये।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: तो ये भी सदन का अधिकार है। ये भी सदन का अधिकार है। ये भी सदन का अधिकार है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: ये भी सदन का अधिकार है कि सदन सर्वसम्मति से जिस विषय पर चर्चा चाहेगा उस विषय पर चर्चा होगी।

...व्यवधान...

श्री मोहन सिंह बिष्ट: किस रूल के अंदर परमिशन दी है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: रूल नंबर 293 देख लिजिए पहली बात और पढ़ लिजिए। पहली बात आपके सवाल का जवाब और दूसरा जब सदन सर्व सम्मति से जिस भी विषय पर चर्चा चाहेगा तो चर्चा होगी। अब इस पर कोई वाद विवाद नहीं होगा। आपको चर्चा में हिस्सा लेना है, आपका स्वागत है। आपको चर्चा में

हिस्सा नहीं लेना तो भी आपका स्वागत है। बहुत बहुत धन्यवाद सौरभ भारद्वाज जी।

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्ष जी...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः शांत, शांत, बैठिये। ऋतुराज जी बैठिये।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्ष जी पहले तो आपका बहुत बहुत धन्यवाद और मैं आपको बताऊं। ये जो सदन की रूल बुक है इसमें..

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाजः अरे आप सुनिये। रूल बुक के अंदर ही रूल नंबर 293 है। ये डिस्क्रियेशन होता है स्पीकर साहब का Speaker decision not to be question. No decision of the Speaker in respect of allowing or disallowing any resolution or question or in respect of any other matter shall be questioned हिन्दी में किसी संकल्प या प्रश्न या किसी अन्य विषय की स्वीकृति या अस्वीकृति देने के बारे में अध्यक्ष का जो निर्णय हो, उस पर कोई आपत्ति नहीं की जाएगी। ये 293 है रूल के अंदर है। एक और...

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाजः विषय जो है वो अध्यक्षा को पता है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः माननीय सदस्य सौरभ भारद्वाज जी आपको इनके साथ चर्चा में पड़ने की जरूरत नहीं है। आप अपने विषय पर अपना वक्तव्य शुरू करें। आपको चर्चा में हिस्सा लेना है, स्वागत है, नहीं लेना है आप जा सकते हैं धन्यवाद।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी आप स्टार्ट करें।

श्री सौरभ भारद्वाजः तो अध्यक्षा महोदय, आज का जो विषय है...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः जब ये कंप्लीट हो जाएगा आपकी बात सुन ली जाएगी। अभी आप...

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः सर्व सम्मति नहीं है।

माननीया अध्यक्षः सर्व सम्मति है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सर्व सम्मति क्यों नहीं है, सत्ता पक्ष की सर्व सम्मति है। आप वाक आउट कर लिजिए। आप वाक आउट कर लिजिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः जबर्दस्ती नहीं हो रही। नहीं तो आप...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप चार चार लोग एक साथ बोलेंगे तो जवाब नहीं दिया जाएगा। चार चार लोग एक साथ बोलेंगे तो जवाब नहीं दिया जाएगा। आप लोगों में फैसला करो कि कौन बात करना चाहता है और कौन अपने विषय को रखना चाहता है। पहले आप बैठिये जब मैं परमिशन दूं तब रखिए। बैठिये। शांति बनाकर रखिये।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः राजेश गुप्ता, मेरा सभी साथियों ने बात को ध्यान से सुना नहीं, विपक्ष के साथियों ने खास करके, मैं दोबारा इस बात को दोहराती हूं कि जो विषय अभी शुरूआती समय में सारे साथियों ने उठाया। सत्ता पक्ष के साथियों ने मजबूती से जिस बात को उठाया उसमें कुछ समय के लिए आप लोगों ने भी जो है उसको सुना। उसमें पूर्ण रूप से कोई भी विधायक चिट्ठी लिखना उसका अधिकार क्षेत्र है। अपने चुने हुए विधान सभा क्षेत्र में अपने लोगों की समस्या का समाधान कराना उसकी प्राथमिक जिम्मेवारी बनती है। ऐसे में तो चाहे वो निचली म्यूनिसपल पार्टी का चुना हुआ पार्षद हो या फिर सर्वोच्च संस्था संसद में चुने हुए सांसद हो। उनके सबके विशेषाधिकार, उनके कार्य क्षेत्र

के अंदर हस्तक्षेप है। इस विषय को लेकर सर्व सम्मति से चर्चा कराने का आदेश दिया जा चुका है, जिसको भी इसमें किसी भी प्रकार का संदेह हो, संकोच हो वो अपनी बात को धैयपूर्वक और आराम से रख सकता है। शोर मचाने की बिल्कुल कहीं से कहीं तक जरूरत नहीं हैं। आपको समझ आ गयी तो अब ये चर्चा शुरू हो रही है। आपके प्वाइंट ऑफ आर्डर पर बता दिया रूल 293।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सुनाइये।

श्री अजय कुमार महावरः मैं ये कह रहा हूं अध्यक्ष महोदया कि आपने एक शब्द कहा पहले तो सर्व सम्मति, इस शब्द को वापस लिजिए सर्व सम्मति नहीं है क्योंकि हमारी आठ विधायकों की सहमति इसमें नहीं है। ठीक है।

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः भईया सर्व सम्मति नहीं है। आप से बात नहीं कर रहा, मैं चैयर से बात कर रहा हूं। मैं चैयर से बात कर रहा हूं। ये सर्व सम्मति नहीं हैं पहली बात। दूसरी बात, दूसरी बात 294 में ये साफ लिखा है कि अगर किसी 293 तो पढ़के सुना दिया गया। 294 में साफ लिखा है यदि किसी सदस्य के किसी मत विभाजन में किसी सदस्य के मत का निर्णय किये जाने के विषय में वैयक्तिक, आर्थिक या प्रत्यक्ष हितहोने के आधार पर आपत्ति की जाएं तो अध्यक्ष यदि आवश्यक समझे तो आपत्ति...

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः तो मैं कहां मना कर रहा हूं। मैं कहां मना कर रहा हूं। अरे प्रोब्लम क्या है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप अजय महावर जी...

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः उसके बाद भी आपने रूलिंग दे दी कि आप... मैं अपनी आपत्ति...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिये, दो मिनट बैठिये। दो मिनट बैठिये।

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः मैं चेयर को...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आपको समझ नहीं आ रहा है कि आप पढ़ क्या रहे हैं।

श्री अजय कुमार महावरः नहीं-नहीं, मैं पढ़ रहा हूं।

माननीया अध्यक्षः जो 294 रूल है वो वोटिंग के लिए है। यहां किसी प्रकार की वोटिंग नहीं हो रही है। मत शब्द का प्रयोग किया गया है।

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः आपने कहा है सर्वसम्मति...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः यहां मत शब्द का प्रयोग किया गया है। आपके इस ओब्जेक्शन को मैं सिरे से खारिज करती हूं और इस चर्चा को अब प्रारंभ करती हूं। शोर मचाने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। सौरभ भारद्वाज जी। सौरभ भारद्वाज जी चर्चा को शुरू करेगे।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी। सौरभ भारद्वाज जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिये कुलदीप जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप गलत दलील दे रहे हैं। आप गलत दलील दे रहे हैं। आप गलत दलील दे रहे हैं। आप गलत दलील दे रहे हैं। गलत दलील दे रहे हैं। गलत दलील दे रहे हैं आप। आप पूर्ण रूप से गलत दलील दे रहे हैं। 294 वोटिंग के लिए है। आप सदन को गुमराह नहीं कर सकते। पढ़कर आईये। पढ़कर आईये आप। सत्ता पक्ष की सम्मति है। सत्ता पक्ष की सम्मति है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी। स्टार्ट किजिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः राजेश गुप्ता जी और सही राम पहलवान जी बैठिये। राजेश गुप्ता जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः राजेश गुप्ता जी बैठिये। सही राम पहलवान जी बैठिये।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मार्शल्स आउट। मार्शल आउट, सबको। सौरभ भारद्वाज जी।

...व्यवधान...

(माननीया अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार विपक्ष के सदस्यों को सदन से बाहर किया गया।)

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा जी बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने आज इस महत्वपूर्ण...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः शुरू रखिये शुरू।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बाहर करिये बाहर। सौरभ भारद्वाज जी चर्चा शुरू करें।

श्री सौरभ भारद्वाजः जी धन्यवाद अध्यक्षा जी। देखिये अध्यक्षा जी ये आज जो हाउस के अंदर हमने देखा, इससे ये बात अपने आप में साबित हो जाती है कि जब हाउस के अंदर इस बात को लेकर चर्चा शुरू हुई कि अब सीबीआई इन चीजों की भी जांच करा करेगी कि विधायक किस आदमी के ट्रांस्फर के लिए फॉरवर्डिंग लेटर लगाते हैं और इसके अंदर भी भ्रष्टाचार की जांच अब सीबीआई करेगी तो बीजेपी के हमारे साथी और ये सब हमारे साथी गवाह हैं। बीजेपी के साथियों ने बोला कि हां ये गलत है और उन्होंने ये भी बोला कि इस पर चर्चा होनी चाहिए। ये बात मैटर ऑफ रिकार्ड है। ये सारी की सारी चीजें रिकार्ड पे हैं। इन्होंने कहा कि हां ये लेटर तो हम भी लिखते हैं। हर विधायक लिखता है। अगर ऐसा होगा तो ऐसे तो सब जांच के घेरे में आ जाएंगे। ये सब इन्होंने किया और हाउस जो है 10 मिनट के लिए सस्पेंड हुआ और 10 मिनट के लिए जब सस्पेंड हुआ तो भी यही मैसेज इनकी तरफ से हमें दिया गया कि भई हम तो इसपर चर्चा करना चाहते हैं, इस पर चर्चा होनी चाहिए। ये हर चुने हुए नुमाइंदे का चाहे वो विधायक हो, चाहे वो सांसद हो, ये उनका कर्तव्य है, उनकी ड्यूटी है। उनका राइट नहीं है, उनकी ड्यूटी है कि अगर आपके कार्यालय में आपके पास कोई आदमी आता है और वो अपनी कोई मजबूरी बताता है और बड़ी अलग-अलग मजबूरियां होती हैं। एक बार मेरे यहां कोई आया था और उसने बोला कि साहब मेरी पत्नी को कैंसर है। मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं। मैं हरियाणा के किसी गांव से आता हूं। मुझे लग रहा है शायद रोहतक की तरफ से उसने मुझे बताया और उन्होंने बोला कि हरियाणा के गांव से मैं आता हूं। छोटे-छोटे बच्चें हैं। मेरे को आने-जाने में तीन चार घंटे लगते हैं। डेढ़-दो घंटे आने में, डेढ़-दो घंटे जाने में। डीटीसी का

कंडेक्टर था तो साहब मेरा ट्रांस्फर किसी ऐसे डिपो में कर दिया जाए जो हरियाणा–दिल्ली के बॉर्डर पर हो। पश्चिम विहार की तरफ हो, वहां पर किसी पर भी मेरा कर दो तो हम चिट्ठी लिखते हैं और लिखनी भी चाहिए। किसी की पत्नी बीमार है, बच्चे छोटे हैं, देखने वाला कोई नहीं है और वो आदमी चार घंटे जो है आने–जाने के अंदर लगा रहा है तो विधायक का काम ही क्या है। विधायक का ये काम है। ये लेटर हैड छपते ही इसलिए हैं। अब हर आदमी से हर डीटीसी के कंडेक्टर से न तो ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर साहब मिल सकते। समय का अभाव रहता है, हम समझते हैं इस बात को और न हर कंडेक्टर के अंदर इतना वो होता है कि वो खुद जो है मंत्री के पास सीधा जाकर पेश हो जाएं, वो कहे कि साहब मेरा ट्रांस्फर गलत हुआ तो वो हमारे पास आते हैं। रिश्तेदारों के यहां से आते हैं। जानकारों से आते हैं। अपनी कंस्टीट्यूवेंसी से आते हैं। कई बार दूसरी कंस्टीट्यूवेंसी से आते हैं और वो बताते हैं कि जी ऐसे ऐसे हमारा है और हमारी चिट्ठी है तो हम अपने लेटर हैड पर उनके लिए लिखते हैं। उनकी सिफारिश करते हैं कि इनका ट्रांस्फर यहां नहीं यहां कर दिया जाए, यहां नहीं यहां कर दिया जाए।

सरकारी अस्पतालों के अंदर एडमिशन के लिए लोग आते हैं। ईलाज कराने के लिए लोग आते हैं। प्राईवेट अस्पतालों में ईडब्ल्युएस के अंदर ईलाज कराने के लिए लोग हमारे पास आते हैं और फर्ज किजिए मेरे पास तो रोज आते हैं। मैं आज भी एक चिट्ठी लिखकर आया हूं। एक हमारे यहां एक आदमी है उसके पिता को जो है लंग्स कैंसर है। उसका ईलाज जो है वो चाहता है मैक्स या बत्रा हॉस्पिटल के अंदर ईडब्ल्यूएस कोटे के अंदर किया जाए तो मैं अभी चिट्ठी लिख कर आया हूं। अब कल को तो ये सीबीआई वाले कहेंगे

कि साहब देखिए इस आदमी का ईलाज मैक्स हॉस्पिटल में ईडब्ल्युएस कोटे में हो गया। इसका तो 20 लाख का ईलाज मुफ्त में हो गया। इसका मतलब विधायक ने तो 20 लाख में से दो लाख रूपये अपने पास ले लिए होंगे। विधायक ने भ्रष्टाचार किया होगा। आपने क्यों चिट्ठी इसकी लिखी। मतलब इसकी कोई सीमा कोई न है और किस किस आदमी को हम क्या क्या बताते घूमेंगे तो बीजेपी के जो साथी हैं, ये बात जानते हैं और इन्होंने ये बात मानी कि हम इस चर्चा के अंदर हिस्सा लेंगे। आप चर्चा कराईये। मगर मुझे लगता है कि इतनी देर में इनके पास ऊपर से होम मिनिस्टरी से फोन आ गया क्योंकि आज रामवीर बिधूड़ी जी तो थे नहीं, वो तो कनेक्शन में रहते हैं ऊपर से तो इन्होंने जो अपने मन से किया है इनके पास ऊपर बीजेपी मुख्यालय से फोन आया। बीजेपी के या होम मिनिस्टरी से फोन आया कि तुम ये क्या कर रहे हो। ये चर्चा में क्यों जा रहे हो और इन्होंने तुरंत यू टर्न लिया और बोले कि आप कैसे चर्चा करा सकते हैं मतलब ये लोग इतने क्या शब्द मैं इनके लिए इस्तेमाल करूं कि इतने क्या कहते हैं अनपढ़ हैं अनपढ़। इतने अनपढ़ हैं ये लोग, ये कह रहे हैं कि साहब ऐसा है कि कोई यहां पर आपने कुछ पास तो कराया नहीं। अरे तुम आठ हो यहां हम बासठ हैं। हम जो चाहे पास करा लें यहां। ये मतलब क्या क्या बात है इनकी। उससे क्या होगा, मैं एक कागज पर चार लाईन लिख कर दे दूंगा कि ये हमारा रेजूलेशन है या ये मेरा प्रस्ताव है कि इस पर चर्चा होनी चाहिए। आप कहोगे जी वोट करा लो। वोट पर पास हो जाएगा, उस पर क्या होगा। मतलब सिर्फ और सिर्फ हाउस का समय खराब करने के लिए जो इन्होंने किया और जो है वो आपने बिल्कुल ठीक बोला। वोटिंग का, वोटिंग का जब डिविजन होता है, उसके अंदर जो एक रूल बना

हुआ है उस रूल को कोट कर रहे हैं कि साहब ये जो है हमारा प्वाइंट ऑफ आर्डर है। क्या क्या मतलब कि जाहिलपना है। अनपढ़पने की हद है और इसके अंदर इनकी नीयत दिखती है।

अध्यक्षा जी, ये जो विधायक होते हैं ये हर पांच साल बाद जनता के बीच में जाते हैं। हर पांच साल बाद हमको जनता जो है, इस चीज पर नापती है तोलती है कि विधायक ने जनता का क्या काम किया, क्या काम नहीं किया। हम लोग जब इसके पास काम कराने गये थे, इसने हमारे लिए चिट्ठी करी, नहीं करी। चिट्ठी क्या कई बार टेलिफोन करना पड़ता है। कई बार टेलिफोन करना पड़ता है, कई बार मंत्री जी से मिलना पड़ता है। मैं खुद मिला हूं मंत्री जी कई बार। कई बार किसी आदमी की बहुत मजबूरी होती है और उसका ट्रांस्फर वगैरह नहीं हो रहा होता तो मंत्री जी यहां पर साथ बैठे हैं, इनके पास जाकर भी मिलते हैं कि साहब इसका ट्रांस्फर करना है, बड़ा जरूरी है। मंत्री जी कोशिश करते हैं। कई बार होता है कई बार नहीं होता। ऐसा भी नहीं है कि हर बार हो ही जाता है। हम सौ चिट्ठी लिखते हैं, हो सकता है पांच का ट्रांस्फर होता है,

95 का ट्रांस्फर भी नहीं होता मगर अगर हम चिट्ठी भी लिखनी बंद कर देंगे न हम स्कूल एडमिशन के लिए चिट्ठी लिखें ना हम हॉस्पिटल एडमिशन के लिये चिट्ठी लिखें ना हम ट्रांस्फर के लिये चिट्ठी लिखें तो क्या करें एमसीडी बन जायें हम, कोई काम न करें घर पर बैठें ऐसा तो नहीं चलेगा अध्यक्ष जी। तो आज जिस तरह से हमारे बीजेपी के साथियों ने इसके ऊपर यू-टर्न लिया इससे ये समझ में आता है कि विधायक के पास क्योंकि पांच साल बाद उसको दोबारा जनता के सामने जाना होता है तो उसकी एक रेपोटेशन है जो उसके

साथ ट्रैवल करती है पांच साल तक। आपने यानि की सी.बी.आई. ने चोरों की तरह प्लांट कराई खबर किसी अफसर के हवाले से खबर नही गई, प्लांट कराई ये खबर कि आम आदमी पार्टी के दो विधायक सी.बी.आई. के जांच के घेरे में, आधे से ज्यादा लोग 90 प्रतिशत लोग हमारे देश में सिर्फ इस हैडलाइन को पढ़ेगें अध्यक्षा महोदया वो नीचे पढ़ेंगे भी नहीं कि क्या है, वो कहेंगे अच्छा जी संजीव झा भी जांच के घेरे में हैं, हूं, बेचारे ने लाल कुर्ते के अलावा आज तक कुछ पहना नहीं अब ये भी सी.बी.आई. के जांच के घेरे में हैं और दूसरे कहां गये, मुकेश अहलावत भाई यहां पर बैठे हैं। मतलब ये तो हद हो गई, मतलब आप ये कह रहे हैं कि इन्होंने लैटर लिखे और इन्होंने ट्रांस्फर कराया तो उसके अन्दर इन्होंने रिश्वत ली है इसकी जांच सी.बी.आई. करेगी। मतलब सी.बी.आई. के पास भी कोई काम नहीं बचा अब सी.बी.आई. भी अब इन कामों में लगी है मतलब ये अध्यक्षा महोदय इस हाउस से एक Resolution पास होना चाहिये जो ये कह रहे हैं इनकी चिंता दूर करनी चाहिये कि सी.बी.आई. जितने भी मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं 7 बीजेपी के उनके भी लैटर्स की जांच करे कि उन्होंने किस-किस के ट्रांस्फर के लिये लैटर लिखे हैं, नहीं लैटर लिखे जाते हैं मैं आपको बताऊँ क्या है ये जितने भी मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं इन्होंने अपने साइन करने के जो वो हैं ना वो काउंसलरों को दे रखे हैं, मैं खुद गवाह हूँ। इनके कईयों के साइन जो हैं इनके कांउन्सलर करते हैं तो इनके लैटर हैड कई जगह मिल जायेंगे, हर तरीके के लिये, ये हर चीज़ के लिये इनके मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट के आपको लैटर मिलेंगे और हमारे resolution में ये आना चाहिये कि सीबीआई को डायरेक्शन दी जाये कि ये जो 7 मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट हैं और ये जो हमारे 8 बीजेपी के साथी हैं इनके लैटर्स की भी जांच होनी

चाहिये और इनके लैटर्स की जांच तो हम अपने कार्यालय से भी शुरू करा सकते हैं अगर आप हमारी किसी कमेटी को ये काम दें तो हमारे यहां जितने भी मंत्रालय हैं हम इनके लैटर्स मंगा लेंगे और इनकी एक जो है प्रदर्शनी लगा देंगे कि बीजेपी के एम.एल.एज़ ने कितने लैटर लिखे हैं हमारे मंत्रियों को, किसी के ट्रांस्फर कराने के लिये किसी के हॉस्पिटल एडमिशन कराने के लिये कहीं पर कोई काम कराने के लिये कहीं पर कोई काम कराने के लिये तो क्या सी.बी.आई. उनकी जांच करेगी या सी.बी.आई. जो है अखबार वाले इस चीज़ को छापेंगे। मेरा मानना ये है कि अखबार भी इस तरीके की शैतानी की खबर जो छापते हैं इनको भी एक बार विधानसभा की तरफ से एक मैसेज दिया जाना चाहिये कि भई ये जो प्लान्टिड खबरें हैं जिसके अन्दर आप किसी भी विधायक का नाम लिख देते हो कि ये जांच के घेरे में ये जांच के घेरे में है इससे एक विधायक का कितना नुकसान होता है आप समझते हैं। अब ये सी.बी.आई. को इसमें कुछ मिले या ना मिले ये अगले ढाई साल तक संजीव झा और मुकेश अहलावतजी के नाम के साथ ये चीज़ चिपक गई कि ये सी. बी.आई. के जांच के घेरे में हैं और जब सी.बी.आई. को कुछ नहीं मिलेगा तो सी.बी.आई. कोई उसकी Press Release नहीं देगा और ना कोई अखबार वाला छापेगा कि सी.बी.आई. को कुछ नहीं मिला, मगर ये चीज़ हर अखबार वाला भी छापेगा हर टीवी न्यूज़ चैनल वाला भी चलायेगा कि साहब इनके ऊपर ट्रांस्फर-पोस्टिंग के अन्दर जो है कुछ गड़बड़ हुई है कोई बड़ा भ्रष्टाचार हुआ है उसके अन्दर जो हैं संजीव झा और मुकेश जी मुकेश का जो है नाम जो है ये चल रहा है ये बहुत गलत है। मेरा मानना ये है कि ये जो पूरा का पूरा इस्तेमाल केन्द्र सरकार कर रही है, सी.बी.आई. का ई.डी. का इन्कम टैक्स

का दिल्ली पुलिस का ये बेहद गलत है। नरेन्द्र मोदी जी आज प्रधानमंत्री हैं इन्दिरा गांधी भी प्रधानमंत्री थीं मगर अब थीं तो नरेन्द्र मोदी भी कल ऐसा होगा कि प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे, ना कोई अमर आया है ना कोई अमर रहा है और कोई हमेशा कुर्सी पर नहीं रहा कुर्सी हमेशा आनी-जानी है ये जो पाठ सी.बी.आई. का पाठ, ई.डी. का पाठ, इन्कम टैक्स का पाठ ये पूरे देश को जो नरेन्द्र मोदी जी पढ़ा रहे हैं ना ये पूरा देश पढ़ रहा है ध्यान से और ये सारा का सारा, मोदी जी के आगे-पीछे तो कोई है नहीं मगर बीजेपी वालों के तो परिवार हैं इनके तो बच्चे भी आयेंगे राजनीति के अन्दर ये तो राजनीति में रहेंगे, ये सब वापिस आयेगा ये law of karma है लोग भूलते नहीं हैं। आज ई.डी. हमारे ऊपर है आज सी.बी.आई. हमारे ऊपर जांच कर रही है कल जब इनके ऊपर जांच होगी तो लोग इनसे सहानुभूति नहीं रखेंगे।

माननीया अध्यक्षः कम्प्लीट कीजिये।

श्री सौरभ भारद्वाजः लोग इनको ये कहेंगे कि आप ही ने ये शुरू किया था और आप ही अब इसको भुगत रहे हैं अध्यक्षा जी आपने इस, पहली बात मैं आपको बहुत मुबारकबाद दूंगा कि आज आप यहां पर इस सीट पर बैठी हैं और आज आपने इस इतनी अच्छी चर्चा को जो है शुरू किया इसके लिये भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः संजीव झा जी।

श्री संजीव झाः बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्षा महोदय की आज जो एक sense of House था उसको आपने स्वीकार किया और चर्चा करने का मौका दिया और बिल्कुल ठीक कहा सौरभ भाई ने कि जब हम सब लोग इस बात

की चर्चा कर रहे थे जब ये House का sense था उसमें वो शामिल थे और उन्होंने कहा कि हाँ इस पर चर्चा होनी चाहिये और आपने जब सर्वसम्मति की बात कही तो फिर वो विरोध करके चले गये वो खुद ही आगे बढ़कर कहने आये थे कि नहीं ये गंभीर विषय है और इस विषय पर चर्चा होना चाहिये लेकिन जब आपने अपनी चेयर से सर्वसम्मति कहा तो लगा कि ये खबर ऊपर पहुंच जायेगी, ये तो चुपके से कहा था तो आपने सर्वसम्मति कहकर इनको एक्सपोज़ कर दिया और ज्यों ही आपने एक्सपोज़ किया अब उनको मिर्ची लग गई क्योंकि ऊपर से आदेश तो कुछ और था तो मैं ये मानता हूँ ये विषय बहुत गंभीर है क्योंकि अगर हम जनप्रतिनिधि हैं और जनता की समस्याओं को अगर हम सिस्टम तक नहीं उठायेंगे अगर उनको जो दिक्कतें आ रही हैं उन पर हम काम नहीं करेंगे तो फिर हमारा काम क्या है। रोज हमारे ऑफिस में सेंकड़ों लोग आते हैं किसी को इलाज की समस्यायें हैं किसी को बच्चे का एडमिशन की समस्यायें हैं किसी को ट्रांस्फर की समस्यायें हैं अलग-अलग डिपार्टमेंट ट्रांस्फर करना है रोज आते हैं इस तरह के लोग वो पीड़ित लोग होते हैं कई बार लगता है कि इनकी समस्यायें जेन्युअन हैं और उसके उस पीड़ा को हम लोग अलग-अलग डिपार्टमेंटों में चिट्ठी पहुंचाते हैं। मेरे पास तो रोज दो-चार-दस-बीस लोग आ जाते हैं क्योंकि बुराड़ी आउटर दिल्ली का हिस्सा है तो ज्यादातर इस तरह के जो ड्राईवर, कन्डैक्टर्स हैं वहां रहते हैं अब किसी का ट्रांस्फर द्वारका कर दिया किसी का ट्रांस्फर बदरपुर कर दिया तो उसको आने-जाने में दिक्कतें होती हैं तो वो आता है आकर घर में कोई बीमार है किसी के घर में बूढ़े माँ-बाप हैं उसको देखभाल करना है, आने-जाने में समय लग जाता है। इन तमाम तरह की पीड़ा को लेकर के आता है और हम लोग

सिस्टम तक पहुंचाते हैं अगर इस तरह की चिट्ठी को अगर कहें कि नहीं कोई आपस में लेन–देन हुआ होगा, तो मुझे लगता है कि ये बेहद शर्मनाक है। कई बार प्राइवेट स्कूल्स की फीस को लेकर किबहुत ज्यादा फीस है विधायक जी एक चिट्ठी लिख दीजिये तो हम वो भी चिट्ठी लिख देते हैं की जी ठीक है ये गरीब है और इसको कोरोना के टाइम मैंने बहुत सारी चिट्ठियां लिखी कि किसी के घर में देहांत हो गया अब वो किसी स्कूल में पढ़ रहा था वो फीस देने की कंडीशन में नहीं हैं तो हमने कहा कि भई एडमिशन की फी माफ कर दिया जाये किसी को कहा हमने जो एनुव्ल फी है वो माफ कर दिया है किसी को कहा हमने मंथली फी माफ कर दिया जाये ऐसी ढेरों चिट्ठियां आती हैं ढेरों सारे लोग आते हैं जिन पर हम चिट्ठियां लिखते हैं। मैं ये मानता हूँ कि ऐसा नहीं है कि सी.बी.आई. नाम डाल रहा है और selective leak कर रहा है। पूरा देश जानता है कि अब ये पॉलिटिकल टूल की तरह काम कर रहा है और बिल्कुल सौरभ भाई ने कहा कि आज ठीक कहा कि आज जो कुछ भी आप कर रहे हैं ऐसा नहीं है कि आप हमेशा रहेंगे अपनी कुर्सी पर, आप जो कुछ भी कर रहे हैं वो एक परम्परा बन जायेगा। कल जब बीजेपी अपोजिशन में थी कांग्रेस सरकार में थी बीजेपी का भी यही कहना होता था और हमें हमेशा कोई कहता है एक पीढ़ी का किया गया पाखंड दूसरी पीढ़ी के लिये परम्परा बन जाता है उन्होंने परम्परा बना लिया है इनको, पर आज जो कुछ भी आप कर रहे हैं हमें जवाहर लाल नेहरू जी हमेशा कहा करते थे कि अब being a Legislatrue अगर आप कोई डिसीज़न ले रहे हैं तो आप ये तय कीजिये कि ये डिसीज़न आगे एक एविडेंट बनेगा वो परम्परा बनेगा तो अगर खराब डिसीज़न लेंगे तो खराब परम्परा बनेगा, अच्छा डिसीज़न लेंगे तो अच्छी

परम्परा बनेगी तो उस सूझबूझ के साथ आपको डिसीज़न लेना चाहिये। मैं ये मानता हूँ कि बात केवल ये जो दो हम दोनों दो साथियों का नाम है उसका नहीं है, पूरी कोशिश कर लिया कि दिल्ली में जो दिल्ली सरकार काम कर रही है जो ये केजरीवाल मॉडल ऑफ गर्वनेंस है इसकी ऐक्सेप्टेंस और इसकी चर्चा और इसकी प्रशंसा देश-विदेश में हो रहा है, पूरा कोशिश कर लिया इन्होंने किस तरह से एक्सपोज़ किया जाये। अभी हाल-फिलहाल में गुजरात से एक डेलिगेशन आया वो डेलिगेशन आया कि दिल्ली के सरकारी स्कूल को एक्सपोज़ करना है। माननीय शिक्षा मंत्री जी ने एक कमेटी बनाई जिसमें मैं, आतिशी मैडम, सौरभ भाई थे, कुलदीप भाई थे, ऋतुराज भाई थे मैं भी था कि हमने कहा कि अगर कोई डेलिगेशन आया है और दिल्ली में अच्छा काम हुआ है तो उन शिक्षा मंत्री जी ने कहा कि ये सब लोग स्वागत करेंगे उनका वो जहां कहीं भी कहेंगे जाकर स्कूल दिखायेंगे। आतिशी मैडम ने कहा कि बीजेपी के हैडक्वॉर्टर के सामने ही एक स्कूल है, कहा कि बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं है आप आईये आपको वो स्कूल दिखा दिया जायेगा और बतायेगा भी जायेगा कि किस तरह से ट्रांसफॉर्मेशन हुआ है। हमारे सभी अधिकारी सभी टीचर्स आपको विस्तार से पूरा विवरण देंगे कि ये ट्रांसफॉर्मेशन कैसे हुआ। अब देखिये उसके बाद उन्होंने ये नहीं बताया कहां जाना है अपने आप एक स्कूल पहुंच गये और डरे हुये इतने थे कि मिडिया भी साथ लेकर नहीं गये अपना-अपना विडियो बनाया कि मिडिया तो एक्सपोज़ कर देगी, खैर मुझे पता चला मुझे लगा कि चलो हमारे सांसद जी भी थे गुजरात से बहुत सारे एम.एल.एज़, एक्स मिनिस्टर्स थे तो मैं वहां पहुंच गया लेकिन जब ज्यों ही मैं पहुंचते-पहुंचते वो निकल गये मैंने फोन किया कि मैं आ रहा हूँ मैं आपको विस्तार से बताऊँगा, अधिकारी भी हमारे

हैं लेकिन वो निकल गये वहां से। पता ये चला कि उस स्कूल में खजूरी का एक स्कूल था स्कूल के जो स्टोर रूम में वहां गये और उसको विडियो बना लिया। अब जब मैं गया तो फिर पूरे विस्तार से मैंने पूरे स्कूल का विडियो मैंने भी बनाया कई मिडिया कर्मियों ने चलाया भी उसको। तो मैं कहना ये चाह रहा हूँ कि पूरा पूरी कोशिश ये कर रहे हैं कि किस तरह से हम दिल्ली मॉडल ऑफ गर्वनेंस को हम बता पायें नहीं-नहीं ये ठीक मॉडल नहीं है लेकिन क्योंकि काम किया है अरविन्द केजरीवाल जी की सरकार ने पूरे कैबिनेट ने उसको झुठला नहीं पा रहे हैं तो इस तरह से अब बदनाम करने की साजिशें हो रही हैं कि चलो विधायक को बदनाम कर दो, एक-एक करके, एक-एक करके पकड़ो और बदनाम करो उसको। मुझे ये लगता है कि ये ठीक नहीं है और मैं प्रधानमंत्री जी से भी कहना चाहता हूँ, हमेशा बात आप देश की करते हैं अगर आप देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं जो दिल्ली में दिल्ली की सरकार ने जो शिक्षा में काम किया है, स्वास्थ्य में काम किया है आपको उसकी चर्चा करनी चाहिये अपनी सरकार को बताना चाहिये चूंकि बिना शिक्षा बेहतर किये बिना स्वास्थ्य बेहतर किये देश आगे नहीं बढ़ सकता, इस तरह की टूच्ची साजिष्ठाों को छोड़ दीजिये आप। हम लोग इससे डरने वाले नहीं हैं ये ईबीआई, सीबीआई इससे कोई फर्क नहीं पढ़ने वाला लेकिन हाँ, दु:ख जरूर होता है कि आप सब लोग जो देश के लिये करना था वो नहीं करके अपने सारे इस इन्स्ट्रूमेंट को एक सरकार के पीछे लगा दिये हैं देश बेहतर जानती है सब, देश देख रहा है चिंता न कीजिये गुजरात में भी चुनाव आने वाला है और हिमाचल में भी चुनाव आने वाला है जनता वहां आपको सबक सिखायेगी तो मैं ये मानता हूँ कि ये बहुत गंभीर विषय है और सदन के संज्ञान में आज आया है और

मुझे ये लगता है बिल्कुल ठीक कहा कि जितने भी विपक्ष के साथी हैं जो भी लोग हैं सब चिट्ठी सब लिखते हैं और लिखना भी चाहिये मैं इसका समर्थक हूँ लेकिन अगर जांच फिर विपक्षियों का भी हो जाये तो पता चल जायेगा। जितने बीजेपी के स्टेट हैं वहां के विधायकों का भी जांच होना चाहिये सांसदों का भी जांच होना चाहिये हालांकि उन तक एक बात है कि जनता पहुंच कम पाती है इन तक, लेकिन मेरा ये मानना है कि जनप्रतिनिधि का काम ही यही है तो हाउस इस बात को गंभीरता से ले रही है मैं इस पर धन्यवाद भी करता हूँ और मुझे ये लगता है कि आज ये मैसेज इस हाउस से जाना चाहिये कि आपके जो ये सरकार के केन्द्र सरकार के जितने भी ये आपके अधिकारी हैं या आपके investigation agency हैं उनको पॉलिटिकल टूल की तरह इस्तेमाल मत कीजिये। देश में और बहुत सारे गंभीर विषय हैं उस गंभीर विषय पर लगाईये ताकि देश आगे बढ़ पाये देश में काम हो पाये, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः कुलदीप कुमार जी।

श्री कुलदीप कुमारः धन्यवाद अध्यक्षा महोदय, बहुत महत्वपूर्ण विषय पर अभी सौरभ भाई ने जो प्रस्ताव रखा है और जो चर्चा शुरू की है संजीव भाई ने यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हर विधायक जिस इलाके से जिस एरिया से हम लोग आते हैं वहां की जनता का हमारे प्रति यह होता है कि उन्हें लगता है की भई जिस काम के लिए हम विधायक के पास जाएंगे किसी भी कार्य के लिए वो कार्य विधायक हमारा करेंगे और चिट्ठी एक ऐसा माध्यम है कि उस चिट्ठी के माध्यम से उनको लगता है कि विधायक ने हमारे लिए काम किया है और हम अपनी रिक्वेस्ट कह लीजिए जो किसी भी डिपार्टमेंट को,

किसी भी विभाग को भेजने का काम करते हैं और उसी प्रकार से सभी विधायक चाहे वो विधायक हो, कोई पार्षद हो, कोई सांसद हो जो भी प्रक्रिया है डेमोक्रेसी की लोकतंत्र की उसके अंदर सब भेजने का काम करते हैं लेकिन यह बड़ा दुखद है कि किसी विधायक ने एक चिट्ठी भेजी के फलां-फलां आदमी इस प्रकार से इनकी ड्यूटी बहुत दूर है या इनके घर पर कोई मेडिकल की दिक्कत है और इनको आप या तो चेंज कर दीजिए इनकी ड्यूटी को या शिफ्ट कर दीजिए और वो भी आपको अच्छा लगता है तो ये जो भी लैटर मुझे लगता है विधायक लिखते हैं वो हमेशा किसी भी नियम के अंतर्गत लिखते हैं रूल के अंतर्गत लिखते हैं कि आपका जो नियम कहता है उसके अनुसार आप इसको आगे बढ़ा दीजिएगा लेकिन उसकी जांच अगर सीबीआई करेगी, ईडी करेगी इनका नाम तोता-मैना ऐसे ही नहीं रखा गया है बड़े सोच-समझकर रखा गया है। अगर तोता-मैना को केवल इस काम पर लगाया जाएगा कि कौन से विधायक ने कौन सी नाली साफ कराने की चिट्ठी लिखी, किसके ट्रांस्फर के लिए चिट्ठी लिखी, कौन से विधायक ने कहां पर पेड़ कटवाने की चिट्ठी लिखी तो मुझे लगता है इससे बड़ी शर्म की बात तो देश के लिए नहीं हो सकती है की जहां सीबीआई को आज उनके बारे में सोचना चाहिए जो देश का करोड़ों-करोड़ों रुपये लेकर भागकर विदेश पहुंच चुके हैं और विदेश में मौज कर रहे हैं। आप केन्द्र सरकार का और भाजपा का ध्यान उनकी तरफ तो है नहीं माननीय प्रधानमंत्री जी का ध्यान भी उनकी तरफ नहीं है। उनका ध्यान इस बात पर है कि आम आदमी पार्टी का कोई विधायक नाली साफ कराने की चिट्ठी भी न लिख दे गलती से तो ये बड़े शर्म की बात है और यह पूरा देश देख रहा है। यह डेमोक्रेसी के अंदर लोकतंत्र के अंदर संजीव भाई ने बताया अभी कि

ये सौरभ भाई ने बताया की क्या ये सबके साथ होना है। आज आप सत्ता में हैं कल आप नहीं रहेंगे और कल आप रोना रोएंगे। वही उत्तर प्रदेश के योगी आदित्य नाथ जो विधानसभा में खड़े होकर रो रहे थे कि मेरे पर गलत एफआईआर की जा रही हैं आज वो लोगों के ऊपर करा रहे हैं। तो सीबीआई का ईडी का जो दुरुपयोग आज किया जा रहा है ये बहुत दुखद है और मुझे लगता है कि हर एमएलए का हर विधायक का जनता ने हमें चुना किसलिए है, जनता ने वोट किसलिए दिया है हम लोगों को।या तो हम भाजपा वालों की तरह बैठकर घर में पैसे खाएं, करप्शन करें बंद कमरे में बैठकर या जनता के बीच में जाकर जनता की समस्याओं का समाधान करें और जिस प्लेटफार्म पर उनकी समस्याओं का समाधान हो सकता है उस प्लेटफार्म पर हम जाएं। एक तरफ तो आप लगातार जो केन्द्र सरकार है बैठकर अधिकारियों की ट्रांस्फर पोस्टिंग रोज कर देती है उनसे कोई सवाल क्यों नहीं करता भई ये कि क्या आप ये बताइये आपने किसी भी सेक्रेटरी का ट्रांस्फर 10 दिन में कैसे कर दिया, 15 दिन में कैसे कर दिया कल भी इस विषय पर चर्चा हुई थी उनसे कोई जांच नहीं होती है, उनका वो अधिकार है। हम किसी गरीब आदमी का ईडब्लूएस कैटेगरी में अगर इलाज कराने के लिए उसको अच्छा इलाज मिल पाए उसकी मदद हो पाए अगर हम ये चिट्ठी लिख देते हैं तो यह बहुत बड़ा करप्शन है, यह बहुत बड़ा भ्रष्टाचार है और मुझे लगता है अगर ये करप्शन है तो ये करप्शन तो हर विधायक करता होगा, हर सांसद करता होगा, हर व्यक्ति करता होगा और वो नहीं करता होगा चिट्ठी तो आरडब्लूए के लोग भी लिख देते हैं, चिट्ठी संस्था वाले भी लिख देते हैं, एनजीओ वाले भी लिख देते हैं सब लोग चिट्ठियां लिखते हैं। चिट्ठी लिखना एक परंपरा है अगर चिट्ठी लिखना

परंपरा नहीं होती तो यह लैटर पैड काहे के लिए बनते, ये इतनी बड़ी स्टैंपें किसलिए बनती जो हम लगाते हैं। हमें मिलता क्या है जब कोई भी विधायक विधायक बनकर आता है जनता के लिए तो उसके पास काम करने का एक ही माध्यम होता है वो अपने क्षेत्र की समस्याओं को लैटर के माध्यम से चिट्ठी के माध्यम से अधिकारियों तक पहुंचाए, मंत्री जी तक पहुंचाए, सरकार तक पहुंचाए और उनके काम कराने को काम करे। अगर उसकी जांच सीबीआई को करनी है तो आराम से शौक से करे लेकिन साथ-साथ अगर हमारी जांच कर रहे हैं तो कम से कम सामने वालों की जांच भी करें। उनके भी 8 विधायक हैं, उनके भी 7 सांसद हैं और पूरे देश के सांसदों की करें न जांच वो भी चिट्ठी लिखते हैं तो यह मुझे लगता है बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। जिस प्रकार से सीबीआई और ईडी का प्रयोग किया जा रहा है और आज पूरे देश में जिस प्रकार से इनका डर दिखाया जा रहा है। ये सोच रहे हैं कि शायद आम आदमी पार्टी के विधायक डर जाएंगे इनकी अगर हम सीबीआई को जांच देंगे। आम आदमी पार्टी का कोई विधायक डरने वाला नहीं है और हम लोग तो वैसे भी आंदोलन से निकलकर आए हुए लोग हैं हम तो वैसे ही डरने वाले नहीं हैं। हम तो जनता के बीच से निकलकर आए हुए हैं, जनता ने चुनकर यहां भेजा हुआ है हम लोगों को। डर तो उन लोगों को होगा जो बेचारों के पास जिन्होंने चिट्ठियां गलत लिखी होंगी। हमने तो जनता की सेवा करने की चिट्ठियां लिखी हैं और हमेशा इस प्रकार से लिखते रहेंगे। तो बहुत-बहुत धन्यवाद मुझे समय देने के लिए मौका देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः ऋतुराज जी।

श्री ऋतुराज गोविंदः धन्यवाद अध्यक्ष महोदया मुझे इस विषय पर आपने बोलने का मौका दिया जो की सौरभ भारद्वाज जी ने जो ये प्रस्ताव रखा है कि चिट्ठी लिखने की बात जैसा कि हमने अभी कहा था की कोई भी व्यक्ति जो हमारे कार्यालय में आता है किसी मदद की उम्मीद से चिट्ठी लिखना हमारा फर्ज है और यह लगातार हम लोग देख रहे हैं कि 2013 से। हमारे यहां अध्यक्षा महोदय, मैं बिहार के मिथिला क्षेत्र से आता हूं और हमारे यहां पर एक कहावत है की 'लिखो आवइछे तो ना आई, मिटवो आवइछे तो दुन्नो हाथ से' इसका हिन्दी में मतलब हुआ लिखने आता है तो नहीं आता है फर्जी डिग्री है न मिटाने आता है तो दोनों हाथ से, समझ रहे हैं मतलब। इसका मतलब यह है कि जो लोग इनकंपीटेंट हैं जिनके अंदर यह भावना है कुछ नहीं कर पाने की वो लगातार हम देख रहे हैं कि 2013 से जिस तरह की रणनीति ये लोग अपना रहे हैं। आप देखिये की 2013 में दिल्ली की राजनीति में एक रोबिनहुड का जन्म होता है और जो यह ठानता है कि दिल्ली से भ्रष्टाचार को खत्म कर देंगे और एक पुलिस थाना होता है एसीबी एंटी करप्शन ब्यूरो जिसका इस्तेमाल करके दिल्ली के अंदर में लगभग करप्शन जो है सो जीरो हो जाता है zero tolerance against corruption उसके बाद देखा गया की एसीबी छीन लिये। फिर देखा गया की कल सर्विसेज पर बड़ी चर्चा हो रही थी तो भइया ऐसा हमारे देश में क्रिकेट का खेल बड़ा पापुलर है तो कल इस बात की चर्चा हो रही थी कि जो बैट्समैन है उसको बोलते हैं तुम बालिंग करो। जो बालर है उसको बोलते हैं तुम कीपिंग करो। जो खराब फील्डर है हमारे जैसा उसको बोलते हैं तुम पाइंट पर फील्डिंग करो। मतलब आमतौर पर तो यह होना चाहिए कि जैसा सिसोदिया जी कह रहे थे कि जो क्वालिटी है जो आदमी का परफार्मेंश

है आईएएस लॉबी में भी जो बेस्ट परफार्मर होता है उसको लगाया जाना चाहिए ऐसी जगह पर जहां की वो बेस्ट परफार्म कर सके ताकी शिक्षा और स्वास्थ्य की क्रांति और आगे बढ़ सके देश में फैल सके लेकिन हो क्या रहा है उल्टा। किसी भी तरीके से काम में अड़चन पैदा करना है एक ही नीति है। सर्विसेज छीन लिया कोर्ट में केस लड़ रहे हैं। एक टाइम पर आया की दिल्ली के अंदर में एलजी राज आ गया जब पूरे मंत्रीमंडल को मुख्यमंत्री समेत आप सोचिये इससे बड़ी शर्म की बात हो सकती है क्या की लेफ्टीनेंट गवर्नर के घर में 5 दिन या 6 दिन तक जो है सो वहां पर में धरना करना पड़ा और मनीष जी और सब लोगों को अनशन करना पड़ा। मतलब लगातार यह देश देख रहा है कि किस तरीके से हर काम में, हर काम में, शिक्षा, स्वास्थ्य से बड़ा कोई पुण्य का काम होता है क्या लेकिन उसके अंदर भी लगातार अड़चनें पैदा करने की कोशिश की गई। अब सब होते हवाते जब एसीबी छीन लिया, सर्विसेज छीन लिया उसके बाद मोहल्ला क्लीनिक रोकने का प्रयास किया, स्कूल को रोकने का प्रयास किया। मैं किराड़ी क्षेत्र का विधायक हूं दिल्ली के अंदर में एकमात्र constituency है जो 99 प्रतिशत unauthorised colony है। बुनियादी सुविधाओं का काम हो रहा है आज ड्रेनेज का, सिवरेज का, हास्पिटल का, स्कूल का, डीडीए से पच्चीस-पच्चीस दिन लड़कर के जमीन लेनी पड़ रही है क्या जमीन अपने लिए ले रहे हैं, किसलिए जमीन ले रहे हैं ताकी गरीब बच्चों को भी अच्छी शिक्षा मिल सके इसके लिए ले रहे हैं। इनके अध्यक्ष झूठे लोग मनोज तिवारी इनका अध्यक्ष आदेश गुप्ता हास्पिटल को एक्सपोज करने के लिए हमारी Constituency में गये थे। क्या एक्सपोज करेंगे बोले की 2020 के अंदर में अस्पताल बनकर तैयार हो गया उसकी बिलिंग हो गई उसका भुगतान हो

गया जबकि आप देखिये बच्चा पैदा हुआ बाद में ग्रेजुएशन का सर्टीफिकेट पहले लेकर घूम रहा है। मतलब की अप्रैल 2021 में हमें जमीन का अलाटमेंट हुआ है पजेशन हुआ है।...

माननीया अध्यक्षः आप विषय पर रहिये, विषय पर रहिये।

श्री ऋतुराज गोविंदः विषय पर ही आ रहा हूं अध्यक्षा महोदय, कि आप देखिये किस तरह का प्रयास कर रहे हैं ये, किसी भी तरीके से मीडिया को लेकर के झूठ फैलाना है सरकार की इमेज को खराब करना है क्यों क्योंकि इनकी औकात नहीं है कंपीटीशन करने की। इनकी औकात नहीं है स्कूल बनाने की। इनकी औकात नहीं है शिक्षा क्रांति करने की। इनकी औकात नहीं है स्वास्थ्य में क्रांति लाने की क्यों जो आदमी जिंदगी भर झूठ की राजनीति करता आया है वो आज भी क्या डिस्टरबेंस करने की कोशिश कर रहा है कि विधायकों की चिट्ठी पर अगर सीबीआई जांच होगी तो विधायक डर जाएंगे अरे यह विधायकों का रोज का काम है। अगर हमसे कोई मदद मांगने के लिए आएगा, अगर हास्पिटल के लिए चिट्ठी लिखवाना चाहेगा तो लिखेंगे यह काम है हमारा। कोई हमसे अगर स्कूल के लिए चिट्ठी लिखवाएगा तो लिखेंगे। कोई गरीब आदमी अगर कहता है कि वो बस में कंडक्टर है और उसकी बीवी बीमार है, प्रेग्नेंट है, छोटे बच्चे हैं, उसकी मजबूरी है वो रांची का आदमी को कराची अगर ट्रांस्फर है तो उसको वापस रांची लाना पड़ेगा ये काम है हमारा। उसकी मदद करना काम है हमारा। अगर इसमें सीबीआई जांच करेगी अरे सीबीआई को जांच तो इस बात की करनी चाहिए कि श्रीलंका का प्रधानमंत्री कहता है कि भारत का प्रधानमंत्री हमको सिफारिश किया कि अडानी को बिजली का ठेका दे दो, बोला कि नहीं बोला, उसकी जांच करो, कि भई भारत के प्रधानमंत्री के पास

यही काम है क्या कि दूसरे देश के प्रधानमंत्री को कहे कि किसी कारपोरेट को अडानी को वहां का ठेका दे दो सॉरी गौतम अडानी को और कोई इजराइल का प्रधानमंत्री बोला कि राफेल में घोटाला हो गया उसकी जांच करो। तो ये जो सीबीआई का तोता है इसको संभाल कर रखिये। ये जो ईडी है यह आपकी महाराष्ट्र में सरकार बना सकती है, हैं न, पर यहां पर एकनाथ शिंदे कोई नहीं है कोई गोहाटी जाने वाला नहीं है। आप चाहे सीबीआई की जांच करा लो, आप चाहे ईडी की जांच करा लो 2013 में भी आपने बहुत कोशिश करी 15 में भी कोशिश करी लेकिन आज तक एक भी विधायक को आप किसी तरीके से डरा नहीं पाए हो आगे भी डरने वाले नहीं हैं आप सीबीआई जांच कराओ, ईडी जांच कराओ हम चिट्ठी लिखते थे, चिट्ठी आगे भी लिखेंगे लोगों की मदद करना हमारा कर्तव्य है धर्म है मदद करते रहेंगे इसके लिए चाहे आप सबके ऊपर जांच बिठा दो बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः विशेष रवि जी।

श्री विशेष रविः बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्षा जी की आपने इस चर्चा में मुझे बोलने का मौका दिया है। मैडम किसी भी जनप्रतिनिधि के कार्यालय के अंदर चिट्ठी लिखना या पत्र लिखना एक मिनिमम एफर्ट होता है जो विधायक, एमपी या पार्षद उसके कार्यालय में आए हुए व्यक्ति के लिए कर सकता है। हर रोज हमारे कार्यालय में लोग आते हैं अलग-अलग समस्याओं को लेकर आते हैं और वो यह चाहते हैं कि हमारे कार्यालय से उनकी मदद हो और हम लोग उनकी समस्याओं को समझते हुए, उनकी परेशानियों को देखते हुए हर वो काम करने की कोशिश करते हैं जिससे उनको राहत मिल सके और जैसा मैंने कहा की चिट्ठी लिखना एक मिनिमम एफर्ट है वो मैंने इसलिए कहा कि

चिट्ठी लिखे जाने से आमतौर पर यह होता है कि 50 परसेंट के आसपास चांस होते हैं उस समस्या के हल होने के लिए लेकिन जो आदमी आता है उसके लिए एक बहुत बड़ी बात होती है कि विधायक कार्यालय में गया उनसे मैं मिला और उन्होंने मेरे कहने पर जो है पत्र बनाकर दे दिया उसको इस बात के लिए बड़ी उसको जो है खुशी भी होती है और संतुष्टि भी होती है कि अब उसको यह विश्वास बनता है कि मेरा काम अब हो जाएगा और जैसा मैंने कहा कि आधे काम नहीं होते लेकिन उसके बाद भी उसको तसल्ली यह होती है कि मेरे विधायक ने मेरे लिए पत्र लिखा। तो अगर पत्र लिखने के ऊपर ही सीबीआई जो है वो जांच करना शुरू कर देगी तो मुझे लगता है कि हमें सारे विधायक कार्यालयों पर ताला लगाना पड़ेगा। सब जनप्रतिनिधियों को जो है अपने कार्यालयों को बंद करना पड़ेगा और हमें भी वही सारे काम करने पड़ेंगे जो भ्रष्ट नेता जो हैं सुबह-शाम तक करते हैं और वो क्या करते हैं हम सब जानते हैं कि जब हम चुनकर आए तो हमारे से पहले जो लोग थे मैं अगर अपनी बात करूं तो मेरी ही विधानसभा क्षेत्र के अंदर लोग कहते थे कि विधायक जी जो हैं सिर्फ 10 मिनट ही आते थे सुबह-सुबह 10 मिनट के लिए आए शक्ल दिखाई हां भई कौन-कौन है कौन-कौन नहीं है उनके जो कार्यकर्ता लोग हैं वो बैठे हुए हैं उनको सिगरेट पीने की आदत थी आए दो सुट्टा जो है मारा और घूमकर निकल गये और उसके बाद शाम तक पता नहीं है कहां हैं वो। तो अगर सीबीआई चाहती है कि फिर से जो है दिल्ली के अंदर ये परंपरा बन जाए की विधायक अपने कार्यालयों पर उपस्थित न हो वो वहां पर लोगों की समस्याएं न सुनें उनकी समस्याओं को लेकर काम न करे तो फिर क्या सीबीआई जो है लोगों के काम करेगी या सीबीआई लोगों

की जो छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर जो है वो काम करेगी और जो सीबीआई जो है वो यह खबर लीक कर रही है क्या ये अधिकारी जो है अगर हम देखें ये अधिकारी सिफारिश नहीं करते हैं। क्या ये अधिकारी जो है अपने लोगों के लिए फोन नहीं करते हैं। दूसरे अधिकारियों को कि भई मेरा आदमी है इसका करो। मेरे पास हर रोज जो है लगभग अभी दो दिन पहले की ही बात है कि एक आईएएस अफसर जो है मेरठ से यहां दिल्ली में आए कस्टम के अंदर उन्होंने अपने एक अधिकारी को मेरे कार्यालय में भेजा और एक स्कूल की 8-10 स्कूलों की लिस्ट को साथ में लेकर भेजा और कहा की भई हमारे जो हैं एक अधिकारी हैं कस्टम आफिसर हैं अभी वो दिल्ली यहां आए हैं और अभी नौएडा में हैं दिल्ली में जो है उनके बच्चों के दाखिले में दिक्कत आ रही है।

ये आठ-दस स्कूल है इन स्कूलों को पत्र लिख दीजिए आप। मेरे कार्यालय में जैसे हमारी आदत है कि कोई भी आता है तो हमें जो है पत्र लिखने में हमें खुशी होती है कि अगर हमारे किसी पत्र से जो है उसकी समस्या का हल हो रहा है। तो इससे ज्यादा खुशी की बात हमारे लिए नहीं है बिना ये जाने कि वो अधिकारी बिना उस अधिकारी से बात करें मैंने उनके लिए पत्र लिखा। जहां-जहां जिस-जिस स्कूल में उन्होंने कहा मैंने उस स्कूल को पत्र लिखा। तो क्या अब हम ये भी काम करना बंद कर दे कि हम जो लोग हमारे कार्यालय में आ रहे हैं उनकी हम इस तरह से सहायता करना बंद करें और मुझे लगता है कि जिस तरह से ये वातावरण बनाया जा रहा है कि हर स्टेट के अंदर एक-एक करके हर स्टेट के अंदर साम-दाम-दण्ड-भेद की राजनीति को अपनाकर उस स्टेट के अंदर उस पार्टी को, उस दल को कमजोर

करने का षड़यंत्र रचा जा रहा है। हाल ही में महाराष्ट्र के अंदर हमने देखा और हमने अन्य राज्यों के अंदर देखा है और उसी षड़यंत्र के तहत मुझे लगता है कि दिल्ली में जो है जो पिछले 7-8 साल से कोशिश की जा रही है उसी का जो है ये एक हिस्सा है कि हमारे विधायकों के नाम जो है इस तरह से अखबार में डाले गए हैं और उनको जो है उनकी रेपुटेशन जो है खराब करने की कोशिश की गई है। मुझे लगता है कि ये एक बहुत निदंनीय कार्य है केन्द्र सरकार को इस पर देखना चाहिए। बिल्कुल ठीक कहा सौरभ भाई ने कि आज सरकार में वो है कल वो जो है विपक्ष में हो सकते हैं, कल वो सरकार के बाहर हो सकते हैं। तो अगर वो ये उम्मीद करते हैं अभी चार दिन पहले की घटना है जब प्रधानमंत्री जी जो है हैदराबाद गए तेलंगाना में गए। वहां पर मुख्यमंत्री जो है पार्टी भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने प्रैस कांफ्रेंस करी और इस बात पर ऐतराज किया कि वहां के मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री को एयरपोर्ट रिसीव करने नहीं आए। एक तरफ तो जो है आप इतनी जो है चीजों को ध्यान रखकर के जो है ऐतराज कर रहे हैं कि उनको लेने नहीं आए और दूसरी तरफ जो है आप इस तरह से अलग-अलग राज्यों के अंदर सरकारों को जो है और उनके विधायकों को परेशान कर रहे हैं उनको तंग कर रहे हैं। ये बहुत ही ज्यादा जो है गलत चीज है और मैं इसका विरोध करता हूं और मैं चाहता हूं कि इसके ऊपर यहां से हमारी सदन की तरफ से इस पर ऐतराज दर्ज हो इसके ऊपर जो है प्रैस के अंदर जो है मीडिया के अंदर जो है रिलीज भी जाए। आपने बोलने का मौका दिया बहुत-बहुत शुक्रिया।

माननीया अध्यक्षः मदन लाल जी।

श्री मदन लालः धन्यवाद अध्यक्षा जी, आपने मुझे इस विषय पर बोलने का मौका दिया। ये बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे दो एमएलएज के खिलाफ सीबीआई को कुछ डाक्युमेंट मिले। जिसमें उन्होंने सिफारिश की है जैसाकि ऐलिगेशंस हैं कि वो ड्राइवर और कंडक्टर्स की पोस्टिंग को इन्फ्लूऐंस कर रहे हैं। अब अगर मैं अपने आप से पूछो तो ये जानने की कोशिश करता हूं कि क्या ड्राइवर किसी और पद पर जिस पद पर बैठा हो छोड़कर दूसरे पर कुछ अच्छा कर सकता है उसे ड्राइवर यहां भी चलानी है बस वहां भी चलानी है। कंडक्टर ने पीछे बैठकर के टिकट ही फाड़नी है चाहे वो यहां टिकट फाड़ेगा चाहे परली तरफ फाड़ेगा तो इसमें कौन सा फेवर हो गया। ट्रांस्फर और पोस्टिंग में फेवर होते रहे हैं और फेवर किसलिए होते हैं उसके दो साधन है। एक ये टूल्स की तरह इस्तेमाल होता है दूसरा पैसे की वजह से होता है फेवर की वजह से होता है। अपने चहेतों को बड़ी अच्छी-अच्छी पोस्टिंग दी जाती है टूल्स है। जैसा अभी दिल्ली सरकार के कामों को रोकने के लिए ऐसे अफसर लगाए जाते हैं जो उस काम की फाइल को आगे चलने ही न दे। कल भारद्वाज जी ने काफी देर हमें एक लिस्ट पढ़कर बताई उन्होंने बहुत अच्छी तरीके से उसको एक सब्जैक्ट को एलोब्रेट किया था कि किस तरह सरकार, सरकार मिन्स केन्द्र की सरकार जो एलजी साहब चला रहे हैं। एक-एक महीने में अफसरों को बदल देते हैं क्योंकि वो अफसर को दिल्ली सरकार के साथ काम करना अच्छा लगने लगता है। अब केन्द्र को लगता है ये अफसर तो ठीक नहीं है तो इसको बदलो और दूसरे कुछ अफसर होते हैं जिन्हें फेवर की वजह से करते हैं। पुलिस का एसएचओ कोई भाग्यवान होता है जो लगता है। डीसी, डीएम बड़े-बड़े अधिकारी ये वो पोस्ट है जहां लोग मालोमाल हो रहे हैं और उस मालोमाल

होने के पीछे कारण है कि सर्विसिज दिल्ली सरकार पर नहीं है। नहीं तो उस हवलदार जैसा हाल होता जिसने 50 हजार रुपये लिए थे और दिल्ली सरकार ने एसीबी के थ्रू न केवल एफआईआर कराई बल्कि उसको जेल भिजवाया था। वो अब नहीं हो रहा है क्योंकि अब सरकार एलजी साहब चला रहे हैं। एलजी साहब का दिल करता है इस आफिसर को रखना है तो रखा जाएगा, नहीं रखना है तो नहीं रखा जाएगा। सरकार के लिए काम करने लगा है दिल्ली सरकार के लिए तो हटा दिया जाएगा नहीं कर रहा है तो चहेता है काफी दिन रहेगा। फिर क्या एमएलए साहब इसमें डोमिनेट करते हैं क्या उस अफसर को इन्फ्लूऐंश करने की क्षमता रखते हैं। अगर हम इस सवाल का जवाब खोजें तो पाएंगे कि कभी भी सरकारी अफसर तो हमारी परवाह ही नहीं करते वो तो हमारा जवाब तक देने की चेष्टा नहीं कर रहे हैं। वो तो हमेशा ये कहते हैं आपका तो सर्विसिज डिपार्टमेंट ही नहीं है फिर काहे के इन्फ्लूऐंश है। मैं काफी दिन से काफी दिन पहले कोटला मुबारकपुर में मेरे गांव का एक लड़का है कंडक्टर की नौकरी करता है। अपने घर से तीन-साढ़े तीन घंटे में पहुंचता है। पता नहीं उसको सजा दी है या क्यों पर उसकी ट्रांस्फर दूर कर दी है। वो कई बार अपनी मां के साथ मेरे घर आया मैंने भी मंत्री जी को कहा और एक मर्तबा नहीं कई बार कहा और मंत्री जी ने एक बार नहीं करवाया उसका ट्रांस्फर। मैं मंत्री जी से कल सुबह तक शाम तक गुस्सा था। मैंने कल मंत्री जी से बात भी नहीं करी। पर मैं धन्यवाद करता हूं मंत्री जी की समझ का ये भाई इन्होंने मेरी बात नहीं मानी। अगर इन्होंने मेरी वो बात मान ली होती... एक कंडक्टर अपने घर से सुबह 6 बजे निकलता है 10 बजे के करीब अपनी ड्यूटी ज्वाइन करता है बेचारा, कैसे-कैसे रात को 11 बजे पहुंचता है।

मुझे भी उस पर दया आई। मैंने दो-तीन बार कहा और मैं सच बताऊं मैंने वाकई कल इनसे बात नहीं की मुझे गुस्सा था पर आज जब आज अखबार में पढ़ा और ये चर्चा जुड़ी, तो मुझे लगा धन्यवाद आप भी बच गए मैं भी बच गया। आप एक बार सोचने की कोशिश करें ये सीबीआई किसको पकड़ना चाह रही है, क्या कंडक्टर को पूछे कि तुमने एक बस में टिकट फाड़ने की बजाय दूसरी बस में टिकट फाड़ने की चूज जो किया है उस पर कितने पैसे दिए हैं या एक ड्राइवर को कि तुमने एक रूट पर चलने वाली बस को छोड़कर दूसरे, भई बस के ड्राइवर की ड्यूटी तो जितने घंटे होनी है होनी है।...

माननीया अध्यक्षः पूरा कीजिए।

श्री मदन लालः कंडक्टर की भी उतनी होनी है। तो उसमें ऐसी कौन सी बात हो गई कि अब ये तलाश करेंगे कि ये फेवर हुआ है इसका कोई कंसिड्रेशन था। अरे भाई उनको पूछ लो न जो हर महीने एक-एक अफसर को बदल रहे हैं। उनकी हिम्मत देखो सेक्रेटरी लेवल के अफसर को बदल रहे हैं एक-एक महीने में वो कितना खा रहे होंगे। उसके पीछे कितनी करप्शन होगी, हमसे लोग पूछते हैं भई ये तो बहुत करप्ट अफसर है ये कैसे आ गया। तो हम सोचते हैं आप पूछ लो कैसे आ गया, आपको तो पता है कैसे आ गया होगा। कहता है वो बहुत बड़ा चोर है, कह रहा हां भई चोर है और मैंने कई ऐसे आफिसर देखें हैं जो बड़े चोर थे मेरे यहां से हटे और बड़ी जगह पहुंच गए। क्योंकि बड़े चोरों की जरूरत उनको है। एक नक्शा दिखाना है कि हमने इतने लोगों को चेक किया इतने लोगों की जांच-पड़ताल की तो एक सिस्टम है कि सीबीआई फ्री में नहीं बैठी है कुछ न कुछ कर रही है

और कर किसका रही है जिनसे कुछ नहीं मिलना है। कोई पूछे ड्राइवर कितने पैसे दे देगा, कंडक्टर कितने पैसे दे देगा और क्यूं दे देगा। उसको तो कोई आप एसी बस भी नहीं दे रहे हो वो केवल यही तो चाह रहा होगा कि मुझे 4 घंटे लगने है घर से जाने में 4 घंटे आने में कृप्या मेरे घर के पड़ोस कर दो ये तो सरकार को पालिसी बनाकर वैसी ही करनी है। पर कई बार नहीं करते हैं अफसर। उसके पीछे कारण होते हैं तो अफसरों को पकड़ो और उन अफसरों को जरूर पकड़ो जो तीन-तीन, चार-चार महीने में या एक महीने में यहां अफसरों की पोस्टिंग नहीं कर रहे हैं कि कोई बढ़िया सा मिले तो पोस्टिंग करें। कल माननीय मनीष सिसोदिया जी बात कर रहे थे 20 दिन से टेक्नीकल यूनिवर्सिटी में टेक्नीकल डिपार्टमेंट में अगर आफिसर की नियुक्ति नहीं हो रही है ऐसा नहीं है कि दिल्ली सरकार में कांपिटेंट आफिसर नहीं है। पर ऐसा जरूर है कि कुछ आफिसर चाहते होंगे जो उनको पसंद नहीं है।...

माननीया अध्यक्षः धन्यवाद।

श्री मदन लालः इसलिए आज के दिन सोचना पड़ेगा कि जिस तरीके से आप बर्ताव कर रहे हो ये लोगों को मंजूर नहीं है। ये केवल सदन नहीं देख रहा है ये केवल ये दो एमएलए नहीं देख रहे हैं ये पूरी की पूरी दिल्ली और पूरा देश देख रहा है और अंत सबका होता है। धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने ऐसा लोक महत्व का और विधायकों के मामले को सदन के अंदर रखने का जो मुझे मौका दिया है मैं आपका आभार प्रकट करता हूं। वास्तव में सत्यता तो ये है कि आपके

विधायकों का सीबीआई को नाम देना एक किसी ऐसे अधिकारी जो डीटीसी का उप महाप्रबंधक हो वो सीबीआई की रेड में घिरा हो और रिश्वत लेते हुए रिश्वत उसके पास में पकड़ी गई हो। तो उस व्यक्ति ने अपने को बचाने के लिए विधायकों का नाम लेना इसलिए भी स्वीकार किया होगा कहीं मेरी चमड़ी बच जाए और मैं इस घेरे में ना आऊं। अध्यक्ष जी, ये सत्यता है हम जनप्रतिनिधि है और जनप्रतिनिधि का एक काम है उसके पास कोई भी आदमी आता है चाहे वो आपके पास आता है, हमारे पास आता है। हम तो सुबह से लेकर शाम तक पचासों चिट्ठियां लिखते हैं और हर डिपार्टमेंट को चिट्ठी लिखना हमारा नैतिक अधिकार है और हम जब चिट्ठी भी लिखते हैं तो सीधा-सीधा कहीं भी किसी भी डिपार्टमेंट के अधिकारी को आर्डर नहीं करते हैं हम तो निवेदन करते हैं। जैसे अभी मेरे से पूर्व में भाई साहब बोल रहे थे ये हम सब लोगों की ड्यूटी बनती है एक नहीं हम तो हजार बार चिट्ठियां लिखते हैं और मैं तो 1998 में जब पहली बार से विधायक बना हम तो रोज चिट्ठियां लिखते हैं और चिट्ठियों का कहीं न कहीं अधिकारी अच्छा हो तो उसका कहीं न कहीं रिजल्ट आता है। मेरा एक कहना है कि जिस प्रकार से विधायकों के नाम से ट्रांस्फर के लिए सिफारिश की गई होगी। मैडम, वो तो वैसे ही गरीब आदमी है, कंडक्टर वो गरीब आदमी है। वो रिश्वत कहां से देगा। उसके साथ दिक्कत क्या आती है कि मान लिया वो करावल नगर के अंदर रहता है तो नरेला में उसका ट्रांस्फर कर दिया। तो वो सीधा कहता है साहब मैं बहुत दूर जाना पड़ता है और मेरा काफी टाइम बर्बाद होता है। इसलिए आप मेरी एक चिट्ठी लिख दो तो शायद मंत्री जी उस पर कहीं न कहीं गौर कर लेंगे मुझे नजदीक ही वो शिफ्ट कर देंगे जिससे मेरा समय भी बचेगा, पैसा भी बचेगा।

लेकिन इस पोस्टिंग और इसके मामले में जिस प्रैस ने इस खबर को आज सदन का समय बर्बाद करने के लिए इस प्रकार की खबर बनाई और सुर्खियों में रहने का जिस प्रकार का काम किया। मैं आपके माध्यम से एक अनुरोध करना चाहता हूं उसको इस कमेटी के यहां कमेटी में बुलाया जाना चाहिए। किन सूत्रों के माध्यम से आपको ये खबर मिली, कौन-सा ऐसा सूत्र था ये हमको पता लगाना चाहिए। वास्तविकता ये है कि हम सब लोग और ये नहीं है मैं विपक्ष में हूं मैं सत्तापक्ष, सत्तापक्ष वाला यदि कोई प्रस्ताव लाता है, मैडम मुझे याद है कि 1998 के बाद जैसे बिजली की क्राइसिस थी तो मेरे घर पर तोड़-फोड़ हुई और तोड़-फोड़ जब हुई। तो विपक्ष से ज्यादा सत्तापक्ष के लोग खड़े हो गए और आपको विश्वास नहीं होगा जिसने तोड़-फोड़ की जब मैं अपने घर पहुंचा, उससे पहले उसको अरेस्ट करवाया। ये सदन हम सब लोगों का है, हो सकता है हम सामने विपक्ष वाले हैं इधर सत्तापक्ष वाले हैं लेकिन हम विधायक है। आज भी हम बहुत से विधायकों को फोन करते हैं आपको भी कर सकते हैं भाई ये देख लेना ये आपके एरिया का मामला है।

तो निश्चित रूप से हम सब लोगों के एक सहयोग की बात करते हैं। मेरा कहना ये है मैडम कि जिस प्रकार से वो महा प्रबन्धक वो रिश्वत के इस भ्रष्टाचार के जाल में फंसा उसने हमारे विधायकों को बदनाम करने की एक साजिश की है। मैं आपके माध्यम से ये चाहता हूं कि ऐसे लोगों के खिलाफ यहां से भी कुछ ना कुछ हाउस में से जाना चाहिए और जिससे कि आगे कोई भी और ऑफिसर हम पर इस प्रकार का एलिगेशन ना लगा सके। एक बात कह करके मैं अपनी बात को समाप्त कर दूंगा। मैडम ये कोई ऊंची पोस्टों की बात नहीं है कोई ऐसा नहीं है कि साहब वहां से पैसा मिलेगा विधायक

को वहां से, विधायक को तो दिल्ली का विधायक तो ऐसा है अन्य क्षेत्रों के विधायकों के बारे में तो बहुत कुछ होता है लेकिन दिल्ली का विधायक तो बेचारा है। ये बेचारा है दिल्ली का विधायक। आज हम यदि हम सत्ता पक्ष के पास जाते हैं तब भी बेचारा बनकर जाते हैं, विपक्ष में रहते हैं तब बेचारा बनकर जाते हैं। इस लिए हमारा नैतिक दायित्व होता है कि एक नहीं हजार बार हम चिट्ठियां लिखेंगे। लेकिन जिन लोगों ने इस खबर को दिया है उनके खिलाफ भी कार्रवाई होनी चाहिए। सदन में उसको बुलाना चाहिए। ये किन सूत्रों से आपको ये खबर मिली। इतना ही मेरा निवेदन है। आपने मुझे बोलने का समय दिया। धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद। अभी जिस विषय पर चर्चा हो रही थी। सौरभ भारद्वाज जी ने इस विषय को उठाया था तो एक बार वो अपना प्रस्ताव रखें सदन में।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्ष महोदय, एक प्रस्ताव मैंने रखा है मै एक बार सदन के लिए उसको पढ़ देता हूं। taking cognizance of the news reports published in the newspaper in Delhi regarding CBI inquiry against the Hon'ble Members of this House who have forwarded or recommended transfers of employees like drivers and Conductors in DTC, this House strongly condemns the CBI in its attempts to selectively target elected Hon'ble Members who are performing their duties which are expected from the elected representatives इसको हिन्दी में भी अनुवादन अध्यक्षा महोदय मैने किया है और इसको मैं वैसे बहुत है इसके लिए।

श्री वीरेन्द्र सिंह कादियानः मैं अध्यक्ष महोदया इसमें कुछ जोड़ना चाहता हूं इस मुद्दे को सदन ये सिफारिश करें कि इसे विशेषाधिकार समिति के पास भेजा जाएये मेरा एडिशन है जी।

माननीय अध्यक्षः जो प्रस्ताव अभी सौरभ भारद्वाज जी ने रखा है इस पर माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया के वक्तव्य के बाद वोटिंग होगी। माननीय उप-मुख्यमंत्री जी।

माननीय उप-मुख्यमंत्रीः धन्यवाद, अध्यक्षा महोदय। आज सदन के कई सारे विधायक साथियों ने अपनी बात रखी और उसका मूल बिन्दू चर्चा का केन्द्र बिन्दू ये था कि आज सुबह के अखबारों में खबर छपी है कि आम आदमी पार्टी के दो विधायकों के ऊपर सीबीआई जांच कर रही है कि उन्होंने मतलब दूसरे के बारे में रैफरेंस नहीं दिया एक के बारे में रैफरेंस है जो मैने खबर पढ़ी थी हो सकता दूसरे में दिया हो कि उन्होंने डीटीसी के किसी अधिकारी को एक चिट्ठी लिखी थी कि फलाने ड्राईवर का कोई ट्रांस्फर कर दिया जाए ऐसी कोई उन्होंने चिट्ठी लिखी है। ये शायद मजाक भी है और एक बहुत गम्भीर विषय भी है कि अगर कोई विधायक किसी ड्राईवर को इस बिनाह पर इस आधार पर ट्रांस्फर की सिफारिश या अपनी रिक्मेंडेशन भेजता है ड्राईवर के बारे में किसी अधिकारी को कि ये गरीब आदमी है बहुत दूर जाना पड़ता है या किसी भी कारण से स्वास्थय कारण से परिवारिक कारण से इसकी इतने दूर के क्षेत्र में डयूटी नहीं होनी चाहिए तो उस पर सीबीआई जांच होगी। ये तो आज हद हो गई है कि केन्द्र सरकार, सदन भी निंदा करे लेकिन केन्द्र सरकार सीबीआई के इस हद तक दुरूपयोग पर आ गई है कि अब आम आदमी

पार्टी के विधायकों की इस बात पर भी जांच कराएगी कि भई किस को चिट्ठी लिखी थी। ड्राईवर तुम्हारे क्षेत्र में आया था किसी बीमार ड्राईवर को उस दूर के क्षेत्र से पास के क्षेत्र में ट्रांस्फर करने की चिट्ठी लिखी थी, वो भी अब सीबीआई जांच का विषय होगा केन्द्र सरकार के लिए। तो मुझे लगता है धन्य है वो केन्द्र सरकार जिसको सीबीआई की इतनी समझ है और धन्य है सीबीआई के वो ऑफिसर जिनको अपनी इतनी औकात पता है कि अब हमारी इतनी औकात रह गई है। उनको भी धन्य है। वो किसी का मैं पढ़ रहा था कि वो तेरे डराने की इन्तिहा थी, मेरे मन का डर निकलता गया और मैं सिकन्दर बनता गया। डराओ। सारे तोता मैना छोड रखे हैं आम आदमी पार्टी के एक-एक विधायक के पीछे, कार्यकर्ता के पीछे, मंत्री के पीछे। सारे कभी स्कूलों की कमियां निकालने आते हैं, कभी कमरों की कमियां निकालने आते हैं। कभी किसी के दस साल पुराने केस निकालकर लाते हैं तब तुम वहां थे। पहले आप उस फलानी कम्पनी में काम करते थे उस कम्पनी से रिजाईन कर दिया तो दस साल बाद उसकी कम्पनी ने मर्डर कर दिया। अब तुम उस मर्डर के लिए जिम्मेदार हो। सारे तोता मैना जितने ईडी, फीडी, सीबीआई, वीबीआई, सब छोड़ रखें हैं। लेकिन इनको मिल नहीं रहा कुछ और ये इस स्तर पर उतर आए है कि भई अब चिट्ठी तो दे दो यार एक। मतलब की मैं सोच रहा था सीबीआई वालों ने, ईडी वालों ने बताया होगा सर कुछ नहीं मिल रहा इनके खिलाफ तो, तो बोले एक चिट्ठी तक नहीं मिल रही जो किसी ड्राईवर के ट्रांस्फर के लिए लिखी हो, उस तक उतर आए हैं अब। मतलब उनकी बेचारों की सीबीआई वालों की नौकरी भी कितनी खतरे में होगी केन्द्र सरकार के उन कुबुद्धि लोगों के सामने। मतलब कहते होंगे सीबीआई के बड़े-बड़े अफसर जाकर सर मिल

नहीं रहा कोई करप्शन, मिला नहीं। कि कुछ नहीं मिल रहा, के जी कुछ नहीं मिल रहा, कि ढूंढो किसी सरकारी फाईल में कोई चिट्ठी भी लिखी हो कि किसी ड्राईवर का ट्रांस्फर कर दे, उसको भी ले आओ। सीबीआई अफसर बेचारे लेकर गए होंगे देखो जी मिल गई, मिल गई, मिल गई, संजीव झा की चिट्ठी मिल गई। ड्राईवर को ट्रांस्फर करने के लिए चिट्ठी मिल गई। सीबीआई की एफआईआर करो। मैं समझता हूं सीबीआई के इतिहास में भी ये सबसे टुच्चे, सबसे घटिया विषय पर की जाने वाली जांच होगी कि एक एमएलए ने अपने क्षेत्र के या कहीं के किसी ड्राईवर के लिए उसके मानवीय आधार पर उसके ट्रांस्फर नहीं कराया उसकी अनुष्ठांसा की है, उसकी रिक्मेंडशन की है। मतलब मुझे तो दया आती है उन अफसरों पर भी और मुझे दया आती है उन लोगों पर भी जो इन बेचारों की सबकी हम सबके करप्शन ढूंढ रहे हैं। उन पर भी दया आती है बेचारे ढूंढ ही नहीं पा रहे और उन अफसरों पर भी की उनको अपनी सारी बुद्धि, सारा ज्ञान सीबीआई के कई लोगों को मैं जानता हूं, बड़े एक्सपर्ट होते हैं। बहुत तेज तर्रार लड़के आते हैं, तेज तर्रार लड़कियां जो पुलिस में होती है, अलग-अलग सर्विसेज में होती है उनको लाया जाता है। उनको गर्व होता है, हमें भी गर्व होता है उनकी तेज तर्रार बुद्धि पर लेकिन अब दया आती है कि बेचारों की तेज तर्रार बुद्धि कुल मिलाकर आम आदमी पार्टी के विधायक की डीडीसी में ड्राईवर की बुद्धि, ड्राईवर के ट्रांसफर पर आकर टिक गई है। वो है जी अपराध। अब क्या दया करें इन पर। किसी सफाई कर्मचारी का ट्रांस्फर कर दिया। अब ये ही रह गया है कि जी इसके अंतिम संस्कार के लिए गरीब आदमी है लकड़ी दे दो, कल को सीबीआई जांच करेगी इसने लकड़ी में मतलब, इस एमएलए ने जरूर लकड़ी मे करप्शन किया होगा।... बोले

ये आत्मा की शान्ति के लिए चिट्ठी लिखी है इसमें भी करप्शन होगा। इसमें आत्मा की शान्ति में, ये मरने के बाद कमिशन लेगा। टीचर के ट्रांस्फर, बहुत सारे हैं, इतनी बड़ी वर्कफोर्श है, ड्राईवर्स की, टीचर्स की, डॉक्टर्स की नीचे के मैडिकल स्टाफ की। कितने सारे लोग आते हैं मेरे पास भी आते हैं। इनके पास भी जाते हैं। विधायक लेकर आते हैं बहुत सारी चीजें। मुझे लगता है अब इन चीजों में करप्शन ढूंढेंगे कुल मिलाकर खेल तो इतना है कि डराने की कोशिश है। कुल मिलाकर इन सब ने भी बोला मैं भी उसको अन्डरलाईन कर दूं। जब खेल इतना है कि डराने की कोशिश है तो जवाब भी इतना है कि हम डरने वाले नहीं है। जवाब भी इतना ही है।... ये ट्रांस्फर, पोस्टिंग का धंधा बड़ा सैंसिटिव भी है और बहुत मलाई वाला भी है ऐसा नहीं है। मैंने तो सुना है कि इसी दिल्ली में कुछ महीने पहले एक एडीएम को रातोंरात इस लिए उठाकर दूसरे जिले में फैंक दिया गया था क्योंकि उसने अपने आका को जिसको पैसे पहुंचाने थे पैसे नही पहुंचाए तो ये मैने सुना था मेरे पास इसका कोई वो नहीं है। पर मुझे पूरा यकीन है कि ये जो लोग पैसे खाकर एडीएम का ट्रांस्फर कराते थे ना या कराते हैं उनके फाईलों में नोट नहीं मिलेंगे, उनकी चिट्ठियां नहीं मिलेंगी आपको क्योंकि वहां तो गांधी जी वाले नोट से काम चल रहा था। आप सोच कर देखो की संजीव झा लाल कुर्ते वाला विधायक बुराडी का संजीव झा चिट्ठी लिख रहा है एक ड्राईवर के ट्रांस्फर की और सीबीआई कह रही है इसकी जांच होनी चाहिए, इसने करप्शन कर दिया। मतलब हद है। पहली बात तो ट्रांस्फर में करप्शन कर दिया एक ड्राईवर के और वो भी फिर उसकी हिम्मत देखो कि चिट्ठी और लिख रहा है। मतलब क्या सोच कर ये लोग करते हैं मेरे को तो समझ नहीं आता। तो मैं अभी माननीय विधायक जी ने

जो बात कही कि इसकी पूरे सदन की तरफ से इसकी निंदा करते हैं इस तरह की मंशा की। इस तरह की हरकत की कि केन्द्र सरकार अपनी सीबीआई को रोके, उसको समझाए, थोड़ी बुद्धि लगाए और मैं सीबीआई के अफसरों को भी कहूंगा कि देश को आपकी तेज तर्रार बुद्धि पर गर्व होता है। लेकिन इस तेज तर्रार बुद्धि का इतने टुच्चे-टुच्चे काम में इस्तेमाल करोगे तो आपको माँ-बाप पर, आपके माँ-बाप को भी और आपको पढ़ाने वाले शिक्षकों को भी और आपके जानने वाले लोगों को भी शर्म आएगी कि क्या टुच्चे कामों में लग गए हो। इतना शार्प होता था माइंड। पकडते तो पकडते जाकर किसी ऐसे आदमी को ना जिसने धंधे कर रखे है। एक विधायक ने बाकयदा चिट्ठी लिख रखी है कि इस गरीब आदमी का ड्राईवर का ट्रांस्फर कर दो मैडिकल ग्राउंड पर या ह्यूमन ग्राउंड पर। उसको सीबीआई की इन्क्वायरी कर रहे हैं। थोड़ा अपने ऊपर भी तरस खाएं। मैं ये ही बात कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं कि मैं भी इसकी निंदा करता हूं। सौरभ जी के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

माननीया अध्यक्षः अब श्री सौरभ भारद्वाज जी और वीरेन्द्र कादियान जी द्वारा जो चर्चा के लिए संकल्प प्रस्तुत किया था अब ये संकल्प सदन के समक्ष है

जो इसके पक्ष में है वो हाँ कहें

जो इसके विपक्ष में है वो ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता,

संकल्प सर्वसम्मति से पास हुआ।

अब माननीय सदस्य दिलीप पाण्डेय जी के द्वारा मुझे एक निंदा प्रस्ताव प्राप्त हुआ है दिलीप पाण्डेय जी।

श्री दिलीप पाण्डेयः बहुत–बहुत आभार, धन्यवाद अध्यक्ष महोदया, मैं सदन के समक्ष अपना प्रस्ताव...

माननीया अध्यक्षः एक सैकेंड दिलीप पाण्डेय जी। हाँ जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपसे एक विनम्र निवेदन करता हूं कि हमारे चार साथी जो चर्चा में जिस प्रकार से वो भाग वगैरह ले रहे थे आपके माध्यम से उनको बाहर कर दिया गया। मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि आप उनको सदन में बुला लीजिए। सदन में बुला लीजिएगा। मैं आपका आभारी रहूंगा। धन्यवाद। उन्हें चर्चा में बुला लीजिएगा मैडम। थैंक्यू, थैंक्यू।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः लंच के बाद उन्हें अनुमति दे दी जाएगी क्यूंकि अगर इस प्रकार से बिना सोच समझे...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः पहले मेरी बात सुन लीजिए, बिना सोच समझे हम चीज का विरोध करेंगे तो कभी–कभी वो हमारे लिए भी नुकसानदायक हो जाएगी। चूंकि पूरे सत्ता पक्ष के साथियों की ये विनम्रता से आवाज है कि उनको बुला लिया जाए, तो बिल्कुल आएं। लेकिन संयम और मर्यादा का भी ध्यान रखें। सत्ता पक्ष के साथी आप लोगों को इतना कम्फर्ट जोन देते हैं तो आप लोगों को भी सहयोग हमेशा करना चाहिए। चलिए जी दिलीप पाण्डेय जी।

श्री दिलीप पाण्डेयः बहुत-बहुत धन्यवाद, अध्यक्ष महोदया।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आ सकते हैं चारों लोग।

...व्यवधान...

श्री दिलीप पाण्डेयः मुझे बोलने नहीं देंगे अध्यक्ष महोदया जब तक बुलाएंगे नहीं, हमारे ही साथी।

माननीया अध्यक्षः शुरू कीजिए।

श्री दिलीप पाण्डेयः बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदया। एक गम्भीर विषय है जो भारतीय जनता पार्टी के चाल-चरित्र और चेहरे को उजागर करने वाला है। बहुत मजबूर होकर, बहुत आहत होकर ये प्रस्ताव सदन के पटल पर रखना पड़ा मुझे। मुझे लगता है कि इस सदन में उपस्थित हर एक व्यक्ति को इस घटना, दूषित मानसिकता के साथ जो येकृत्य किया गया है उसकी, उस दुर्घटना का आभास होगा, ज्ञान होगा। की केंद्र की सरकार ने दिल्ली सरकार को चिट्ठी भेजकर, मेरे हाथ में वो चिट्ठी है अध्यक्ष महोदया। दिल्ली के 53 मंदिरों को तोड़ने की अनुमति चाही है। आप देखिये, सत्ता का नशा जब सर चढ़कर बोलता है तो आवाजें कैसी निकलती हैं की केंद्र की सरकार भगवान श्रीराम के, भगवान श्रीकृष्ण के हनुमान जी के, शंकर भगवान के, दुर्गा माता के, साईं बाबा के। एक-दो नहीं बल्कि कुल 53 मंदिर तोड़ने के लिये चिट्ठी लिखी है। जब ये मामला मेरे संज्ञान में आया, मुझे अपने एक परिचित हैं लंदन में रहते हैं उनकी एक बातचीत याद आई। उनका एक विडियो आया मेरे पास जिसमें उनके कनाडा के मित्र ने अध्यक्ष महोदया उनसे कहा की तुम हिन्दू हो।

तो मेरे मित्र, मेरे परिचित ने कहा की जी हाँ मैं हिन्दू हूं। तो कनाडा वाला जो मित्र था उसने उससे पूछा की क्या तुम्हें हिन्दू होने पर गर्व है, तो उसने कहा हाँ बिल्कुल मुझे हिन्दू होने पर गर्व है। कनाडा के इस मित्र ने पूछा की तुम भारत माता की जय कह सकते हो, बोले हाँ भारत माता की जय, वंदे मातरम, मैं कह सकता हूं। तो उस कनाडा वाले व्यक्ति ने जो भारतीय जनता पार्टी का समर्थक था कहा क्या तुम जय श्रीराम का नारा लगा सकते हो। बोला रे एक बार नहीं 10 बार, सुबह शाम लगाता हूं तुमसे पूछकर थोड़े लगाता हूं, लो जय श्रीराम। तो उसने कहा की फिर तो तुम्हें निश्चय ही भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर लेनी चाहिये क्योंकि तुम हिन्दू हो। यहां मेरे, मेरा जो परिचित व्यक्ति था वो असहमत हुआ और उसने कहा की मैं proud हिन्दू हूं, मैं सनातनी हूं, मैं सुबह-शाम पूजापाठ करता हूं, इसका मतलब ये कैसे हो गया की मुझे भारतीय जनता पार्टी का सदस्य होना चाहिये और फिर उसने एक लम्बी-चौड़ी बात कही अपने कनाडा वाले उस मित्र से, जो सीधे-सीधे भारतीय जनता पार्टी के दोहरेपन को उजागर करती है। लबोलुआब ये था अध्यक्ष महोदया की, बड़े अच्छे एक लेखक हैं, कवि हैं सुशांत जी, सुशांत सुप्रिय नाम है उनका। उनकी एक छोटी सी कविता की चार पंक्तियाँ मैं जो है आपके सामने पढ़ना चाहूंगा, ''की तुम भी अच्छे, हम भी अच्छे दोनों अच्छे ढ़ेंचू ढ़ेंचू। तुम भी अच्छे हम भी अच्छे, दोनों अच्छे ढ़ेंचू-ढ़ेंचू और जो भी हम सा राग अलापे वह भी अच्छा ढ़ेंचू-ढ़ेंचू।'' भारतीय जनता पार्टी ये कहना चाहती है। आप समझिये। भारतीय जनता पार्टी ये कहना चाहती है की हमारी तरह जो है तुम अगर खाल ओढ़ लोगे, हमारी तरह तुम भी ढ़ेंचू-ढ़ेंचू कहोगे तुम भी बड़े अच्छे आदमी हो, तुम भी हिन्दू हो तुम भी सही मायने में हिन्दू हो। तभी हिन्दू हो जब तुम

भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हो। लेकिन जो चिट्ठी लिखी है भारतीय जनता पार्टी ने। ये पहला ऐसा वाक्या नहीं है अध्यक्ष महोदया जिसमें भारतीय जनता पार्टी ने अपने फर्जीवाड़े को उजागर किया है, इसके पहले मैं आपको दिखाना चाहूंगा ढ़ाई सौ साल से पुराने तकरीबन 296 स्ट्रक्चर्स को जिसमें दर्जनों मंदिर हैं, एक शॉपिंग कॉप्लैक्स बनाने के लिये देश की आधयात्मिक राजधानी बनारस के अंदर भारतीय जनता पार्टी ने दर्जनों मंदिर और तमाम पुराने ढ़ांचों को तोड़ दिया। ये हिन्दू बनते हैं, ये हिन्दू बनते हैं जबकि मंदिर तोड़ रहे है, बनारस पहली घटना नहीं है अध्यक्ष महोदया। बनारस के बाद अयोधया के अंदर भगवान राम जिनके अनन्य भगत थे, भगवान शिव। उनके 176 मंदिर उन्होंने डिमोलिस कर दिये डवलपमेंट के नाम पर। बनारस में मंदिर तोड़ी भारतीय जनता पार्टी ने, अयोध्या में मंदिर तोड़ा भारतीय जनता पार्टी ने। तीन सौ वहां पर, पौने दो सौ यहां पर और उसके बाद दिल्ली के अंदर भी भारतीय जनता पार्टी 53 मंदिरों को तोड़ने की कोशिश करने में लगी हुई है, जो सीधे-सीधे भारतीय जनता पार्टी के फर्जी हिन्दुत्व के एजेंड़े को उजागर करती है, उनको एक्सपोज करती है। हम सबने कल एक श्रद्धांजली सभा रखी यहां पर, इस सदन के अंदर। उसमें भी भारतीय जनता पार्टी का उतावलापन सामने आया, सुनने को तैयार नहीं है। सौरभ भाई बोल रहे हैं, कह रहे हैं भाई, उदयपुर में जो घटना हुई है हम सब उससे आहत हैं। चाहे कोई भी समाज का व्यक्ति हो, नफरत की प्रकाष्ठा ऐसी नहीं हो सकती की वो किसी की जान ले ले। मजे की बात देखिये की उस मामले में भी जो आदमी पकड़ा गया वो भी भारतीय जनता पार्टी का सदस्य है। लश्करे तैयबा के कनैक्शन के साथ जो आतंकवादी पकड़ा गया है जम्मू कश्मीर का भारतीय जनता पार्टी का मीडिया सेल का जो सदस्य रहा है, इंचार्ज

रहा है, इंचार्ज रहा है वो। क्या हो रहा है देश के अंदर, जहां कहीं भी जो देश का, जो डैमोक्रेटिक फैब्रिक है वो अगर कमेजतवल हो रहा है। जो देश का, देश को मजबूत बनाए रखने के लिये साम्प्रदायिकता की जो नींव है, जो सामाजिक सद्भाव की नींव है, उसमें अगर कोई छेद कर रहा है तो वो सीधे-सीधे भारतीय जनता पार्टी के लोग सामने निकलकर आ रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी के लोग ये काम कर रहे है। तो अध्यक्ष महोदय मुझे लगता है कि इस विषय ने पहले हम सब कहते थे, लेकिन अब प्रमाण के साथ ये साबित हो रहा है की भारतीय जनता पार्टी सिर्फ फर्जी हिन्दुत्व का फटा हुआ ढ़ोल बजाने वाली पार्टी है, ढ़ैंचू-ढ़ैंचू करने वाली पार्टी है और ऐसी स्थिति-परिस्थिति में मुझे लगता है कि अब भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के पास सामने आकर, दिल्ली की जनता और देश की जनता से माफी मांगने के अलावा और अपना पक्ष स्पष्ट करने के अलावा और कोई दूसरा, तीसरा रास्ता नहीं है। भारतीय जनता पार्टी को ये बताना पड़ेगा की इस देश में जो एकता और अखंड़ता की बात कही जाती है, जो गंगा-जमुनी तहजीब की बात कही जाती है। जो सबको साथ लेकर चलने की बात कही जाती है, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को उससे नफरत क्यों है। वो क्यों देश के सामाजिक सद्भाव के वातावरण को बिगाड़ने में लगे हुए है। उनकी पार्टी के पदाधिकारी क्यों कानून हाथ में लेकर देश का सांप्रदायिक सौहार्द खत्म करने पर लगे हुए है। उनकी पार्टी के प्रवक्ताओं के ऊपर सुप्रीम कोर्ट की तल्ख टिप्पणी आने के बाद अब स्पष्ट हो गया है की अगर कोई एक पार्टी है जो नहीं चाहती है हिन्दुओं के हक में सोचती है, जो हिन्दुओं का भला नहीं सोचती है, जो हिन्दू-मुसलमान किसी भी जाति-समाज का भला नहीं सोचती है वो एक पार्टी है भारतीय जनता पार्टी।

भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को इस बाबत अपना पक्ष स्पष्ट करना चाहिये, अपनी बात रखनी चाहिये और मुझे लगता है कि हमारे, हमारी विधान सभा के एक बड़े अच्छे साथी हैं डॉक्टर अख्तर साहब। बड़ा अच्छा उनका एक शेयर है की उन्हें तारीखें मिल्लत भी हमेशा याद रखेगी और मैं कह रहा हूं भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के कनैक्शनस और उनकी जो पृष्ठभूमि पूरी निकलकर आ रही है उस परिपेक्ष में कह रहा हूं। की उन्हें तारीखे मिल्लत भी हमेशा याद रखेगी, जो अपनी कौम के जज्बात का सौदा नहीं करते। ये भारतीय जनता पार्टी के लोग हिन्दू समाज का, अपने आपको प्रणेता बताते हैं अपने आपको नेता बताते हैं उनके हितों के रक्षक पार्टी बताते हैं जबकि असल में यही उनका सत्यानाश कर रहे हैं, ये शेयर उनको एक्सपोज करता है। मैं सदन के सामने अपना निंदा प्रस्ताव पढ़ना चाहूंगा। भारतीय जनता पार्टी का असली चेहरा देश के सामने आया। मोदी सरकार ने दिल्ली सरकार को चिट्ठी भेजकर कहा है कि हमें भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, हनुमान, शिव, भगवान माता दुर्गा, साईं बाबा समेत 53 मंदिरों को तोड़ने के लिये धार्मिक समिति की अनुमति चाहिये। भारतीय जनता पार्टी के लोग देश भर में धर्म के नाम पर ड्रामा करते हैं, जबकि दिल्ली में 53 मंदिरों को तोड़ने की योजना बना रहे है। यह सदन इस बात की निंदा करता है, धन्यवाद अध्यक्ष महोदया।

माननीया अध्यक्षः वीरेन्द्र कादियान जी।

श्री वीरेन्द्र सिंह कादियानः जैसा की दिलीप जी ने बताया की एक पत्र प्राप्त हुआ है दिल्ली सरकार को कि 53 मंदिरों की लिस्ट है उसमें और उनको तोड़ा जाना है। वो लिस्ट मेरे पास भी है। मैं एक बात बताना चाहूंगा इस सदन

को की हम सब किसी न किसी धर्म को मानते है, कोई हिन्दू धर्म को मानता है, कोई मुस्लिम, कोई सिख, ईसाई, जैन, बुद्ध सभी धर्मों की भगवान में आस्था होती है और सभी लोग और सभी धर्म एक ही चीज सिखाते हैं मानवता, दयाभाव, प्रेमभाव, सद्‌भावना ये सारी की सारी चीजें सभी धर्मों में, लगभग सारी की सारी बातें एक है, तरीके अलग-अलग है। भारतीय जनता पार्टी जब भी चुनाव में जाती है, जब भी आपने देखा होगा कोई चुनाव हो इन्हीं धर्मो का प्रयोग करती है। मैं हिन्दू हूं, मैं पक्का हिन्दू हूं, हिन्दू धर्म में मेरा जन्म हुआ, मैं इसको मानता हूं और मैं गर्व से कहता हूं कि मैं हिन्दू हूं। मैं हनुमान भगत हूं, श्रीराम का भगत हूं। बातें चलती हैं चुनाव के समय की बात बताऊं आपको। चुनावों के दौरान दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने हमारे यहां पर सभा की उस सभा में उन्होंने कहा अगर मैंने काम किया है दिल्ली वासियों के लिये, दिल्ली के लोगों के विकास के लिये, इनकी भावनाओं की कद्र करते हुए, मैंने काम किए तो मुझे वोट दो अन्यथा वोट मत दो। चुनाव चल रहा था, कुछ भाजपा के नेता साइड में खड़े थे, एक बंदा गया उसको धीरे से कान में कुछ बोला उन्होंने। मैं आकर बोला भई क्या बोल गए ये, क्या कह गए, तो बोला भाई ये कह रहे थे अगर हिन्दू हो तो बीजेपी को वोट दे देना। मतलब हिन्दू हो तो बीजेपी को वोट देना नहीं तो ओरों को दे दियो। मैं चुनाव जीत गया, मैंने उस पंडित जी को बुलाया मैंने कहा पंडित जी आप ये बताएं की आप किस आधार पर ये कहते हो की हम हिन्दू हैं, ये फलाने हैं ये धकड़े हैं, तो बहुत शर्माया। मैंने कहा मेरी विधान सभा के अंदर मैंने 2 मंदिरों का निर्माण करा दिया। एक बाबू धाम में, भगवान बाल्मिकी मंदिर का निर्माण कराया, दूसरा शंकर विहार के, दिल्ली कैंट विधान सभा में शंकर विहार की तरफ से जाता

हुआ एयरपोर्ट पर रोड है, लैफ्ट साइड में, एक मंदिर था बहुत ही जर्जर हालत में था। मैंने बीजेपी वालों से भी निवेदन किया, क्योंकि परमिशन लेनी होती है और रक्षा मंत्रालय का एरिया है की भई मिल-जुलकर मंदिर का निर्माण कर देते हैं, इसको पुनर्निमाण कर देते हैं, इसको ठीक कर देते हैं। कोई जवाब नहीं आया, मैंने उस मंदिर का पुनर्निमाण कराया और बहुत ही शानेदार मंदिर उस रोड पर बनकर तैयार हो गया। फिर लोग आए पुरानी नांगल के लोग आए। बोले जी हमारा मंदिर है, बाल्मिकी मंदिर है, वो बनाना है अब तोड़ तो दिया बन नहीं रहा। मैंने उसका काम शुरू किया और इन लोगों ने शिकायत कर-कर के उस मंदिर को अधूरा ही रखवा दिया। मैंने अनेकों मंदिरों में काम किया, 3-4 मंदिर और हैं जिनमें मैंने निर्माण कर दिया और उनमें काम चल रहा है पूर्ण होने वाला है। मेरे पिताजी सेना में थे, वो गऊशाला के प्रधान रहे और मैं सुबह-शाम भगवान की पूजा करके निकलता हूं लेकिन फिर भी जहां भी मैं बीजेपी वालों से टकराता हूं तो एक ही बात कहते हैं की भई तुम हिन्दू हो, मैंने कहा हाँ भई मैं हिन्दू हूं, तुमसे सर्टिफिकेट लेने की मुझे जरूरत नहीं है आप देखो और मैं ये दावे के साथ कह सकता हूं कि किसी भी मंदिर, किसी भी विधायक ने जो भाजपा के है या आज सांसद है मंदिरों का निर्माण किया हो और मैंने अपनी विधान सभा में कम से कम 4-5 मंदिरों में काम शुरू कर रखा है।

श्री वीरेन्द्र सिंह कादियानः ये पूछ करके देख लो। कौन हिन्दू और कौन वो है। और आज जब मैंने लिस्ट पढ़ी कि मेरी विधान सभा के अन्दर 8-10 मन्दिरों को तोड़ना हैं। नेताजी नगर, मेरी विधान सभा के अन्दर आता है। उनको

तोड़ने का ये नोटिस जब देखा तो मुझे बड़ा दुख हुआ और मुझे लगा कि हम मन्दिर बनवाते रहेंगे और ये तुड़वाते रहेंगे बीजेपी वाले। आम आदमी पार्टी के विधायक मन्दिर बनवाते रहेंगे और भाजपा के विधायक मन्दिर तुड़वाते रहेंगे। यही चलता रहेगा और फिर कहते हैं कि हिन्दू हो तो बीजेपी को वोट देना नहीं तो वोट मत देना। ये बड़े दुख की बात है। बड़े शर्म की बात है। राम मन्दिर, भगवान श्रीराम के मन्दिर के निर्माण के लिए लोग मेरे पास आये। पूरा ग्रूप बनाकरके आये। सोचे कि जी आम आदमी पार्टी का विधायक है पता नहीं क्या जवाब देगा। मैंने कहा कि मुझसे जो सहयोग हो सके लो भाई। भगवान श्रीराम का मन्दिर, भव्य मन्दिर बनना चाहिए लेकिन ये छोटे–छोटे मन्दिर भी बनने चाहिए क्योंकि हम सारे के सारे अयोधया नहीं जा सकते। हम सभी अपने घर के आसपास, अपने मोहल्ले के आसपास जा करके पूजा–पाठ करते हैं। घरों में पूजा–पाठ करते हैं। आम आदमी यहाँ पूजा करते हैं। इन मन्दिरों का भी निर्माण होना चाहिए और मुझे, मैंने कई मन्दिरों, आज्ञा भी ले रखी है एक दो मन्दिर बनाने की लेकिन मुझे परमीशन नहीं मिल रही है। तो मुझे बड़ा दुख हुआ जब मैंने देखा कि भई ये मन्दिरों को तोड़ा जा रहा है तो मैं बहुत आहत हुआ। हमें सभी धर्मों का आदर करते हैं हम। सभी धर्मों को चाहे वो गुरूद्वारे में काम करना हो और अन्य धार्मिक स्थानों पर काम करना हो, बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। बढ़–चढ़कर काम करते हैं क्योंकि धर्म एक ही चीज सीखाता है मानवता, भाईचारा, प्रेम, करूणा लेकिन जिस आस्था के मन्दिर में हम पूजा करते हैं अगर उसको तोड़ा जाता है तो हम इसकी निंदा करते हैं और हमारे साथी विधायक दिलीप पाण्डेय जी ने जो प्रस्ताव रखा। मैं उसका समर्थन करता

हूं कि इन मन्दिरों को न तोड़ा जाये। धन्यवाद, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः आतिशी जी।

सुश्री आतिशीः धन्यवाद अध्यक्ष महोदया, दिलीप पाण्डेय जी ने प्रस्ताव रखा है निन्दा प्रस्ताव। और जबसे इस मुद्दे पर चर्चा शुरू हुई है मुझे लगता है कि इस सदन में मौजूद सभी लोग इस चिट्ठी के बारे में सुनकरके सोच रहे हैं कि आखिरकार भारतीय जनता पार्टी को क्या आन पड़ी। केन्द्र सरकार को क्या आन पड़ी कि उन्होंने एक चिट्ठी भेजी कि जी हमें 53 मन्दिर तोड़ने हैं। देखिये, दिलीप जी मसला बहुत कम्प्लीकेटेड नहीं है। एक्चूवली इसके पीछे से एक बहुत छोटी सी साधारण सी बात है। मसला ये है कि पिछले 15 साल से एमसीडी में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। पिछले 15 साल में जबसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार है भारतीय जनता पार्टी के नेता, भारतीय जनता पार्टी के पार्षद, इनके गली में अलग-अलग कार्यकर्ता गली-गली में जाकरके सिर्फ उगाही करने का काम करते हैं। भारतीय जनता पार्टी के पार्षद और नेता लिंटर पर, पर स्कावयर फुट के पैसे की उगाही पूरी दिल्ली में करते आये हैं। ये आपको दिल्ली का बच्चा-बच्चा बता देगा। तो पहले भारतीय जनता पार्टी के नेता अवैध निर्माण करवाते हैं। अब हुआ ये कि अब एमसीडी के चुनाव आने वाले थे तो भारतीय जनता पार्टी को ये समझ में आ गया कि 15 साल हमारी गुण्डागर्दी और उगाही से परेशान होकर हमें यहाँ से एमसीडी से निकाल करके दिल्ली की जनता बाहर फेंकने वाली है। तो अब क्या करें? अब पैसा कहाँ से आयेगा? अब उगाही कैसे होगी? तो उन्होंने उगाही की एक नई स्कीम

बनायी कि जो इतने सालों से पैसा ले-लेकरके, ले-लेकरके अवैध निर्माण उन्होंने करवाया। अब वो वापस उन्हीं लोगों के पास पहुँचे और कहा कि अब फिर से पैसा दो वरना जो ये अवैध निर्माण कराया है उस पर हम बुल्डोजर चलवा देंगे। तो वो लोगों के दुकानदारों के पास गये। कहते हैं जी पैसा निकालो। पैसा नहीं दोगे तो हम तुम्हारी दुकान पर बुल्डोजर चला देंगे। ये अलग-अलग कालोनियों में गये। उन्होंने कहा ये जो छज्जा निकाला हुआ है न आपने जो हमने ही बनवाया था। इसका पैसा पाँच साल पहले आपने हमें ही दिया था अब फिर से पैसा दो। वरना हम छज्जा तुड़वा देंगे। ये दिल्ली की अनेकों अनॉथराइज कालोनीज में गये। कहा की जी जो आपने ये मकान बनाया हुआ है जो आपने ये दुकान बनायी हुई है जिसके पैसे हमने ही लिये थे कुछ साल पहले। अब फिर से पैसे नहीं दिये तो हम उस पर बुल्डोजर चलवा देंगे। ये पिछले कुछ महीने से भारतीय जनता पार्टी के नेता दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों में करते आये हैं। अब भारतीय जनता पार्टी के भ्रष्टाचार की और जो इनके पैसे की हवस है ये इतनी ज्यादा है कि ये मकान पर, दुकान पर, छज्जे पर तो रूके नहीं क्योंकि इन्हें और पैसा चाहिए। तो इनकी पैसे की हवस इतनी ज्यादा है कि जैसे नोटिस दुकानों को दे रहे थे, मकानों को दे रहे थे। ये मन्दिरों तक भी पहुँच गये और मन्दिरों को भी कहा कि अगर तुमने हमें अपने दान पात्र से पैसा नहीं दिया तो हम तुम्हारे मन्दिर पर भी बुल्डोजर चला देंगे। ये इनकी राजनीति है। तो ये अप्रैल के महीने की बात है कि मेरी विधान सभा में एक श्रीनिवास पुरी के इलाके के कुछ लोग हमारे पास मेरे विधायक कार्यालय में आये। उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ पर एक नीलकंठ महादेव मन्दिर है जहाँ पर पिछले 20-25 साल से हम पूजा करते हैं। जहाँ पर इलाके की महिलायें अपना

भजन-कीर्तन करने जाती हैं। जहाँ नवरात्रों के समय हर साल वहाँ पर एक भण्डारा होता है। कहते हैं जी वहाँ पर तो नोटिस लग गया कि अब बुल्डोजर चलने वाला है। तो मुझे भी अचम्भा हुआ। मैंने सोचा कि भई दुकान पर बुल्डोजर चला रहे हैं, मकान पर बुल्डोजर चला रहे हैं। तो भारतीय जनता पार्टी वालों की इतनी बेवकूफी तो नहीं होगी कि ये मन्दिर पर भी बुल्डोजर चलवा देंगे। तो हम वहाँ पर गये और वहाँ पर ये नोटिस लगा हुआ था जिसमें ये स्पष्ट तौर पर लिखा था कि जो वहाँ पर नीलकंठ महादेव मन्दिर है श्रीनिवास पुरी में उस पर भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार बुल्डोजर चलाने वाली थी और उस मन्दिर को तोड़ने वाली थी। तो वहाँ के लोगों ने, हमारे आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने, मैंने भी, हमने वहाँ पर बहुत प्रोटेस्ट किया। तो फिर भारतीय जनता पार्टी के पार्षद, नेता वगैरह थे। नहीं-नहीं, नहीं-नहीं, हमने नहीं दिया है नोटिस ये झूठ बोल रहे हैं। तो फिर वहाँ पर कुछ जर्नलिस्ट भी खड़े थे। उन्होंने कहा सर बस एक छोटी सी बात है कि ये आपकी ही केन्द्र सरकार का डिपार्टमेन्ट है मिनिस्ट्री ऑफ हाउसिंग एण्ड अर्बन अफेयर्स, लैंड एण्ड डवलपमेन्ट ऑफिस, निर्माण भवन, नई दिल्ली। तो उन्होंने सोचा अब क्या कहें? उन्होंने कहा, नहीं-नहीं-नहीं, ये न कोर्ट का आदेश है। कोर्ट के आदेश की वजह से हम ये नोटिस दे रहे हैं। उन्होंने कहा देखों-देखों-देखों नोटिस पर लिखा हुआ है कोर्ट का आदेश है तो फिर किसी ने कहा की जी देखते हैं। तो पता चला कि जिस कोर्ट के आदेश का ये हवाला दे रहे हैं वो कोर्ट का आदेश 10 साल से ज्यादा पहले आया था। 2011 के कोर्ट के आदेश का हवाला देकरके उन्होंने श्रीनिवास पुरी के नीलकंठ महादेव मन्दिर के बाहर ये नोटिस लगा दिया। तो ऐसा क्या हो गया कि 11 साल पुराना कोर्ट का आदेश याद

आ गया। हुआ सिर्फ दिलीपी जी इतना था कि एमसीडी में भारतीय जनता पार्टी की सत्ता जा रही थी तो आखिरी कुछ महीनों में जितने ज्यादा से ज्यादा पैसे बना सकें, उतना इनका प्रयास था। हमारी तो इलाके की कुछ महिलायें जो वहाँ पर कीर्तन करती है उन्होंने कहा कि देखो हमें तो पता है कितना भ्रष्टाचार करते हैं। हमें पता है कि कितनी उगाही करते हैं पर हमारे मन्दिर पर तो हाथ न डालें। भगवान श्रीराम के गुल्लक पर तो हाथ न डालें। कहते हैं जी हम अपने मन्दिर में गल्ला बनाकरके रख देंगे। उस पर लिख देंगे भारतीय जनता पार्टी के लिये। हम सीधा उसमें पैसा डाल देंगे लेकिन हमारी आस्था पर तो आप बुल्डोजर मत चलाओं। हमारे मन्दिर पर बुल्डोजर मत चलवाओ। जब हमने ये मुद्दा उठाया तो दो दिन के बाद श्रीनिवास पुरी के पास एक सरोजनी नगर जो इलाका है वहाँ पर साउथ दिल्ली में वहाँ के कुछ लोग आ गये। उन्होंने कहा जी हमारे मन्दिरों के बाहर भी नोटिस लगा हुआ है। तो फिर पता चलता है कि प्राचीन शिव मन्दिर, साई मन्दिर, शनि मन्दिर वहाँ पर भी नोटिस लगा हुआ है। फिर से भारतीय जनता पार्टी वाले कहते हैं नहीं-नहीं, आम आदमी पार्टी वाले झूठ बोल रहे हैं। हमने ऐसा कुछ नहीं कहा है। हम कोई मन्दिर नहीं तोड़ना चाहते हैं। तो हमने कहा, अच्छा ऐसी बात है तो फिर पता चलता है कि उसी के कुछ दिन बाद भारतीय जनता पार्टी के ही केन्द्र सरकार के लोग दिल्ली सरकार को एक चिट्ठी लिखते हैं। एक चिट्ठी जिसमें 53 मन्दिरों की लिस्ट है। अध्यक्ष महोदया, एक नहीं, दो नहीं, चार नहीं इसमें पूरी उन्होंने 53 मन्दिरों की लिस्ट लगायी हुई है जिस पर वो बुल्डोजर चलाना चाहते हैं। जिसको वो तोड़ना चाहते हैं।... हाँ जी, बिल्कुल, बिल्कुल हम देंगे जी सबको और आप अपने सब इलाके में भी दिखाइयेगा कि ये कैसी पैसे की हवस है

भारतीय जनता पार्टी की कि... बिल्कुल और अब देखिये ऐसी हवस है कि सिर्फ लिन्टर लगाने पर पैसे से इनकी हवस नहीं पूरी होती। इनकी हवस सिर्फ छज्जा तोड़ने से पूरी नहीं होती। दुकान तोड़ने से पूरी नहीं होती। ऐसी पैसे की हवस है कि अब ये 53 मन्दिर तोड़ने पर आ गये हैं कि मन्दिरों से भी पैसा लेंगे। हम इस सदन में भारतीय जनता पार्टी का, उनकी केन्द्र सरकार की कड़ी निंदा करते हैं और देखिये हमारे दो ही साथी बैठे हैं यहाँ पर। पता नहीं बाकी हालाँकि आपने बुला लिया था वापस आये नहीं। हम बस उनसे हाथ जोड़करके आग्रह करते हैं कि देखिये जो आप उगाही पिछले 15 साल से कर रहे हैं मुझे पूरा भरोसा है कि भारतीय जनता पार्टी ने काफी पैसे कमा लिये होंगे। हो सकता है अब और राज्यों में भी भ्रष्टाचार करते हो। हो सकता है कि वैसे सीबीआई तो हमारे बिचारे विधायकों की चिट्ठी पर जाँच कर रही है। आपकी जो भ्रष्टाचार है उस पर जॉच भी कम करती है लेकिन हमारा बस आपसे एक छोटा सा आग्रह है कि आपकी जो ये पैसों की हवस है उससे हमारी आस्था को तो छोड़ दीजिये। उससे दिल्ली के मन्दिरों को तो छोड़ दीजिये। बस इतना सा हमारा भारतीय जनता पार्टी से आग्रह है। धन्यवाद अध्यक्ष महोदया।

माननीया अध्यक्षः अजय महावर जी।

श्री अजय कुमार महावरः धन्यवाद अध्यक्षा महोदय, ये तो सबको पता है कि दिल्ली और देश में कि कौन मन्दिरों के पक्ष में हैं और कौन तुष्टीकरण में हैं। पूरे देश को पता है अध्यक्ष महोदया,

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये शान्ति बनाकरके रखो। बोलने दीजिये।

श्री अजय कुमार महावर: जब मैंने शान्ति से सुना। आप शान्ति से सुनिये। ज्यादा लम्बा नहीं बोलूंगा मैं। क्योंकि पूरे देश को ये भी पता है कि राष्ट्र भक्तों और राम भक्तों की टोली कौन है। वो लोग नहीं हम तो साहस के साथ पहली राजनीतिक पार्टी है देश के इतिहास में जिन्होंने अपने राजनैतिक घोषणा पत्र में राम मन्दिर को जिक्र करके उसे बनाने का संकल्प पारित किया और उसे पूरा करके भी दिखाया इस 70 साल के अन्दर में। और वो पार्टी बात कर रही है, वो पार्टी बात कर रही है जिन्होंने वहाँ हास्पिटल बनाने की बात की। वो पार्टी बात कर रही है जिनके नानी सपने में कुछ कह जाती है। आज आप जो अपने इन चन्द कवायदों से नरेटिव सेट करने की कोशिश कर रहे हो, वो चिपकेगा नहीं, चिन्ता मत करो। पूरे देश को पता है कि ये राम भक्तों की टोली काम कर रही है। मुस्लिम तुष्टिकरण आप करते हैं और अब आप उस भंवर में फंस रहे हैं तो आप अपने नये प्रयोगशाला जो कांग्रेस, कांग्रेस जिसमें फेल हो गयी है। जिस साफ्ट हिन्दूत्व को लेने का कोशिश आप कर रहे हो उसमें कांग्रेस फेल हो गयी है। उसको आप लेने का कोशिश कर रहे हो। सारी दुनिया को पता है कि रोहिंग्या मुसलमान को किसने दिल्ली में बसाया। किसने बिजली का बिल दिया। किसने मीटर दिया। किसने मकान दिये बांग्लादेशियों को और बुल्डोजर की बात।...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: अखिलेश जी,

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः अखिलेश जी आप अपनी बारी में बोलियेगा। आप अपनी बारी में बोलना।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अखिलेश जी,

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः आप अपनी बारी में बोलना। राष्ट्रभक्ति आपके मुंह से अच्छी नहीं लग रही है। आप तो, आप तो वो लोग हो...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अखिलेश जी भई शान्ति बना करके...

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः अरे आप लोग तो, सुनने का माद्दा ही नहीं है। अरे सुनने का माद्दा ही नहीं है। सुनने का माद्दा ही नहीं है।

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः अरे आप क्या बात करोगे। जो लोग एयर स्ट्राइक का, सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत माँगते हो सेना से। शर्म आनी चाहिए उनकी राष्ट्र भक्ति पर। जो टुकड़े-टुकड़े गैंग के साथ खड़े हो जाते हैं। आप मन्दिरों की बात करते हो। मैं अध्यक्ष महोदया,

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिये आप।

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः अध्यक्ष महोदया, इनके पेट में दर्द हो गया है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठ जाइये।

श्री अजय कुमार महावरः अध्यक्ष महोदया, इनके पेट में दर्द हो गया है मेरी बातों से।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठ जाइए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सही राम जी बैठिए।

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः अध्यक्ष महोदया,

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः भई ऐसे मत करो आप सुनो। सुनने की ताकत रखो। सुनने की ताकत मत रखो। सुनने की ताकत रखो, सुनने की ताकत रखो।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मेरा सत्ता पक्ष के साथियों से निवेदन है। इनके पास मुद्‌दा विहिन है। इनको बोलकर अपनी बात खत्म करने दीजिए।

श्री अजय कुमार महावरः आपके इस व्यवहार से मैं डरने वाला नहीं हूं।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः उपाध्यक्ष महोदया, अगर भाजपा के मुख्य सचेतक अपनी बात रख रहे हैं...

माननीया अध्यक्षः कुलदीप जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः और हमारे रूलिंग पार्टी के ऑनरेबल एमएलएज़ निरंतर उनको डिस्टर्ब कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि आप इस चेयर पर विराजमान हैं, मैं जरूर आपसे न्याय की गुहार करता हूं और कृपया रूलिंग पार्टी के एमलएज़ को कहें कि कम से कम इस हाऊस की मर्यादा का ख्याल जरूर रखें। जब रूलिंग पार्टी के कोई भी ऑनरेबल एमएलए बोलते हैं चाहे किसी तरह का आरोप, कितना ही कड़ा आरोप हमारे ऊपर लगाएं, हमारी लीडरशिप के ऊपर लगाएं, हमारी केन्द्र सरकार के ऊपर लगाएं या जब भी ऑनरेबल मिनिस्टर या चीफ मिनिस्टर बोलते हैं, हम कभी भी उनको डिस्टर्ब नहीं करते हैं। तो मैं आपसे अनुरोध कर रहा हूं कि कृपया इनको जरूर एडवाईज करें कि संख्या आपकी ज्यादा है लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि आप अपोजिशन को बोलने नहीं देंगे, ये शोभा नहीं देता है।...

माननीया अध्यक्षः बैठिए।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः मैं आपसे फिर एक बार हाथ जोड़ के विनती करता हूं कि इस मामले में आप इंटरविन करें और जरूर रूलिंग पार्टी के ऑनरेबल एमएलएज़ को एडवाईज करें कृपया हाऊस की कार्यवाही को ठीक से चलने दें। धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः जो वक्तव्य अभी बिधूड़ी जी ने सत्ता पक्ष के साथियों के लिए दिया, थोड़ा सा ज्ञान आप विपक्ष के साथियों को भी दें। सुबह पूरे पच्चीस मिनट विपक्ष के साथियों ने खराब किए, बोलने नहीं दिया और मजबूरन मजबूरन मुझे मार्शल आऊट उन्हें कराना पड़ा...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः और अभी मुझे ही नहीं बोलने दे रहे और अभी, अभी जो है विपक्ष के साथी के अनुरोध पर मैंने ये टिप्पणी करी थी कि लंच के बाद बुलाया जाए, लेकिन फिर भी सत्ता पक्ष के साथियों ने आग्रह किया, माननीय उप मुख्यमंत्री जी ने स्वयं आग्रह किया कि कोई बात नहीं आप बुला लीजिए तो जैसा बोएंगे वैसा ही काटेंगे। जब सत्ता पक्ष के साथी बोल रहे हों तो आप शांति बना कर रखें, जब आप शांति बना कर रखेंगे निश्चित तौर पर सत्ता पक्ष के साथी भी जब आप अपना वक्तव्य दे रहे होंगे तो आपको धैर्यपूर्वक सुनेंगे। तो जितना ज्ञान हम दूसरों को बांटते हैं कृपया थोड़ा सा खुद पर भी लागू करें। और अब सत्ता पक्ष के साथियों से भी निवेदन है कि जो लोग बोल रहे हैं उन्हें ध्यान से सुनें और अपनी बात को लिख लें, जो भी आप का प्वाईंट ऑफ आर्डर है और अपने वक्तव्य में उसको अंडरलाईन करें। जी महावर जी।

श्री अजय कुमार महावरः धन्यवाद अध्यक्ष महोदया, तो मैं कह रहा था अभी ये मंदिरों की बात कर रही थीं, कितनी चिंता है ये हम सब जानते हैं। आज वक्फ बोर्ड के माध्यम से दिल्ली सरकार मौलवियों को, इमामों को सैलरी देने का काम कर रही है। उन मंदिर के पुजारियों की तब सुध नहीं ली गई जब वो कोरोना में वो भी तकलीफ में थे, उन्होंने क्या बिगाड़ा है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सही राम जी।

श्री अजय कुमार महावरः उन्होंने क्या बिगाड़ा है और मैं तो कहता हूं गुरू ग्रंथ साहब...

माननीया अध्यक्षः आप लिख लीजिए। आप लिख लीजिए जिस भी चीज पर आपको ऑबजेक्शन है और फिर जब आप बोलिएगा।

श्री अजय कुमार महावरः हमारे गुरूद्वारे के गुरूग्रंथी, हमारे पादरी, इन सबका क्या अपराध है जो सिर्फ एक मुस्लिम तुष्टिकरण करने के लिए इमामों को और मौलवियों को सैलरी देने का काम किया जा रहा है।

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः आपने अभी...

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः भई आपके पेट में दर्द क्यूं हो रहा है। आप दवाई ले लीजिए बाहर जा करके। मैडिकल दुकान में दवाई मिलती है पेट दर्द

की। हमारे पास सब तरह की दवाई है। आपने आतिशी जी ने कहा बुलडोजर की बात। सारी दुनिया को पता है कि अनधिकृत कालानियों को अगर किसी ने हक दिलाने का काम किया तो भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार ने किया, हरदीप पुरी जी और नरेन्द्र मोदी जी ने किया, 1639 कालोनियों को मालिकाना हक देने का काम किया है और सदन में पास करके संसद में 2018 तक के किसी भी प्रकार के कंस्ट्रक्शन को भी कोई भी अधिकारी छू नहीं सकता, इसकी भी संसद में पूरी तरह से कानून पास करके प्रावधान किया है। ये बेशर्म आरोप लगाने से हम पर चिपकने वाले नहीं हैं, हमारा बुलडोजर चलता है अवैध घुसपैठियों पर, हमारा बुलडोजर चलता है अपराधियों पर। सबको यह पता है झूठमूठ का डर चिपकाने से कुछ नहीं होगा। मैं इस सदन में विश्वास दिलाता हूं, पूरे विश्वास के साथ कहता हूं कि कोई भी भारतीय जनता पार्टी का बुलडोजर किसी गरीब, किसी छज्जे और किसी अनऑथराईज कालोनी पर नहीं चलने वाला है। आप जो ये झूठा नैरेटिव सेट करने की कोशिश कर रहे हैं इस नरेटिव से आप सोचते हैं कि हिंदुओं के मन में हमारे लिए प्रश्नचिन्ह् खड़ा कर दोगे तो भूल जाओ, इस नरेटिव को आप लाख कोशिश करते रहना, ये नरेटिव सेट होने वाला नहीं है इसलिए मैं अपने मित्र मुख्य सचेतक दिल्ली सरकार दिलीप पांडे जी के इस बात का विरोध करता हूं कि उनका ये पक्ष ठीक नहीं है और हम पहले से ही मंदिरों के साथ हैं और सारी दुनिया को इसका पता है, आपके इस कहने से कुछ भी संदेश नहीं जाने वाला है। बहुत बहुत धन्यवाद। भारत माता की जय। जय हिंद।

माननीया अध्यक्षः विशेष रवि जी। विशेष रवि जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः विशेष रवि जी। जब कोई मुख्य विषय से भटक जाए तो समझ लीजिए कि उसके पास कुछ मजबूत, ठोस सबूत नहीं है उसके लिए कहने के लिए, तो इतने समझदार तो आप सभी साथी विधायक हैं, तो क्यूं फिर उसे रिकार्ड पे तो आने दीजिए, शोर शराबे में वो रिकार्ड पर नहीं आएगा। विशेष रवि जी।

श्री विशेष रविः जी धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः दो मिनट में अपनी बात पूरी कीजिए।

श्री विशेष रविः आपने मुझे बोलने का मौका दिया। सबसे पहले मैं आदरणीय दिलीप पाण्डेय जी के द्वारा लाए गए इस निंदा प्रस्ताव का समर्थन करता हूं जिसमें उन्होंने सदन को ये जानकारी दी है कि किस तरह से केन्द्र सरकार दिल्ली के अंदर स्थापित 53 मंदिरों को तोड़ने की अनुमति मांग रही है या वो ये चाहती है कि दिल्ली के अंदर मंदिरों को तोड़ा जाए। ये अब बहुत आम हो गया है ये बात कि जनता को ये पता लग चुका है कि भारतीय जनता पार्टी के कहने में और करने में जो है वो बहुत फर्क है। पब्लिक को दिखाने के लिए मंदिर और परमात्मा, प्रभु राम उनके लिए झंडा बुलंद किया जाता है लेकिन जब बंद कमरे में बैठते हैं तो इस पर विचार किया जाता है कि हमारा अपना फायदा कैसा हो, हमारे नेताओं का फायदा कैसा हो। तो इस तरह की कार्यवाही, इस तरह से पत्र लिखकर 53 मंदिरों को चिन्ह्ति करना और ये कहना कि हमें उनको तोड़ना है, ये दर्शाता है कि भारतीय जनता पार्टी

का कोई लगाव नहीं है मंदिरों से, कोई लगाव नहीं है परमात्मा से, कोई लगाव नहीं है उन मंदिरों से जुड़े हुए लोगों की आस्था से। तो मैं इस प्रस्ताव की निंदा प्रस्ताव का समर्थन करता हूं। इस निंदा प्रस्ताव का मैं समर्थन करता हूं और इसके साथ में एक विषय, और एक महत्वपूर्ण विषय मैं इसमें आपकी अनुमति से बोलना चाहता हूं कि जो कुलदीप भाई ने कहा एक तो वो है ही कि दिल्ली के अंदर ही तुगलकाबाद क्षेत्र के अंदर गुरू रविदास जी का मंदिर तोड़ा गया और बहुत दुर्भाग्य की बात है कि आज तक भी मतलब मीडिया में बताया गया, बातें की गई कि हम मंदिर को दोबारा बना रहे हैं, जगह दे रहे हैं समिति को, लेकिन आज तक जो है वो मंदिर जो है दोबारा विस्थापित नहीं हो पाया है। पूरी कमेटी जो है संघर्ष में लगी हुई है, पता नहीं कब संभव हो पाएगा ऐसा। दूसरा एक मैं विषय आपके बीच में लाना चाह रहा हूं कि डीडीए ने अभी 15 जून को महरौली क्षेत्र के अंदर एससी, एसटी परिवारों के 17 मकानों को तोड़ा। 15 जून को डीडीए की टीम अचानक वहां पहुंच गई और पिछले 40 साल से जब डीडीए नहीं था दिल्ली के अंदर उस से भी पहले के रह रहे लोगों को वहां से उन्होंने बिना नोटिस के अचानक बुलडोजर ले के पहुंचे और उनको वो पुलिस फोर्स की मदद के साथ उन मकानों को तोड़ दिया, उनको वहां से हटा दिया। 15 जून से ही वो सारे परिवार वहां खुले में पड़े हैं उनके बच्चे, उनके घर में महिलाएं, बच्चे, बुजुर्ग जो हैं वो परेशान हैं, वो दुखी हैं और इस कार्रवाई के अंदर केन्द्र सरकार और राज्य सरकार दोनों की जो पुनर्वास योजना है उसका पालन नहीं किया गया। अभी–अभी अजय महावर जी ने कहा कि संसद के अंदर भारतीय जनता पार्टी ने ये प्रस्ताव पास किया कि 2008 से पहले का कोई भी जो है कंस्ट्रक्शन जो है उसको हम

नहीं तोड़ेगें, लेकिन ये जीता-जागता सबूत है कि 15 जून को ही जो है एससी, एसटी परिवारों के मकानों को वहां तोड़ा गया। मैं बस सदन की जानकारी में इस बात को लाना चाह रहा था ताकि यहां सदन में लोगों को पता लगे कि भारतीय जनता पार्टी जो है हमेशा जो उनका रहा है कि कथनी और करनी में फर्क रहा है। आपने मुझे बोलने का मौका दिया उसके लिए बहुत बहुत शुक्रिया।

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी। ये अंतिम है।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने इस पर बोलने का मुझे मौका दिया और मैं अपने भाजपा के साथियों से उम्मीद कर रहा था कि जब उन्हें इस बात का पता चलेगा कि दिल्ली के अंदर 53 मंदिरों को तोड़ने का विषय आज विधानसभा के अंदर चर्चा में है और केन्द्र सरकार ने बकायदा चिट्ठी लिखकर दिल्ली सरकार के होम विभाग को गृह विभाग को कहा है कि हम लोग एक स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट बना रहे हैं एनबीसीसी का। हालांकि एनबीसीसी के बारे में और भी कई सारी चर्चाएं जो हैं होती रहती हैं कि एनबीसीसी को क्यों इतना फायदा जो है पहुंचाया जा रहा है और ये वही एनबीसीसी है अध्यक्षा महोदय जिसने स्मार्ट सिटी के नाम पे दिल्ली के अंदर सौ-सौ, डेढ-डेढ सौ साल पुराने वृक्ष काट दिए थे और करीब तीन साल, चार साल पहले ये मुद्दा जो है पूरी दिल्ली के अंदर बहुत गर्माया था उसी एनबीसी स्मार्ट सिटी के विषय में अब 53 वृक्ष काटने की बात जो है वो चल रही है। मुझे उम्मीद थी कि मेरे बीजेपी के भाई अजय महावर एक बार तो ये बात कहेंगे कि हम इसकी घोर निंदा करते हैं और ये मंदिर नहीं टूटने चाहिए।

इनके पूरे वक्तव्य में ये शब्द नहीं आए कि ये मंदिर नहीं टूटना चाहिए। ये इधर उधर की जो है बातें करते रहे जो एक पुराना कहा जाता है तू इधर उधर की बात न कर ये बता कि काफिला क्यूं लुटा, उसकी बात नहीं की। कभी राम मंदिर पर पहुंच गए। अब देश में चुने हुए हाऊस के अंदर एक झूठ बोला गया और मैं चाहूंगा अध्यक्षा महोदय कि उस झूठ को रिकार्ड से हटाया जाए वर्ना हमारी आने वाली पीढ़ियां इस झूठ को जानेंगी। इन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने वो मंदिर बनाए ये सरासर झूठ है। वो मंदिर भगवान राम ने खुद बनाया। पहली बात, इनकी औकात नहीं है कि भगवान राम का मंदिर ये बनाएं। भगवान राम ने बनाया और भगवान राम भी जब अपना मीडियम चुन रहे थे कि किस के थ्रू बनाएं तो च्वाईस थी बीजेपी कि इनके थ्रू बनवा लेते हैं। भगवान राम ने भी नहीं चुना। कह रहे इनके थ्रू चुनेंगे बदनाम हो जाऊंगा मैं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट चुना। भगवान राम ने चुना। पूरी सृष्टि जिसने बनाई, कण-कण बनाया, हमको बनाया, ये पृथ्वी बनाई, पूरा ब्रहमांड बनाया उनके लिए मंदिर ये बना रहे हैं। भई तुम बहुत बड़े हो गए। मतलब ये तो अब गाने बनाने लगे जो भगवान को लाए हैं। अरे ये तो दशरथ जी ने भी नहीं कहा कि मैं राम को लाया हूं। ये लाए हैं भगवान राम को। जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे। भई तुम कब से इतने बड़े हो गए कि तुम राम को लाने वाले बन गए। ये तो कोई नहीं कहता। ये तो पूरी तरह blasphemy है, अपमान है, हिंदू धर्म का अपमान है, हर रिलिजन का अपमान है जब ये कहते हैं कि हमने बनवाया। इतना घमंड, वो भी भगवान राम के लिए कि हमने भगवान राम का मंदिर बनवाया? आपने नहीं बनवाया, सुप्रीम कोर्ट ने बनवाया और सुप्रीम

कोर्ट ने कह के बनवाया और इतने सालों तक वो मुकद्मा लड़ा गया, तब बनाया गया।

श्री सौरभ भारद्वाजः तो ये जो बात अजय महावर जी ने कही है... सबने आदर किया और सबने सम्मान किया। लोगों को सिर्फ चिढ़ इस चीज से थी इनके कहने से नहीं बनायेंगे। समस्या क्या थी? अगर ये प्यार से कहते तो वो मंदिर कब का बन चुका होता। इनके कहने से नहीं बनाएंगे। जब सुप्रीम कोर्ट ने कहा, तो सबने कहा कि ठीक है बनवा लो, बहुत अच्छा है, चंदा दिया सबने।... चंदा चोरी भी हुआ। अध्यक्षा महोदय, ये इस रिकॉर्ड पर है हाउस के कि जब भगवान राम का मंदिर अयोधया में बना और ये खबर फैली कि राम मंदिर ट्रस्ट को कहां-कहां जमीन की जरूरत पड़ेगी तो बीजेपी के चुने हुए मेयर ने वहां पर अपने रिश्तेदारों के माध्यम से जमीनें खरीदी और एक से खरीदी और दो मिनट बाद कई गुणा दामों में अगले को बेची, ये भी इन्होंने किया, जिसके सबूत हमने इस हाउस के अंदर रखें।

और एक बात और जो ये झूठ जो बार-बार फैलाते रहते हैं, मैं कई बार सोचता हूं कि उस झूठ का भी पर्दाफाश करना चाहिए। ये बार-बार कहते हैं कि वक्फ बोर्ड जो है मस्जिदों के अंदर इमामों को तनख्वाह देता है। मैं पूछना चाहता हूं, रामवीर बिधूड़ी जी तो बहुत पुराने आदमी हैं, आज से देता है, सालों से देता है और सिर्फ दिल्ली सरकार देती है, आपकी सरकार नहीं देती, आपकी सरकार भी देती है, नहीं देती तो आप बता दो कि आपकी सरकार नहीं देती। मेरे पास रिकॉर्ड है, आपकी मधय प्रदेश की सरकार देती है, आपकी हरियाणा की सरकार देती है, आपकी बिहार की सरकार देती है, आपकी कनार्टका की

सरकार देती है। और इसलिए देती है और इसको भी समझ लीजिए क्यों देती है... इन्होंने भी दिया, जब मदन लाल खुराना, साहिब सिंह वर्मा और तीसरी एक मैडम थीं, सुषमा स्वराज जी, आज तीनों ही नहीं हैं दुनिया में, तीनों ने दिया और क्यों दिया... और क्यों देते हैं, वो भी समझ लेना चाहिए। अध्यक्षा महोदय, वक्फ बोर्ड जो है मुस्लिम धर्म के अंदर कुछ इस तरीके का अरेंजमेंट है और पहले से है कि जितनी भी ये मस्जिदें हैं, ज्यादातर मस्जिदें जो हैं, ये वक्फ बोर्ड की हैं। हमारे हिंदूओं के जितने मंदिर हैं दिल्ली में, ये किसी एक बोर्ड के नहीं हैं, ज्यादातर वो मंदिर पुजारियों के हैं। जैसे कि मैं बता देता हूं, हमारे गांव वालों का मंदिर है कालकाजी मंदिर, कालकाजी मंदिर जो है वो हमारे गांव के पुजारियों का है, जो भारद्वाज गोत्र के लोग हैं उनका है, तो उसके अंदर जितना चंदा आता है, चढ़ावा आता है, वो उस गोत्र के लोगों को मिलता है, वो लोग अपना बांटते हैं। आगे वो बैठे हैं, शर्मा जी बैठे हैं, वो भी एक मंदिर को जानते हैं, हनुमान मंदिर के पास उनका व्यवसाय है, उस मंदिर के कुछ पुजारी हैं, उनके कुछ परिवार हैं, उस मंदिर से जो चंदा आता है, जो आय आती है, वो उस मंदिर के जो पुजारी हैं, उनका परिवार है, उनका खानदान है, उनको मिलता है। इसी तरीके से और हिंदूओं के मंदिर हैं उनकी जो आय है वो उस तरह से मिलती है। कुछ मंदिर हैं, जैसे साउथ के अंदर तिरूमला मंदिर है, तिरूपति बालाजी का मंदिर, वो एक trust borne करता है, वैष्णो देवी का मंदिर है, वो एक ट्रस्ट borne करता है, जिसके अंदर फिर गवर्मेंट की दखलअंदाजी होती है। जब गवर्मेंट उस ट्रस्ट के अंदर आ जाती है तो गवर्मेंट ये कहती है कि भई अब इसके अंदर जितना भी चंदा आएगा, वो सारा चंदा अब गवर्मेंट का होगा और गवर्मेंट जो है वहां पर काम करने वालो पुजारियों

को, मुलाजिमों को, वर्कर्स को, सबको जो है तनख्वाह देगी, तो वो एक अरेंजमेंट है। वक्फ बोर्ड का ये अरेंजमेंट है कि वक्फ की जितनी भी प्रापर्टिस हैं, इनकी जो जायदादे हैं उसके ऊपर इनको किराया मिलता है और जितनी भी वक्फ बोर्ड के अंदर आने वाली मस्जिदें हैं उनके ऊपर जो है वक्फ बोर्ड का मालिकाना हक है, वो इनकी हैं, तो इसीलिए चूंकि इनका मालिकाना हक है तो इनके यहां जो काम करेगा, वो मौलवी होगा या इमाम होंगे, जो भी होंगे वो इनके, बेसिकली इनके लिए काम करते हैं, ये उसको तनख्वाह देते हैं और इनके राज्यों के अंदर ये अरेंजमेंट है। मगर क्या है सच नहीं बोलना, झूठ, झूठ, झूठ, झूठ, झूठ चलाते जाना है।

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाजः नहीं और अगर आपको, भई हम तो खुश होंगे, हम तो खुद पंडित है, हमारे लिए तो बड़ा अच्छा है। अगर आप चाहो तो पूरे देश के अंदर कानून बना दो। जैसे वक्फ एक्ट है, ये पूरे देश का है। आप पूरे देश के अंदर एक कानून बना दो, उसके अंदर केंद्र सरकार की और राज्य सरकार का हिस्सा बांट दो, आधा केंद्र दे देगी, आधा राज्य दे देगी, मंदिरों में भी देना शुरू कर दो, हमसे अच्छा कौन हैं जी, हम तो खुश हैं इस चीज के लिए। मगर शुरूआत तो करो। बनाओ, आप कानून बनाओ। क्यों अमानत भाई आपको कोई एतराज तो नहीं है?

श्री अमानतुल्ला खानः मैं राजी हूं।

श्री सौरभ भारद्वाजः देखो अमानत जी भाई को कोई एतराज नहीं है।

श्री अमानतुल्ला खानः ये लिखकर दे दे कि मंदिरों में देना है।

श्री सौरभ भारद्वाजः ये देखो, वो भी देने के लिए तैयार। अब मैं ये चाहता हूं कि हमारे बीजेपी के भाई इस चीज पर जरूर अपनी बात साफ करें कि ये जो 53 मंदिर भाजपा की केंद्र सरकार तोड़ना चाहती है, उस पर इनकी क्या राय है और मैं चाहूंगा कि ये इस चीज की निंदा करें कि इस तरीके से भगवान के मंदिरों को तोड़ना पूरी तरीके से गलत है। और ये पहली बार नहीं हो रहा अध्यक्षा महोदय, रविदास मंदिर आपको मालूम है, बहुत बड़ा आंदोलन लड़ा था और इस विधान सभा के अंदर उसकी बकायदा चर्चा हुई थी। तुगलकाबाद के अंदर रविदास जी का मंदिर था, उसको भी केंद्र सरकार के अधीन आने वाली डीडीए ने जबरदस्ती पूरी छावनी बनाकर, डंडे, लाठियां, गोलियां चलाकर लोगों पर, गलियों तक लोगों को भगा-भगाकर इन्होंने पीटा, इनकी दिल्ली पुलिस ने पीटा। इन्होंने पूरे एरिया की लाइट कटवा दी ताकि जो लोग वहां पर आंदोलन कर रहे हैं उनको अंधेरे में उनको पीट सकें। दलित समाज के हजारो युवकों को इन्होंने सड़कों पर भगा-भगाकर मारा, पीटा और उस मंदिर को इन्होंने ढहाया और ढहाने के बाद फिर इन्होंने बोला हमने नहीं किया, दिल्ली सरकार ने किया। बाद में इस सदन में चर्चा हुई। अरविंद केजरीवाल जी ने उस मंदिर को दुबारा बनवाने की बात रखी। इस सदन से रेजलूशन पास हुआ और कोर्ट में भी फिर वो रविदास मंदिर वाली सोसायटी वाले जीत गए और ये लोग वहां पर हार गए। ये लोग आज से नहीं, ये बहुत सालों से षडयंत्र कर रहे हैं और ये लोग का मतलब ये नहीं है कि ये जो लोग बैठे हैं, इनमें तो कई लोग बड़े अच्छे लोग हैं, ये बेचारे किसी मजबूरी से जो है इनको कुछ-कुछ बोलना पड़ता है मगर इनकी जो संस्था है, इनकी जो मातृ संस्था है आरएसएस, उनका हमेशा से ये कोशिश रहती है कि किसी मंदिर को करवा दो, किसी मंदिर के आगे

गाय काट दो, किसी मस्जिद के आगे सुअर काट दो, झगड़ा करा दो, झगड़ा होगा, बीजेपी का फायदा होगा। तो मैं ये चाहूंगा कि रामवीर बिधूड़ी जी आज इसके बारे में बताए और बताए वो मंदिरों के पक्ष में हैं या मंदिरों को तोड़ना चाहते हैं। धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः बिधूड़ी जी। पांच मिनट में कम्पलीट कीजिएगा।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (नेता-प्रतिपक्ष): अब पांच मिनट में कम्पलीट करूं। क्या बात है। भगवान आपका बहुत भला करें, मैं यही कह सकता हूं। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, माननीय श्री दिलीप पाण्डेय जी की ओर से निंदा प्रस्ताव लाया गया है, मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी के सभी विधायकों की ओर से इसका जोरदार विरोध करता हूं।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः इनके प्रस्ताव का, निंदा प्रस्ताव का।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये शांति बनाकर..

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अब पांच मिनट तो इसी में चला जाएगा।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप लोग शांति बनाएंगे तभी तो रिकॉर्ड पर आएगा। शोर में पता ही नहीं चलेगा वो समर्थन कर रहे हैं, विरोध कर रहे हैं।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, मैं देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी को देश के 130 करोड़ लोगों की ओर से बहुत-बहुत बधाई देना चाहता हूं कि अयोधया में भगवान राम जी का भव्य मंदिर के निर्माण का कार्य शुरू हो गया है। काशी विश्वनाथ मंदिर भव्य और दिव्य बनाया गया है। इसके लिए भी मैं देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी और उत्तर प्रदेश के बहुत ही यशस्वी मुख्यमंत्री आदरणीय योगी आदित्यनाथ जी को बहुत-बहुत इस सदन के माध्यम से बधाई देना चाहता हूं। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया, मथुरा में श्री कृष्ण जन्म भूमि पर श्री कृष्ण भगवान जी का भव्य मंदिर बने, उसके बारे में हमारे रूलिंग पार्टी के विधायक क्या राय रखते हैं, जरा उस पर भी ये अपनी राय स्पष्ट करें।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः आप समर्थन करते हैं?

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः बहुत धन्यवाद।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः करते हैं न?

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः हां।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अब करतारपुर साहिब में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयासों से एक कोरिडोर का निर्माण हुआ, देशवासियों ने हर्ज़ व्यक्त किया। एक चर्चा चल रही थी संत रविदास मंदिर को तोड़ने के बारे में, मैं ये जिम्मेवारी के साथ कह रहा हूं, वो मेरी गांव की जमीन पर मंदिर बना हुआ था। इस हाउस के ऑनरेबल मेम्बर्स को ये जानकारी होनी चाहिए कि वो ग्राम सभा की जमीन पर मंदिर था, उस जमीन को कांग्रेस के शासन में फॉरेस्ट की लैंड घोषित की गई। आप प्रस्ताव कर सकते थे, आपकी सरकार प्रस्ताव कर सकती थी। क्या आपने कोई प्रस्ताव किया?

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः अरे सुन लो भैया, सुन तो लो।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः सुन लीजिए। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया,

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः पंडित जी आप बैठिए, पंडित जी आप सुनिए। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया,

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सोमनाथ जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः सुप्रीम कोर्ट में जो संत रविदास मंदिर कमेटी थी, केस हार गई और जो भी कार्रवाई हुई सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर हुई और उसके बाद देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने बड़ा दिल दिखाया, सुप्रीम कोर्ट ने क्या आदेश दिया, क्या नहीं दिया, अब उसकी मैं विस्तार से चर्चा नहीं करना चाहता हूं, ये फैसला भी जब केंद्र में भाजपा की सरकार नहीं थी, एनडीए की सरकार नहीं थी, उससे पहले का है और देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने मंदिर कमेटी के पदाधिकारियों के साथ बैठकर मंदिर के निर्माण के लिए जितनी जमीन वो चाहते थे, कानून में परिवर्तन करके संत रविदास का मंदिर, भव्य मंदिर तुगलकाबाद में बनाया जाएगा, उसके लिए जमीन दे दी है और जितनी धन की आवश्यकता होगी, वह व्यवस्था भी की जाएगी। ये है हमारी संत रविदास जी के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि। आदरणीय उपाध्यक्ष महोदया,

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः एक मिनट। मैं इसके बाद, मैं, मैं इनके बाद आपको मौका जरूर दूंगी लेकिन एक बार ये हो जाने दीजिए।

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः पहले इनके अधिकारी, जो डीडीए, सरकार इनके आधीन आती है,वो अधिकारी जाकर कोर्ट में पीछे लगकर मंदिर तुड़वाते हैं और फिर ये वहां खड़े होकर बोलते हैं कि हम मंदिर को बनवा देंगे।

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः ये गुरू जी का मंदिर तोड़ने वाले ये बने हैं क्या? ये अब इतने बड़े हो गए...

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः ये जमीन देंगे! इनके, नेता- विपक्ष के बोलने का तरीका देखिए आप, ये कह रहे हैं गुरू जी के मंदिर के लिए जमीन दे दी हमने। ये तरीका है बोलने का?

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः ये, ये गुरू जी के मंदिर के लिए जमीन देंगे ये?

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः ये कह रहे हैं कि प्रधानमंत्री जी ने...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः एक बार बैठिए आप सब लोग।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप लोग बैठिए।

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः मैडम सुनिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः पहले बैठिए विशेष रवि जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः विशेष रवि जी, पहले आप बैठिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः पहले आप बैठिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः पहले आप बैठिए।

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः ये कह रहे हैं कि प्रधानमंत्री जी ने गुरू जी के मंदिर को जमीन दे दी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः आप एक बार...

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः दी है। हां, दी है। दी है। दी है। दी है।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः यही हमारा दिल है। ये हमारी आस्था है।

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः उसके बाद यहां पर हीरो बनने आए हैं।

...व्यवधान...

श्री विशेष रविः जब डीडीए के अधिकारी, जब डीडीए के अधिकारी मंदिर तोड़ने के लिए कोर्ट में अर्जी लगा रहे थे, तब ये क्या कर रहे थे? क्यों नहीं उनको रोका इन्होंने?

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः ढाई बजे सदन की कार्यवाही दुबारा शुरू करेंगे, लंच के बाद।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः लंच के बाद सदन की कार्यवाही ढाई बजे।

(सदन की कार्यवाही अपराह्न 2.30 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)

सदन अपराह्न 2.54 बजे पुनः समवेत हुआ ।

माननीया उपयाधयक्ष (श्रीमती राखी बिरला) पीठासीन हुई ।

श्री अजय दत्तः अध्यक्षा जी, मुझे कुछ...

माननीया अध्यक्षः बैठिए दो मिनट। अजय दत्त जी, दो मिनट बैठिए।

श्री अजय दत्तः एक मैं बहुत...

माननीया अध्यक्षः दो मिनट बैठिए।

माननीया अध्यक्षः जब तक आप बैठेंगे नहीं आपकी बात को नहीं सुना जाएगा।

श्री अजय दत्तः ये गुरू रविदास जी..

माननीया अध्यक्षः दो मिनट बैठिए। मैं आपको एक...

...व्यवधान...

श्री अजय दत्तः इन लोगों ने मंदिर तोड़ा। लाखों-करोड़ों लोगों की आस्थाओं को इन्होंने ठेस पहुंचाई और उसके बाद इन लोगों ने...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बिधूड़ी जी,

श्री अजय दत्तः जो बहुत शांतिपूर्ण तरीके से...

माननीया अध्यक्षः अजय दत्त जी,

श्री अजय दत्तः गुरू रविदास मंदिर के लिए जो लोग संघर्ष कर रहे थे, मांग कर रहे थे, उनको इन्होंने पीटा।...

माननीया अध्यक्षः अजय दत्त जी, दो मिनट बैठिए।

श्री अजय दत्तः उन्होंने...

माननीया अध्यक्षः दो मिनट बैठिए तो।

श्री अजय दत्तः इन लोगों ने, बीजेपी वालों ने पीटा।...

माननीया अध्यक्ष: आप दो मिनट बैठिए।

श्री अजय दत्त: एक मिनट।

माननीया अध्यक्ष: आप दो मिनट...

...व्यवधान...

श्री अजय दत्त: एक मिनट और है।...

माननीया अध्यक्ष: दो मिनट बैठ जाए। आपकी बात का कोई मतलब नहीं रहा अगर मैं यहां से बोल रही हूं लगातार। धन्यवाद। अब माननीय मनीष सिसोदिया जी, उप-मुख्यमंत्री कार्यसूची में दर्शाए गए प्रश्न, दर्शाए गए अपने विभाग से संबंधित दस्तावेजों की प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करेंगे।

माननीय उप-मुख्यमंत्री (श्री मनीष सिसोदिया): अध्यक्ष महोदया, मैं...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: दो मिनट बैठेंगे। दो मिनट बैठ जाइये।

माननीय उप-मुख्यमंत्री: अध्यक्ष महोदया, मैं आपकी अनुमति से कार्यसूची के बिंदु क्रमांक 2 में दर्शाए गए दस्तावेजों की हिंदी और अंग्रेजी प्रतियां सदन पटल पर प्रस्तुत करता हूं:

1. 31 मार्च, 2018 को समाप्त हुए वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का, 'सामाजिक, सामान्य एवं आर्थिक क्षेत्रों (गैर-सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों)' पर लेखा-परीक्षा प्रतिवेदन (वर्ष 2020 का प्रतिवेदन संख्या 01)[1]

2. 31 मार्च, 2019 को समाप्त हुए वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का 'राज्य वित्त लेखा-परीक्षा प्रतिवदेन' (वर्ष 2020 का लेखा-परीक्षा प्रतिवदेन संख्या 02)[2]

3. वर्ष 2018-19 हेतु राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के वित्त लेखे[3]

4. वर्ष 2018-19 हेतु राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के विनियोग लेखे[4]

5. 31 मार्च, 2019 को समाप्त हुए वर्ष के लिए 'राजस्व, आर्थिक, सामाजिक एवं सामान्य क्षेत्रों तथा सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों' पर लेखा परीक्षा प्रतिवेदन (वर्ष 2021 का प्रतिवेदन संख्या 01)[5]

6. वर्ष 2019-20 हेतु राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के वित्त लेखे[6]

7. वर्ष 2019-20 हेतु राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के विनियोग लेखे[7]

---

1 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23060 पर उपलब्ध।

2 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23061 पर उपलब्ध।

3 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23062 पर उपलब्ध।

4 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23063 पर उपलब्ध।

5 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23064 पर उपलब्ध।

6 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23065 पर उपलब्ध।

8. 31 मार्च, 2020 को समाप्त हुए वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का 'राज्य वित्त लेखा-परीक्षा प्रतिवदेन' (वर्ष 2021 का लेखा-परीक्षा प्रतिवदेन संख्या 02)[8]

9. वर्ष 2020-21 हेतु राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के वित्त लेखे[9]

10. वर्ष 2020-21 को समाप्त हुए वर्ष के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के विनियोग लेखे[10]

माननीया अध्यक्षः प्रतिवेदन पर सहमति। प्रलाद सिंह साहनी जी। जरनैल सिंह जी। हां जी, अजय दत्त जी।

श्री अजय दत्तः अध्यक्षा जी, धन्यवाद आपने मुझे...

माननीया अध्यक्षः दो मिनट में अपनी बात पूरी कीजिएगा।

श्री अजय दत्तः आपने मुझे बीजेपी की एक बहुत बड़ी झूठ को उजागर करने का मौाक दिया। ये लोग धर्म का अपने आपको भगवान मानते हैं या सरगना मानते हैं लेकिन इनसे एक बात पूछी जाए, जब 2019 में इन्होंने गुरू रविदास जी का मंदिर तोड़ा और उस मंदिर को तोड़ने के लिए हजारों फोर्स लगाई। जब दलित समाज के लोगों ने, उस मंदिर को बचाने के लिए वहां पर

---

7 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23066 पर उपलब्ध।

8 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23067 पर उपलब्ध।

9 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23068 पर उपलब्ध।

10 दिल्ली विधान सभा पुस्तकालय में संदर्भ संख्या आर-23069 पर उपलब्ध।

गए हजारों लोग, इन्होंने डंडों से पीटा, किसी के सर फाड़ दिए। उसके बाद एक बहुत बड़ा आंदोलन हुआ। इस देश का सबसे बड़ा धार्मिक आंदोलन हुआ, इस दिल्ली के अंदर, पूरी दिल्ली जाम हो गई, पंजाब से हजारों लोग आए, लाखों लोग यूपी से आए, बहुत सारे धार्मिक गुरू, दलित समाज के गुरू रविदास भगवान को मानने वाले, वाल्मीकि भगवान को मानने वाले, पूरा दलित समाज जब आया, उस समय एक बहुत बड़ा आंदोलन हुआ और उस दिन भी इन लोगों ने बर्बरता से हजारों-लाखों लोगों को पीटा, इनकी पुलिस ने पीटा और केंद्र के कहने पर पीटा और कई हजार लोगों को जेल में बंद कर दिया। और इसी विधान सभा से, इस देश के एक सबसे, सबसे प्रिय और दिल्ली के प्रिय मुख्यमंत्री माननीय अरविंद केजरीवाल जी ने इसी विधान सभा से एक बहुत बड़ा निर्णय पास कराया कि तुम अगर, क्योंकि डीडीए की जमीन है वो, अगर तुम वो जमीन 10, जो भी जमीन मंदिर को बनाने के लिए तुम दोगे तो 10 एकड जमीन दिल्ली सरकार देगी और जितना पैसा लगेगा उस मंदिर को बनाने के लिए, माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी ने यहां से एलान किया था। तो ये झूठ का पुलिंदा क्यों लेकर आ रहे हैं?...

माननीया अध्यक्षः चलिए बस।

श्री अजय दत्तः आप मंदिर तुड़वाए जा रहे हैं और दलितों की आस्था से आप पूरी तरीके से खिलवाड़ कर रहे हैं। आपको, आपकी औकात नहीं है कि आप किसी मंदिर के लिए जगह दे दें। ये जगह पुरखों के समय से है, ये जगह लोदी के समय से है, ये जगह तब से है। जब मंदिर तोड़ने की बात आई उसके बाद इनको पता चला कि ये डीडीए की जगह है। और ऐसे ही

दिल्ली में ये कई मंदिर, करीबन 50 मंदिर इन्होंने टारगेट किए हुए हैं जिन्हें तोड़ने जा रहे हैं।...

माननीया अध्यक्षः चलिए अजय दत्त जी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय दत्तः तो मैं एक बात लास्ट में कहना चाहूंगा कि...

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद अजय दत्त जी।

श्री अजय दत्तः ये मंदिर को तोड़ने की राजनीति न करें। जैसे आप अपने आपको हिंदू और भगवा पहनकर अपने आपको...

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय दत्तः हिंदू का सबसे बड़ा हितैषी जताते हैं, ऐसा न करें। ये सब झूठ है और इस झूठ को हम इस सदन में सुनने के लिए बिल्कुल, कतई तैयार नहीं है। और गुरू रविदास जी की जो जमीन है, वो किसी की बपौती नहीं है, ये जमीन गुरू रविदास की थी, है और रहेगी।..

माननीया अध्यक्षः चलिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय दत्तः जय गुरू रविदास।

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत, बहुत-बहुत धन्यवाद। अल्पकालिक चर्चा में मुझे श्री राजेश गुप्ता जी द्वारा सेवा विभाग की असंवैधानिक कार्य-प्रणाली से उत्पन्न स्थिति, जो विधान सभा तथा इसकी समितियों को उत्तर न देने से भी मना करते हैं, ये विषय प्राप्त हुआ। समय की कमी के कारण इस विषय को मैं चर्चा हेतु सदन में नहीं ला सकती लेकिन इस पर मुझे कुछ कहना है। राजेश

गुप्ता जी ने जो ये मुद्दा उठाया है, ये बहुत ही महत्वपूर्ण और गम्भीर है। सर्विसेज डिपार्टमेंट यानी कि कर्मचारियों की ट्रांस्फर-पोस्टिंग-नियुक्ति आदि का मसला संविधान के तहत दिल्ली की चुनी हुई सरकार के अधीन आता है। सर्विसेज डिपार्टमेंट अन्य विभागों की तरह इस विधान सभा के प्रति जवाबदेह है। ये विधान सभा दिल्ली के तमाम सरकारी कर्मचारियों का वेतन, बजट पास करती है। इस विधान सभा के एक-एक सदस्य के पास ये अधिकार है कि वह जान सकें कि यहां से दिए गए बजट से कितने लोगों का वेतन मिल रहा है, वो क्या-क्या काम कर रहे हैं, कितने पद हैं, कितने खाली पड़े हैं, आदि-आदि। सर्विसेज डिपार्टमेंट के केंद्र सरकार ने एक आदेश जारी कर असंवैधानिक तरीके से अपने अधीन ले रखा है और इसका मसला भी माननीय सुप्रीम कोर्ट में लम्बित है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि आज दिल्ली की विधान सभा ये भी नहीं पूछ सकती कि दिल्ली सरकार के किस विभाग में कितने कर्मचारी हैं और कितने पद खाली हैं। जब भी कोई विधायक इस तरह के सवाल पूछता है तो सर्विसेज डिपार्टमेंट ये लिखकर देता है कि 0.06.21 I am directed to inform that the services is a reserved subject in terms of MHA notification dated 21.05.2015. In view of the forgoing position of this Department cannot provide reply to the above mentioned Assembly question मैं दिल्ली विधान सभा की अध्यक्ष के रूप में सर्विसेज डिपार्टमेंट के इस रूख को संविधान के खिलाफ उठाया गया कदम मानती हूं। इस सदन की जानकारी के लिए मैं पिछले 4 साल के दौरान इसी सदन के माननीय विधायक सदस्यों द्वारा सर्विसेज डिपार्टमेंट से पूछे गये कुछ प्रश्नों का यहां जिक्र जरूर करना चाहती हूं।

उदाहरण के लिये सुखबीर दलाल जी ने 2018 में प्रश्न पूछा था, कि दिल्ली सरकार में ग्रेड-4 के तहत कितने पद खाली पड़े हैं और इन्हें भरने के लिए क्या प्रयास किये जा रहे हैं। सर्विसेज डिपार्टमेंट ने इस सवाल का जवाब भी अपने रटे-रटाये ढंग में I am directed to inform that services is a reserved subject in terms of MHA notification dated 21.05.2015. In view of the forgoing position that this Department cannot provide reply to the above mentioned Assembly question

इसी तरह 2018 में जगदीश प्रधान जी ने पूछा था, कि दिल्ली सरकार ने स्टेनो कैडर की रिस्ट्रक्चरिंग कमेटी की क्या सिफारिशें की हैं और दास और स्टेनो कैडर की कंट्रोलिंग अथॉरिटी कौन है। इस सवाल पर भी बिल्कुल रटा-रटाया जवाब विभाग की ओर से दिया गया।

2018 में ही माननीय विधायक कर्नल देवेन्द्र सेहरावत जी ने प्रश्न पूछा था, कि डीएम, कापसहेड़ा में दो साल में कितने अधिकारियों को एसडीएम का कार्यभार सौंपा गया। सर्विस डिपार्टमेंट ने फिर से यही लिखकर दे दिया I am directed to inform that services is a reserved subject in terms of MHA notification dated 21.05.2015. In view of the forgoing position this Department cannot provide reply to the above mentioned Assembly question

ये कैसे हो सकता है कि एक विधायक अगर विधानसभा में यह प्रश्न पूछे कि मेरे क्षेत्र में दो साल में कौन-कौन व्यक्ति एसडीएम रहे और सर्विसेज डिपार्टमेंट उसको ये लिखकर दे दे कि विधायक को यह प्रश्न उठाने का कोई

अधिकार नहीं है, यह संविधान में कहां लिखा है। मैं समझती हूं यह संवैधानिक व्यवस्थाओं का अपमान है। चुने हुये विधायक और इस विधान सभा का अपमान है।

इसी तरह सुखबीर दलाल् जी ने 2019 में विभिन्न विभागों द्वारा सर्विसेज डिपार्टमेंट को भेजे गये रिक्त पदों की जानकारी मांगी थी और पूछा था कि किनके बारे में अभी तक विज्ञापन क्यों नहीं दिया गया, सर्विसेज डिपार्टमेंट कब तक विज्ञापन दे रहा है। इसके बारे में भी सर्विसेज डिपार्टमेंट ने अपना रटा-रटाया जवाब दोहराया।

इस तरह 2019 में पंकज पुज़्कर जी ने जानकारी मांगी, कि 31 जुलाई, 2019 तक सेवा विभाग को विभिन्न विभागों से रिक्तियां भरने के कितने अनुरोध प्राप्त हुए, इनकी वर्तमान प्रगति क्या है।इस पर भी सर्विसेज डिपार्टमेंट ने कह दिया, इसका जवाब नहीं दिया जा सकता क्योंकि यह रिजर्व सब्जेक्ट है।

सोमनाथ भारती जी ने 2021 में पूछा, दिल्ली सरकार के विभिन्न विभागों में रिक्तियों का विवरण क्या है, विभागों की आवश्यकताओं का मूल्यांकन के लिये उठाये गये कदम क्या हैं। इस पर भी सर्विसेज डिपार्टमेंट ने लिखकर दे दिया कि इसका जवाब नहीं दिया जा सकता क्योंकि यह एक रिजर्व सब्जेक्ट है।

श्री राजेश जी ने 2021 में पूछा, दिल्ली सरकार के अंतर्गत कितने विभाग आते हैं, प्रशासनिक अधिकारियों की सूची सहित विवरण दें और

माननीया अध्यक्षः दिल्ली सरकार के अंतर्गत आने वाले विभागों के कर्मचारियों का विभाग वार विवरण पिछले तीन सालों की वार्षिक आय एवं खर्च का विवरण दें। इस बारे में भी सर्विसिज डिपार्टमेंट ने लिखकर दे दिया कि इसका जवाब नहीं दिया जा सकता क्योंकि यह मामला केन्द्र सरकार के अधीन आता है। श्री अनिल बाजपेयी जी ने भी 2021 में पूछा कि सरकार के अंतर्गत किन किन विभागों में पिछले छह वर्षों से पद खाली पड़े हैं और उन पदों को भरने के लिए सरकार ने क्या कदम उठाए इस बारे में भी सर्विसिज डिपार्टमेंट ने लिखकर दे दिया कि इसका जवाब नहीं दिया जा सकता। क्योंकि यह मामला केन्द्र सरकार के अधीन आता है। इसी तरह श्रीमती प्रमिला धीरज टोकस जी ने 2021 में पूछा कि दिल्ली सरकार के प्रत्येक विभाग में स्वीकृत पदों की कितनी रिक्तियां हैं। यह पद कब स्वीकृत किए गए एवं कब से रिक्त पड़े हैं। सरकार ने इन रिक्त पदों को भरने हेतु क्या-क्या कदम उठाए। इस बारे में भी सर्विसिज डिपार्टमेंट ने लिखकर दे दिया कि इसका जवाब नहीं दिया जा सकता क्योंकि यह मामला केन्द्र सरकार के अधीन आता है। इसी तरह विजेन्द्र गुप्ता जी ने भी 2021 में पूछा इस समय दिल्ली सरकार के विभिन्न विभागों में प्रधान निजी सचिव तथा निजी सचिव के कुल कितने पद रिक्त हैं। यदि रिक्त पड़े प्रधान सचिव पदों को निजी सचिव को पदोन्नत करने पर भर दिया जाए तो दिल्ली सरकार के अंतर्गत निजी सचिव के कुल कितने पद रिक्त हो जाएंगे और इस पर भी सर्विसिज विभाग से रटा-रटाया जवाब दिया गया जोकि बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। मैं आज सदन के समक्ष एक कमेटी का निर्माण करती हूं जो कमेटी अगले अड़तालिस घंटों में पूरी जांच पड़ताल और विचार करकर सदन पटल पर ये रिपोर्ट रखे कि सर्विसिज डिपार्टमेंट की और से विधायकों को जवाब

क्यूं नहीं दिए जा रहे? क्या अब से पहले भी इस तरह की कार्यशैली चुनी हुई सरकार, चुनी हुई विधानसभा, चुने हुए विधायकों के प्रति सर्विसिज डिपार्टमेंट की रही है या कोई और मंशा या लक्ष्य उस डिपार्टमेंट का रहा है तो इस कमेटी में मैं नोमिनेट करना चाहूंगी राजेश गुप्ता जी जो कि वजीरपुर से विधायक हैं। सुश्री आतिशी जी जो विधायक हैं। श्रीमती आतिशी जी या कुमारी आतिशी जी और सोमनाथ भारती जी। आप तीनों सदस्यों से मेरा निवेदन है कि सर्विसिज डिपार्टमेंट कि इस प्रकार से विधानसभा और चुने हुए विधायकों के सवालों की अनदेखी करना बेहद दुर्भाग्य है और ये कैसे मान लिया जाए कि किसी भी विभाग में कितने कर्मचारी हैं या कितने पद खाली पड़े हैं। ये पद भरने के लिए सर्विसिज डिपार्टमेंट क्या कर रहा है। मैं सर्विसिज डिपार्टमेंट के इस तरह के जवाब को सदन के अपमान के रूप में देखती हूं। मैं राजेश गुप्ता जी द्वारा दिए गए चर्चा के प्रस्ताव पर आज समय नहीं दे पा रही लेकिन इस मुददे की गंभीरता को देखते हुए राजेश गुप्ता जी समेत अन्य दो विधायकों की एक समिति बना रही हूं जो अड़तालिस घंटे में इस पूरे मामले की रिपोर्ट बनाकर देंगे। अपनी रिपोर्ट में वो इस बात की भी पड़ताल करेंगे कि सदन के सदस्यों द्वारा सर्विसिज डिपार्टमेंट में किस किस सवालों के जवाब को सर्विसिज डिपार्टमेंट ने क्या-क्या जवाब दिए हैं या क्या जवाब देकर उन सवालों से किनारा किया है। यह समिति मुझे पूरे 48 घंटे के अंदर रिपोर्ट यानि बृहस्पति-वार शाम तक जो है प्रस्तुत करेगी। इसके बाद चेयर इस मामले पर उचित कार्यवाही करेगी। बहुत बहुत धन्यवाद। अगर इस पर कुछ किसी को कहना है तो वो कह सकता है, चूंकि मुझे लगता है कि सभी विधायकों का अधिकार है कि वो अपने क्षेत्र से संबंधित, सरकार से संबंधित और दिल्ली के विकास से संबंधित कोई

भी सवाल सर्विसिज डिपार्टमेंट से पूछने के लिए सक्षम है और उनकी जिम्मेदारी भी बनती है। अब आज अल्पकालिक चर्चा में जो दूसरा विषय मुझे प्राप्त हुआ है। श्री सौरभ भारद्वाज जी द्वारा दिल्ली नगर निगम में बुरी तरह हार के डर से दिल्ली नगर निगम के चुनावों में असंवैधानिक एवं अलोकतांत्रिक ढंग से देरी करने की साजिश तो मैं सदस्य सौरभ भारद्वाज जी को कहना चाहती हूं कि आप चर्चा को प्रारंभ करें।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिए दो मिनट। हो गया वो लंच से पहले का मामला था। लंच से पहले का मामला था। बैठ जाइए। आप इस विषय पर बात करिएगा। सौरभ भारद्वाज जी।

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः लंच से पहले का था हो गया वो। आप दो शब्द में बोल दीजिए या तो। निंदा के साथ हैं या निंदा के खिलाफ हैं। या तो मंदिर तोड़ने के साथ हैं या मंदिर तोड़ने के विरोध में हैं। इसको खत्म करें। सौरभ भारद्वाज जी।

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः वो सब मैं बोला हूं। सोमनाथ मंदिर का...

माननीया अध्यक्षः दिल्ली के विषय पर बात करें।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः और मैं इस हाउस में पूछना चाहता हूं डिप्टी चीफ मिनिस्टर से चांदनी चौक में हनुमान मंदिर दिल्ली सरकार के आदेश से तोड़ा गया है, दिल्ली सरकार के आदेश से, जवाब दो उसका। जवाब दो उसका। जवाब दो। आप लोगों ने तुड़वाया है। जवाब दो...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः जवाब दो, जवाब दो...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः चांदनी चौक में हनुमान मंदिर दिल्ली सरकार के आदेश से तोड़ा गया है। ये दिल्ली सरकार अरविंद केजरीवाल माफी मागें।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी,

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः हनुमान मंदिर तोड़ा गया।

...व्यवधान...

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ीः विश्व हिंदू परिज़द ने वहां मंदिर बनवाया।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी चर्चा प्रारंभ करें। चर्चा प्रारंभ करें।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः राजेश गुप्ता जी, अजय दत्त जी बैठें। राजेश गुप्ता, अजय दत्त जी,

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अजय दत्त जी बैठिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अजय दत्त जी,

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अजय दत्त जी,

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सौरभ भारद्वाज जी चर्चा प्रारंभ करें।

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाजः अध्यक्षा महोदय, आपका बहुत बहुत धन्यवाद कि आपने इस चर्चा में शुरूआत करने के लिए मुझे आज एक मौका दिया। अध्यक्षा महोदया, 2022 में मार्च में सारी दिल्ली को इंतजार था कि मार्च में भारतीय

जनता पार्टी के द्वारा तीन म्युनिसिपल कोरपोरेशन में जो इनकी सरकार चलाई जा रही है उसके क्या हालात थे, उसकी क्या परफोरमेंस थी। पार्षद क्या कर रहे थे, इनका नगर निगम क्या करता है वो सबको मालूम था दिल्ली में किसी आदमी से छिपा नहीं है कि दिल्ली नगर निगम जो है वो क्या करता है। दिल्ली वाले Municipal Corporation of Delhi एमसीडी को उवेज corrupt department ये कह के अक्सर जो है दिल्ली वाले एमसीडी को बुलाते हैं। ये बात मेरे भाजपा के मित्र भी जानते हैं और जब चुनाव होने वाले थे और दस मार्च को State Election Commission ये बात announce करने के लिए press conference का टाईम भी announce कर चुका था कि अब इलैक्शन का शैडयूल जो है Election Commission देगा। उस press conference से चंद घंटे पहले केन्द्र सरकार की तरफ से State Election Commission को एक informal message जाता है कि आप ये press conference ना करें। State Election Commissioner वापिस जवाब देते हैं अगर इसके अंदर आपके पास कोई आर्डर है तो आप आर्डर दें और Central Govt. लिखित आदेश देकर State Election Commission को कहता है कि आप फिलहाल Municipal Corporation के चुनावों को टाल दें और इसका हवाला दिया गया क्योंकि एमसीडी के अंदर restructuring की जरूरत है इसलिए Municipal Corporation के चुनाव टाल दें। अध्यक्षा महोदया, एमसीडी देखा जाए तो कोई बहुत बड़ा कोरपोरेशन नहीं है मगर भारतीय जनता पार्टी एमसीडी को ले के इतनी sensitive क्यों है इसके लिए इतिहास में जाने की जरूरत है। दिल्ली के अंदर जब तक विधानसभा नहीं बनी थी तो यहां पे Chief Counsellor हुआ करते थे उसके अंदर मदनलाल खुराना जी, विजय कुमार मल्होत्रा जी इस तरीके के इनके जो बीजेपी के

अमजमतंदे थे वो हमेशा Municipal Corporation के अंदर रहे हैं। उसके बाद इनकी एक बार दिल्ली के अंदर सरकार बनी है 93 से लेकर 98 तक उसके अंदर इनके तीन मुख्यमंत्री रहे। मदनलाल खुराना जी रहे, साहिब सिंह वर्मा रहे, सुषमा स्वराज जी रहीं और फिर इनकी सरकार प्याज के मुद्दे पर एक बार गई तो मुझे लग रहा है 98 से लेकर बीसियों साल हो गए। पच्चीस साल हो गए ये बिचारे वहीं बैठे हुए हैं, इनको मौका नहीं मिला इधर आने का और ये बात भारतीय जनता पार्टी भी जानती है। भारतीय जनता पार्टी का जिस तरीके का दिल्ली के अंदर structure है इनका शीर्ष नेतृत्व जानता है कि ये सिर्फ Municipal Corporation रह सकते हैं।

ये विधान सभा में नहीं आ सकते हैं चूंकि ये बात ये जानते हैं और अगर इस बार ये म्युनिसपल कॉरपोरेशन से साफ हो गये तो भारतीय जनता पार्टी हमेशा के लिए पूरी दिल्ली से साफ हो जाएगी, ये बात ये जानते हैं क्योंकि ये लोग ज्यादा रिसर्च करते हैं। ये बूथों पर काम करते हैं। सुबह शाखा करते हैं। बहुत कुछ मतलब इनका रिसर्च है इसके अंदर इसमें कोई कमी नहीं हैं।

अजय जी बैठे हैं। अजय महावर जी, इन्होंने बड़ी मेहनत की राजेन्द्र नगर में, हमें मिलते थे कई बार हम लोग मिलते थे बुद्ध नगर में, गर्मी में। तो ये बेचारे स्कूटी पर होते थे। मैं कई बार पैदल होता था कई बार ये पैदल होते थे मैं कार में होता था। ये भी पसीने-पसीने, मैं भी पसीने में, इनकी मेहनत में कमी नहीं है। इन्होंने बहुत मेहनत की। मगर अब भारतीय जनता पार्टी को दिल्ली का वोटर वोट नहीं देना चाहते, ये समस्या है और इस वजह से अजय महावर जी इतनी मेहनत के बाद भी अपने कंडिडेट को जो है जीता नहीं पाए, अच्छे मार्जिन से जो है, ये हारे। जमानत बची वो भी मैं बताऊं भारतीय जनता

पार्टी की वैसे नहीं बची, अजय महावर जी की वजह से बची। ये बेचारे मेहनत कर रहे थे, इसलिए बची। इसके अंदर जो है, जो बात है वो है, बड़े भाई हैं, इन्होंने मेहनत पूरी की।

अब भारतीय जनता पार्टी यह समझती है तो अध्यक्षा महोदया, हमारे दिल्ली के बहुत सारे विधायक साथी और दिल्ली वाले ये बात नहीं जानते कि जिस एक्सक्यूज के ऊपर भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली के अंदर चुनाव टाले हैं, ये कोई पहली बार नहीं हो रहा है देश के अंदर। ये कई दशकों से एक्सपर्ट हैं। भारतीय जनता पार्टी एक्सपर्ट हैं कई दशकों से नगर निगम के पंचायतों के चुनाव टालने में इनकी एक्सपर्टिज हैं और उसकी लैबोरेटरी भी गुजरात में है। गुजरात में भी मोदी जी नहीं कराते थे। वहां भी जब जब नगर निगम के इलेक्शन आते थे सिविक बॉडीज के इलेक्शन आते थे। कोई न कोई ऐसा पेंच लाकर इलेक्शन को टाल देते थे तो मैं उसी वक्त का आपको एक सुप्रीम कोर्ट का फैसला सुना रहा हूं।

अध्यक्षा महोदया, Krishan Singh Tomar V/ks Municipal Corporation of Ahmedabad 2006 तब मोदी जी थे वहां पर। 2006 में अहमदाबाद के इलेक्शन, मोदी जी ने यही कहकर टाले थे कि हम अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉरपोरेशन की रिस्ट्रक्चरिंग कर रहे हैं। सेम जैसे दिल्ली में कर रहे हैं और इन्होंने सोचा कि जब तक रिस्ट्रक्चरिंग नहीं होगी तब तक चुनाव टालते रहेंगे, सर्वे कराते रहेंगे। जब सर्वे में बीजेपी थोड़ा ऊपर आएगी तब चुनाव कराएंगे, ये इनका मॉडल था और 2006 में सुप्रीम कोर्ट ने ये बात कही कि आप किसी रिस्ट्रक्चरिंग के बहानेवाजी करके लोकल सिविक बॉडीज के इलेक्शन नहीं टाल सकते। मगर इन्होंने तब सीख नहीं ली।

उसके बाद इन्होंने मधय प्रदेश के अंदर अध्यक्षा महोदया ढ़ाई साल से चुनावों को रोक रखा था और सुप्रीम कोर्ट ने इसके अंदर कहा मैं आपको सुप्रीम कोर्ट का कोट करके बताऊंगा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा 2019-20 के अंदर 321 अर्बन लोकल बॉडीज के इलेक्शन होने थे और 23073, तेईस हजार तेहतर रूरल लोकल बॉडीज के इलेक्शन होने थे, इन्होंने ढ़ाई साल तक वो इलेक्शन रूकवाये रखे मधय प्रदेश के अंदर, ये सोचकर कि जब इनकी सरकार होगी, जब इनकी जो वाहवाही थोड़ी बढ़ेगी किसी तरह से सर्वे में ऊपर आएंगे, माहोल ठीक होगा तब ये जो है इलेक्शन कराएंगे और उस विषय में अभी अभी ताजा-ताजा सुप्रीम कोर्ट का एक फैसला आया अध्यक्षा महोदया, जोकि दिल्ली के ऊपर बिल्कुल ठीक बैठता है और उसके अंदर सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा। उसकी शुरूआत जो है अध्यक्षा महोदया इस तरह से हुई, ये फैसला जो है अभी 2022 का है। Civil writ petition 278 of 2022 उसके अंदर this writ petition assails the validity of section 10(1) of Madhya Pradesh Municiapl Act 1956 और कुछ सेक्शन्स है दूसरे एक्ट के तो जैसे इन्होंने दिल्ली के एक्ट के अंदर और दिल्ली के म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के एक्ट के अंदर बदलाव करें पार्लियामेंट में, उसी तरीके से इन्होंने मधय प्रदेश के म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के एक्ट के अंदर बदलाव किये और रिस्ट्रक्चरिंग का बहाना लेकर और सेम वही बहाना जो दिल्ली के अंदर इन्होंने लिया कि हम दोबारा से डीलिमिटेशन कर रहे हैं उसका बहाना लेकर इन्होंने वहां के चुनाव रोके और वहां के चुनावों के लिए सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा the charge handed over to the Court by the learned counsel for Madhya Pradesh State Election Commission indicates that there are about 321 urban local bodies where election

had not been held from 2019-20 furthermore the local bodies at the grassroots level that is the rural local bodies where election have to be held they have not been held in around 23073 bodies as of now. This court has made amply clear that the conduct of the election to install the newly elected body in the concerned local body self govt. cannot roof delay owing to the constitutional mandate in Article 243 (E) 243 (U) including the provisions in the concerned State Legislation in this regard. इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने वही केस, जिसके अंदर मोदी जी हारे थे। Krishan Singh Tomar V/ks Municiapl Corporation of City of Ahmedabaddk उदाहरण भी दिया कि आपको हमने तब भी ये चेतावनी दी थी। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट कहता है **''जहां पर म्युनिसिपल कॉरपोरेशन को भंग भी किया जाता है और भंग करके एडमिनिस्ट्रेटर लगाया जाता है जैसे यहां पर किया गया है, ऐसी सूरत में भी आप छः महीने से ज्यादा इलेक्शन नहीं टाल सकते।''** उसमें लिखते हैं "even in the case of dissolution before the expiry of five years of period wherein Administrator is required to the appointed by the State that regime cannot be continued beyond six months by virtue of relevant provisions in the respective state legislation" उसके आगे कहता है सुप्रीम कोर्ट "this constitutional mandated is invioable, neither the State Election Commission nor the State Govt. and for that matter the State Legislature including this court in exercise of the powers under Article 142 of the Constitution of India cannot countenance dispensation to the contrary."

कहने का मतलब ये है, कोर्ट ने ये कह दिया न तो स्टेट कर सकता है, न इलेक्शन कमिशन कर सकता। यहां तक कि ये खुद कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट भी ऐसा नहीं कर सकता कि हम किसी बहाने से लोकल बॉडीज के इलेक्शन को हम डिले कर दें। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने मधय प्रदेश का उदाहरण दिया। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने और कई राज्यों का उदाहरण दिया और सुप्रीम कोर्ट ने ये बात कही कि स्टेट के अंदर ये जो वॉर्ड्स की डीलिमिटेशन की एक्सरसाइज है। इसकी कोई लिमिट नहीं है, इसकी कोई टाईम लिमिट नहीं हैं। ये डीलिमिटेशन एक्सरसाइज तो आप कई साल तक करते रहेंगे। सुप्रीम कोर्ट ने दूसरा एग्जाम्पल दिया कुछ स्टेट्स के अंदर ओबीसी रिजर्वेशन के नाम पर कि हम ओबीसीज का जो है, वो करा रहे हैं, सेंसस करा रहे हैं और पोपुलेशन करा रहे हैं, उसके बाद हम उसके हिसाब से उनकी जो है रिजर्वेशन की कैटेग्रीस हम देखेंगे, उसको हम प्वाइंट आउट करेंगे। सुप्रीम कोर्ट ने ये भी कहा कि आप रिजर्वेशन के बहाने भी ओबीसीज के रिजर्वेशन के बहाने भी स्टेट के अंदर किसी भी लोकल बॉडी के इलेक्शन को नहीं रोक सकते। अब मैं एक बात कहकर अध्यक्षा महोदया अपनी बात खत्म करूंगा क्योंकि मुझे पता है कि मेरे काबिल मित्र रामवीर बिधूड़ी जी इसके अंदर जरूर कुछ न कुछ जो है, पेंच निकालेंगे ताकि वो कहें और उसके बाद मेरे को कहने का मौका नहीं मिलेगा, इसलिए मैं बता दूं। इसके अंदर अंतिम पैराग्राफ जब आता है। पैराग्राफ नंबर 31 के अंदर कोर्ट ये कहता है "we also make it clear that this order and directions given are not limited to the state of Madhya Pradesh or MP State Election Commission and Maharashtra State Election Commission or State of Maharashtra in terms of similar order passed by this Court on so and

son but to all the States and Union Territories and the respective election Commissions should abide by the same without fail to uphold the constitutional mandate" इसका कहने का मतलब ये है, सुप्रीम कोर्ट ने जो फैसला दिया, इसके अंदर सुप्रीम कोर्ट ने बिल्कुल क्लीयर कर दिया कि आप किसी बहानेबाजी से एक्ट में संशोधन करके डीलिमिटेशन के नाम पर, रिस्ट्रक्चरिंग के नाम पर, किसी बहाने से आप इस इलेक्शन को आप ज्यादा पोस्टपोन नहीं कर सकते और ये फैसला मधय प्रदेश और महाराष्ट्र के विषय में दिया तो गया है मगर कोर्ट ने ये साफ कर दिया कि ये फैसला सारे स्टेट्स और सारे यूनियन टेरेटरीज के ऊपर बाध्य है तो मेरा कहने का मकसद ये है कि हार के डर से कब तक बचोगे। हारना निश्चित है। जैसे मृत्यु निश्चित है वैसे ही हारना निश्चित है तो जितनी जल्दी होगा, उतनी जल्दी आपकी टेंशन भी मिटेगी, हमारी टेंशन भी मिटेगी।....

माननीय अध्यक्षा: कंप्लीट किजिए।

श्री सौरभ भारद्वाज: देखिये दिल्ली के चुनाव में 2013 में क्या हुआ। 13 में हमारी सरकार बनी, 14 में हमने रेजिग्नेशन दे दिया। फरवरी 2014 को हमने रेजिग्नेशन दे दिया। ये मार्च में देखते हैं देखो कोई बिक जाए, देखो किसी को खरीद लो। अप्रैल, जून, जुलाई, अगस्त, इन्होंने चुनाव नहीं कराया और जब तक इन्होंने चुनाव नहीं कराए लोगों का पारा इनके खिलाफ और बढ़ता गया, और बढ़ता गया और बढ़ता गया और अंत में सुप्रीम कोर्ट हम लोग गए और सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर इन्हें चुनाव कराने पड़े और इनके 70 में 3 विधायक आए।

दिल्ली की जनता ने इनको ये दिया, अभी भी ये वो ही गलती कर रहे हैं दोबारा से। ये जितने दिन चुनाव को डिले करेंगे लोगों के मन में ये बात आयेगी कि ये चुनाव क्यों नहीं करा रहे ये क्यों डर रहे हैं, ये क्यों डर रहे हैं तो मेरा अध्यक्षा महोदय ये आप लोगों से निवेदन है कि इस हाउस की तरफ से भी कोशिश की जाये चाहे कानूनी कोशिश की जाये, चाहे सुप्रीम कोर्ट जाया जाये मगर इस मामले को जल्द से जल्द जो है हमें किसी ऐसे प्लेटफार्म पर रखना चाहिये ताकि दिल्ली के अन्दर जो है नगर निगम के चुनाव कराये जायें और दिल्ली वालों को जो है राहत मिले, बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः दुर्गेश पाठक जी।

श्री दुर्गेश पाठकः बहुत-बहुत धन्यवाद सभापति महोदया, आज मेरा दूसरा दिन है इस सदन में। मैंने अपने कई सारे साथियों को बोलते हुये सुना इससे पहले सदन से बाहर सुनते थे। मैं देखता हूँ सब लोग हमेशा एक ही चीज़ कहते हैं कि भई भारतीय जनता पार्टी ने एम.सी.डी. में कोई काम नहीं किया। एक बार नहीं कहते है दो बार नहीं कहते है तीन बार कई-कई बार कहते हैं कि भारतीय जनता पार्टी ने एम.सी.डी. में कोई काम नहीं किया, मुझे बड़ा दु:ख होता है। मैं तीन साल से भारतीय जनता पार्टी की एम.सी.डी. के ऊपर काम कर रहा हूँ और मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहता हूँ कि जितना काम इन्होंने किया, हिन्दुस्तान नहीं दुनिया की किसी भी सरकार ने इतना काम नहीं किया। मैं, कल आप लोगों ने जब यहां से छुट्टी दी तो गया घर, लिस्ट बनाने लग गया, तीन-चार बज गये लिस्ट बनाते-बनाते कि इन्होंने क्या-क्या काम किये हैं, पूरी डायरी भर गई और पूरी डायरी लेकर आया हूँ आज आपको बताने

के लिये कि इन्होंने क्या-क्या काम किया। इसमें से कुछ चुनिन्दा काम हैं जो मैं आपको बताना चाहता हूँ। दिल्ली में लगभग 50 लाख घर हैं आप छतरपुर से चलो नरेला पहुंच जाओ, बदरपुर से चलो करावल नगर पहुंच जाओ, कोई गली और कोई घर ऐसा नहीं होगा जहां पर कूड़ा न पड़ा हो 50 लाख घर हैं पूरी दिल्ली के अन्दर, कोई गली नहीं है जिसमें कूड़ा न पड़ा हो, कोई घर ऐसानहीं है जहां कूड़ा न पड़ा हो आप लोग कहते हो इन्होंने काम ही नहीं किया, ये छोटा-मोटा काम है क्या यार। ये छोटा-मोटा काम है क्या दिल्ली में ना जाने लाखों गलियां होंगी 50 लाख घर हैं हर घर से बाहर निकलते हो कूड़ा मिलता है। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं मन्दिर मिलना चाहिये था यहां तो कूड़ा मिल जाता है लेकिन इतना सोचो कितनी-कितनी मेहनत की होगी इन्होंने, कितनी प्लानिंग की होगी, कितना सिस्टम बनाया होगा कि कोई घर नहीं बचना चाहिये, कोई गली नहीं बचनी चाहिये, हर गली में कूड़ा मिलना चाहिये और हर घर पर कूड़ा मिलना चाहिये ये शानदार काम किया और आप लोग कहते हो काम ही नहीं किया। बड़े-बुजुर्ग बताते हैं कि दिल्ली में पहाड़ होते थे, अरावली के पहाड़ होते थे बाद में दिल्ली राजधानी बन गई लोगों ने पहाड़ काट-काटकर उसमें घर बना दिये। इन्होंने कसम खाया तो अरावली वाली पहाड़ फिर से दिल्ली के अन्दर बनायेंगे। मैं आज आप हरियाणा से आओ तो ये वाला पहाड़ आपका स्वागत करता है फिर आप गाजीपुर से आओ, उत्तर प्रदेश से आओ तो ये वाला पहाड़ स्वागत करता है, फिर आप भलस्वा वाले से आओ तो ये वाला पहाड़ स्वागत करता है और देखो कितना सुन्दर है, देखो ताजमहल जैसा लगता है बिल्कुल इतना सुन्दर है देखो सारा कितना सुन्दर है। अच्छा सबसे खास बात ये है कि हिमाचल और उत्तराखंड वाले पहाड़ में तो सिर्फ ग्रीन्री है कि आप

जाते हो सिर्फ ग्रीन-ग्रीन-ग्रीन दिखता है इनके पहाड़ में तो आग भी लगती है यार। इनके पहाड़ में धुआं भी निकलता है और सबसे खास बात है कि जाओ जैसे बाज, कऊये पता नहीं क्या-क्या-क्या-क्या-क्या घुमते रहते हैं ये वाला पहाड़ wild life sanctuary बनाई है इस पहाड़ों को आप कहते हो काम नहीं किया यार। ये, ये मतलब थोड़ा अन्याय है इनके साथ। अच्छा एक बड़ा इन्ट्रस्टिंग बात अब आप लोग इतने सालों से इनको कह रहे हो जी आपने काम नहीं किया कूड़े के पहाड़ बना दिये, कूड़े के पहाड़ बना दिये ये भी बेचारे बड़े परेशान हो गये तो इन्होंने एक मीटिंग बुलाई उन्होंने कहा यार ना ये कूड़े के पहाड़ खत्म करो ये हर बार आम आदमी पार्टी वाले जहां भी जाओ लोग कहते हैं जी कूड़े के पहाड़ बना दिये, एक तो ये कूड़े के पहाड़ थोड़े कम करवाओ तो उन्होंने एक्सपर्ट बुलाये, एक्सपर्ट से पूछा जी की कैसे ये कूड़े के पहाड़ कम हो सकते हैं तो एक्सपर्ट्स ने बताया कि जी एक traumer machine आती है उस traumer machine को अगर आप लगा दो तो ये कूड़े के मकान खत्म हो जाते हैं तो अधिकारियों ने बताया जी ये 17 लाख रुपये की traumer machine आती है आप कई सारी मशीनें लगवा दो ये आपका कूड़े का पहाड़ खत्म हो जायेगा। इन्होंने एक बड़ा अच्छा डिसीज़न लिया, इन्होंने कहा जी ये 17 लाख रुपये का traumer machine खरीदेंगे नहीं बल्कि 19 लाख रुपये की वही मशीन हर महीने के लिये तीन साल के लिये किराये पर ले लेंगे अब इसमें देखो फायदा किसका है इनके काउंसलरों का फायदा हो गया, इनके नेताओं का फायदा हो गया, अधिकारियों का फायदा हो गया इतना शानदार स्कीम आप लोगों ने बनाई है कभी जिन्दगी में। इतना बढ़िया काम कर रहे हैं और आप कह रहे हो जी एम.सी.डी. में काम ही नहीं कर रहे हैं ये लोग। आजकल

हमारे नये-नये एल.जी. साहब आये हैं भले आदमी हैं, दिल्ली में अभी नये-नये आये हैं उनको भी कुछ लोगों ने जाकर बता दिया जी ये कूड़े के पहाड़ बड़े गंदे लगते हैं बड़े खराब लगते हैं उनके भी मन में आया कि जी ये कूड़े के पहाड़ साफ होने चाहिये तो तीन-चार दिन पहले वो भी आइडियाज़ मांग रहे थे। मैं तो देखो जी उम्र में बड़ा छोटा हूँ, अनुभव भी बहुत कम है एल.जी साहब से बस मैं एक ही चीज़ कहना चाहता हूँ ये आइडिया लेने-देने के चक्कर में इन जालिया लोगों के चक्कर में मत फंस जाना वरना आइडिया में भी कुछ पैसे बना ले जायेंगे ये लोग आपसे, तो ये इनसे आइडिया-वाइडिया के चक्कर में मत पड़िये। एक हमारे गांव में ज्यादातर जब वो आप लोगों ने भी देखा होगा कि हर स्कूल में कोई न कोई एक बच्चा होता है जिसके पिताजी या कोई न कोई रिश्तेदार इस स्कूल में टीचर होते थे और हम लोग रिजल्ट के बाद कहते थे कि जी ये जो लड़का है ये इसलिये पास हो गया क्योंकि इसके पापा इसके चाचा टीचर थे और उन्होंने इसको ज्यादा मार्क्स दिला दिया। दुनिया में पहली ऐसी संस्था होगी जिसके पापा ने सर्वे करवाया। यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी ने सर्वे करवाया दिल्ली के अन्दर स्वच्छता सर्वेक्षण और उसमें भी बेचारे फेल हो गये ये, कम से कम पापा से तो जुगाड़ लगवा लेते, पापा से तो एटलिस्ट पापा तो पास कर देते हैं चलो दूसरे वाले नहीं कर रहे थे कम से कम पापा से पास हो जाते हैं उसमें भी बेचारे फेल हो गये। लेकिन जुगाड़ नहीं लगाये इन्होंने कहा कोई बात नहीं जी जो ईमानदारी से है वही लिखो। एक शानदार काम इन्होंने किया जो मुझे लगता है बड़ी-बड़ी मल्टी नेशनल कम्पनियां नहीं कर पाई, मैकडोन्ल्स नहीं कर पाया, डॉमिनोज़ वाले नहीं कर पाये, स्वीगी वाले नहीं कर पाये ये सारे क्या कहते हैं ये कहते हैं जी आप आर्डर करोगे 30

मिनट के अन्दर हम आप तक खाने की डिलिवरी कर देंगे। भारतीय जनता पार्टी की एम.सी.डी. पूरी दुनिया के अन्दर एक चीज़ की गारन्टी देती है वो कहती है कि आप जैसे ही बिल्डिंग बनाने का काम शुरू करोगे 30 मिनट नहीं 20 मिनट के अन्दर हमारा पार्षद आयेगा और आपसे पैसे उगाही करके ले जायेगा। ये शायद इतना तेज़ काम करने वाली संस्था पूरी दुनिया के अन्दर नहीं है, इतने सारे काम इन्होंने किये, इतने अच्छे काम किये आप लोगों ने इतना criticise कर दिया इनको कि इनका कॉन्फिडेंस गिर गया है। जैसे ही एम.सी.डी. के चुनाव आती है ये बेचारे इनका चेहरा पीला पड़ जाता है, कंधे झुक जाते हैं, हकलाने लग जाते हैं ये लोग बेचारे लेकिन इतना शानदार काम आपने किया आज तो पूरी विधानसभा कह रही है कि आपने इतना शानदार काम किया है। मैं आपसे एक विनती करना चाहता हूँ, पता नहीं आप लोगों के पास प्रधानमंत्री जी का फोन नम्बर है या नहीं है, पता नहीं आप लोगों के पास अमित शाह जी का फोन नम्बर है या नहीं है आप उनको बड़े कॉन्फिडेंस के साथ ये बताओ कि दिल्ली विधानसभा भी ये मानती है कि आपने बड़ा अच्छा काम किया है। चुनाव करवाओ और चुनाव में भी ज्यादा दिक्कत नहीं आयेगी। आप उनको कहना जी हम 8 लोग बैठकर दो-तीन घंटे में ही सारे वोट गिन लेंगे ज्यादा वोट मिलने वाले भी नहीं हैं इस चुनाव के अन्दर तो मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ कि आप लोग बिल्कुल घबरायें मत। आप लोगों ने भी कई बार ये कहा है कि आप लोगों ने बड़े अच्छे काम किये हैं तो मैं आप सबसे यही विनती करता हूँ कि आप चुनाव करवायें, काम आपने बहुत अच्छे किये हैं आपको बहुत अच्छा रिजल्ट दिल्ली की जनता देगी बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः अजय महावर जी।

श्री अजय कुमार महावरः धन्यवाद अध्यक्षा महोदया जी, सौरभ भारद्वाज जी ने आज विषय रखा कि दिल्ली नगर निगम में बुरी तरह हारने के डर से दिल्ली नगर निगम के चुनाव में असंवैधानिक एवं अलोकतांत्रिक ढंग से देर करने की साजिश, बुरी तरह हारने के डर से लिखा आपने। डरे हुये तो मुझे आप लोग दिखते हैं। सबसे पहला किसी विधानसभा में 6 विधायक क्या यमुनापार से चुनकर आ गये यमुनापार विकास का बोर्ड का गठन तक नहीं किया, ढाई साल बीत गये इस सरकार को, क्या डर है 6 विधायकों से इतना डर गये कि यमुनापार विकास बोर्ड का आपने गठन तक नहीं किया।

मैं पहले भी कहता रहा हूं कि ये राष्ट्र भक्तों की टोली क्या डरेगी जो राम मंदिर के लिए सीने पर गोली खाई हो। जो धारा-370 को 70 साल में भूली न हो उसको हटाया हो साहस के साथ। जो साहस के साथ सीएए लेकर आया हो ऐसे लोग डरने वाले नहीं होते हैं राष्ट्र पर मर-मिटने वाले लोग होते हैं और आप किस डर की बात कर रहे हो कल जरनैल सिंह जी भी कह रहे थे कि पंजाब में इनके दो विधायक आए हैं अरे भइया उस समय तो 5 विधानसभा के चुनाव हुए थे तो डर किसका भूल तो आप रहे हो। आपको याद नहीं उत्तर प्रदेश में आपकी 349 जगह जमानत जब्त हुई है। 306 जगह नोटा से भी कम वोट आए हैं आपको डरना तो आपको चाहिए हमें क्यों। उत्तराखंड में 70 में से 68 जमानत जब्त डरना तो आपको चाहिए। गोवा में 39 में से 35 जमानत जब्त और मणिपुर में भी हमनें सरकार बनाई है उस 5 में से 4 राज्यों में हमने सरकार बनाई और 1 सरकार जो हमारी ढ़ाई साल पहले बन जानी चाहिए थी और लोकतांत्रिक गठबंधन के कारण रुक गई थी वह भी महाराष्ट्र में हमने शिंदे सरकार के द्वारा बनाकर के दिखाया है। हम

सबसे बड़ा दल हैं वहां, हम बसे बड़े दल है, मैं कह रहा हूं, मैं इस सदन में कह रहा हूं सुनने का साहस करो कि वो सरकार

...व्यवधान....

श्री अजय कुमार महावरः अरे भई सुन लो न तुम ईडी की क्या बात करोगे तुम्हारे मंत्री बंद पड़े हैं अंदर, ईडी की बात मत करो फंस जाओगे सत्येन्द्र जैन के बारे में चर्चा करनी पड़ी जाएगी फिर भागते फिरोगे। तो इसलिए डर की बात आप हमें मत बताएं आप अपने डर की चिंता करें। सच बात यह है कि ये आप दिल्ली सरकार के कुकर्मों का उसके सौतेले व्यवहार का उसका एमसीडी के तीनों का गला घोंटने के कारण आज ये एकीकरण की तरफ हमें जाना पड़ा। आपने क्या किया भई अरे भई भारतीय जनता पार्टी से खुंदक निकालों दिल्ली की जनता से क्यों निकाल रहे थे। एमसीडी का पैसा क्यों नहीं दे रहे थे। आप यहां पर सदन में कहते हैं कि हमने पूरा पैसा दिया आप गलत बयानी करते हैं। आपने चौथे वित्त आयोग को पूरी तरह नकार दिया और पांचवे वित्त आयोग का 40561 करोड़ रुपया देना था आपको आपने इसकी आधी रकम भी नहीं दी।... आपने कहा की हम 20-21 हजार तक जाकर सहमत हुए वो भी पूरी रकम नहीं दी। पांच वर्षों में निगमों का 16445 करोड़ रुपये देनदारी थी अगर आपने वो पैसा पूरा दिया होता तो न केवल एमसीडी प्राफिट में होती बल्कि एमसीडी आज जनहित के ऐसे अनेक काम कर गई होती जिसकी आज दिल्ली में प्रशंसा होती। आपने वो जानबूझकर के गला घोटने का काम किया आप ममत्व की बात करते हैं आपने सौतेली मां जैसा व्यवहार किया एमसीडी को मारने का प्रयास किया और सिर्फ एमसीडी की बुराई करते हो। अरे कोरोना काल में आप अपनी राजनैतिक महत्वकांक्षा के कारण कोरोना जैसी वैश्विक

महामारी में भी जो सफाई कर्मचारी हैं एमसीडी के, डॉक्टर्स, शिक्षक यहां तक की शमशान घाट पर काम करने वाले कर्मचारी भी अपनी जान हथेली पर लेकर काम करते रहे लेकिन आपको शर्म नहीं आई मैं उनके प्रति आदर का भाव इस सदन में प्रकट करना चाहता हूं। आप सिर्फ एमसीडी को दोज़ देते हैं अरे हम आल इंडिया पार्टी हैं 19 राज्यों में हमारी सरकार है आए दिन कोई न कोई निगम के निकाय के चुनाव होते रहते हैं हमें क्या डर है। रोज हिन्दुस्तान में हर महीने कोई न कोई चुनाव होते रहते हैं हम तो सब में पार्टीसिपेट करते हैं इसलिए आप इस बात को इधर-उधर मत घुमाइये और आपने मदद क्या की है एमसीडी को आप अपने गिरेबान में झांकते नहीं हैं। आपने 17000 करोड़ रुपया प्रति वर्ष केन्द्र सरकार दिल्ली सरकार को मदद करता है देता है उसके हिस्से का खर्च उठाता है जिसमें बहुत सारी चीजें आती हैं लेकिन जब साउथ एमसीडी ने आपसे टैक्स की बात की तो आपने टैक्स के बारे में आप गोलमाल करके कोई जवाब नहीं दिया। जब साउथ एमसीडी ने आपको यह प्रपोजल दिया कि हम एमसीडी के बांड द्वारा जनता से बांड लाकर के हम उसको चलाने का काम करेंगे उस बात की अनुमति भी आपने नहीं दी जिसके कारण मजबूर होकर तीनों निगमों का एकत्रिकरण करना पड़ा यह आपके सौतेले व्यवहार के कारण और यह सौतेला व्यवहार वहीं नहीं चल रहा इस सदन में भी चल रहा है लगातार चल रहा है। हमारी फाइलें रोकी जाती हैं, हमारे कैमरे नहीं लगते, ओमप्रकाश शर्मा जी बैठे हैं पिछले 5 साल में एक कैमरा नहीं लगा इनके लिए लेकिन सदन में कोई बड़ी बेशर्मी से जवाब दे दिया जाता है कि नहीं नहीं हां लगे नहीं हैं देखेंगे।...

माननीया अध्यक्षः कंप्लीट कीजिए।

श्री अजय कुमार महावरः और मुख्यमंत्री सड़क योजना में मैंने भी लगाया पिछली बार अपनी मुख्यमंत्री बताएं इस सदन में बैठे हैं एक भी रुपया अगर मुख्यमंत्री सड़क योजना में हमें दिया हो। अरे 1000 करोड़ रुपया आपके पास है 300 करोड़ है 400 करोड़ क्या हम इस लायक भी नहीं क्या हम जनता के द्वारा चुनकर नहीं आए हैं। हमें भी कुछ पैसा उसमें से अलॉट करना चाहिए यह आपकी रणनीति हमेशा सौतेलापन व्यवहार की रही है। अभी दुर्गेश पाठक जी कह रहे थे...

माननीया अध्यक्षः अच्छा महावर जी कंप्लीट कीजिए।

श्री अजय कुमार महावरः मुझे दो मिनट तो दीजिए न, मैं बोल रहा हूं।

माननीया अध्यक्षः हां दो मिनट के अंदर ही कीजिए।

श्री अजय कुमार महावरः अभी दुर्गेश पाठक जी कह रहे थे, एलजी साहब को कोट कर रहे थे, पहाड़ों की बात कर रहे थे अरे दुर्गेश पाठक जी पहाड़ों की बात तो बाद में करना पहले यह बताओ 8 साल से इस सदन में बैठे हों मुख्यमंत्री जी ने 8 साल में 8 बयान दिये होंगे मेरी यमुना मां की सफाई क्यों नहीं हुई आज तक। मेरी यमुना मां 2419 करोड़ रुपये केन्द्र ने दिये, किसने डकार लिए उस पैसे को क्यों मेरी यमुना मां साफ नहीं हुई। आज दिल्ली आपसे पूछ रही है की दिल्ली दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी है। सुप्रीम कोर्ट ने यह कहा इस दमघोटू हवा से तो बढ़िया हमें जान से मार दो ये मैं नहीं कह रहा मेरी पार्टी नहीं कह रही यह सुप्रीम कोर्ट कह रहा है। तो दुनिया की सबसे प्रदूषित राजधानी का तमगा किसने दिलवाया, आपने। आप साफ पानी

दे नहीं पा रहे, यमुना जी को साफ कर नहीं पा रहे, आप वायु साफ दे नहीं पा रहे और आप बात कर रहे हो उस पहाड़ों की आप अपनी जिम्मेदारी का बोझ हमेशा दूसरे के तल पर डालते हो अपनी पहले जिम्मेदारी निभाईये। जब आप यमुना साफ कर देंगे, वायु साफ कर देंगे, हर घर में नल और जल पहुंचा देंगे, साफ पानी दे देंगे उसके बाद आप इस पहाड़ों की बात करना दुनिया आपकी सच्चाई को जानती है।...

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय कुमार महावरः यमुना जी में अमोनिया आ जाता है तब आप कुछ नहीं बोलते। अभी एक बात और कहकर बात खत्म करूंगा। अभी ये कह रहे थे कि फोटो खिचाने वाली बात। आप तो जापानी मशीन लेकर आए थे किसने देखी वो जापानी मशीन फोटो में देखी कुछ लोगों ने। कौन से म्यूजियम में खड़ी की हैं आपने वो जापानी मशीन जो कोविड में लेकर आए थे क्या जवाब देगी दिल्ली सरकार इसके बारे में की जापानी मशीन कहां हैं किस-किस के यहां उससे छिड़काव हुआ आपके पास जवाब नहीं है। बात कर रहे थे अभी की राजेन्द्र नगर विधानसभा उप-चुनाव की ठीक है। हमारे अंदर ये दिल है मेरे नेता प्रतिपक्ष नेता ने भी बधाई दी थी पंजाब पर हम भी बधाई देते हैं आप जीतकर आएं है स्वागत है आपका। राजेन्द्र नगर उप-चुनाव में आपने जीत की मैं दुर्गेश जी को बधाई देता हूं इतना बड़ा दिल भी रखना चाहिए लेकिन मुझे मालूम है कि वहां तीन बार मुख्यमंत्री जी को जाना पड़ा। मुझे यह भी मालूम है कि वहां की जनता को थ्रैट देना पड़ा कि तुम अगर इसको चुनोगे भाजपा को तो ढ़ाई साल तुम्हारे काम ठप्प हो जाएंगे। बेचारी गरीब जनता है उसको लगा सरकार तो अभी अदली-बदलनी है नहीं इसलिए... इसलिए उसको

जीता दिया फिर भी अंतर कम हुआ है हमारा दो पाइंट, अरे मान रहा हूं न कैसे मानू...

माननीया अध्यक्षः अजय महावर जी...

...व्यवधान...

श्री अजय कुमार महावरः तो हमारे ढाई परसेंट वोट बढ़े हैं और आपके सवा परसेंट वोट घटे हैं इसको भी आप मान लें।...

माननीया अध्यक्षः कम्पलीट हो गया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय कुमार महावरः एक बात के साथ अपनी बात को विराम देता हूं कि...

माननीया अध्यक्षः चलिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री अजय कुमार महावरः 'न आरंभ न कोई अंत दिखाई देता है अब तो तुम्हारी आंखों में ही मुझे तुम्हारा पतन दिखाई देता है' बहुत-बहुत धन्यवाद, जय हिन्द भारत माता की जय।

माननीया अध्यक्षः रोहित मेहरौलिया जी चार मिनट में कंप्लीट कीजिएगा।

श्री रोहित कुमारः बहुत-बहुत धन्यवाद माननीय अध्यक्षा जी इस महत्वपूर्ण चर्चा में मुझे अपनी बात कहने का मौका दिया। जो प्रस्ताव भाई सौरभ भारद्वाज जी ने लगाया है नगर निगम के चुनावों को टालने को लेकर उसके लिए कहूंगा कि भारत देश जाना जाता है दुनिया में सबसे बड़ा लोकतंत्र है इस पर हम सभी भारतवासियों को गर्व है लेकिन कहीं न कहीं एमसीडी के चुनावों को

टालकर भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार ने न केवल संविधान की मूल भावना के विरुद्ध जाकर यह काम किया है बल्कि कहीं न कहीं दिल्ली के और देश के लोगों का जो बहुत बड़ा एक संवैधानिक लोकतांत्रिक अधिकार वोट डालने का अधिकार उसको भी छीना है तो अपने आप में यह बहुत ही शर्म की बात है और जैसा की सभी साथियों ने विस्तार से बताया मैं ज्यादा लंबी-चौड़ी बात नहीं करूंगा। पूर्वी दिल्ली नगर निगम के अंदर मैं नेता प्रतिपक्ष भी रहा हूं बहुत नजदीक से मैंने देखा है कि किस प्रकार से भारतीय जनता पार्टी ने भ्रष्टाचार का बहुत बड़ा तंत्र यहां पर खड़ा कर दिया है तीनों एमसीडी के अंदर। ऐसा कोई विभाग एमसीडी का नहीं है जिसकी मार गरीब जनता को नहीं झेलनी पड़ती है। भारतीय जनता पार्टी के पार्षदों को आए दिन आपने देखा होगा की किस प्रकार से लैंटरों पर उगाही करते हुए तमाम बातें हम लोग जानते हैं। लेकिन एक बात और है कि एमसीडी की मार न केवल जनता को झेलनी पड़ी है 15 सालों तक भारतीय जनता पार्टी के एमसीडी के कुशासन के दौरान बल्कि एमसीडी के अंदर कार्यरत कर्मचारियों को भी कई गुना ज्यादा मार उसकी झेलनी पड़ी है। मैं बात करुंगा भारतीय जनता पार्टी के शासन के दौरान 15 सालों के अंदर सफाई कर्मचारियों की जो दुदर्शा रही है 20-20 साल तक एमसीडी के अंदर सफाई कर्मचारी भाई-बहन पक्के होने की राह देखते रहे। अभी 6000 कर्मचारियों को पक्का करने की बात कही थी की पता है कि हम जाने वाले हैं कोई भी शगुफा छोड़ दो उसके बाद में भी गोलमोल बात हो गई। मैं पूछना चाहूंगा हमारे भाजपा के साथी यहां पर बैठे हैं ये बताएं की वो 6000 कर्मचारी वो कब पक्के होंगे।

आप बताइए कि जो कर्मचारी हमारे स्वच्छता के सैनिक इस कोविड महामारी के दौरान जिन्होंने अपनी जान को हथेली पर लेकर इस दिल्ली को संभालने का और हमारे जीवन को बचाने का काम किया। इस महामारी के दौरान जिन स्वच्छता के सैनिकों ने अपनी जान को खतरे में डालकर हमारी गली मोहल्ले चौराहे की साफ-सफाई के लिए आंधी, तूफान, बारिश में निकल जाते थे। उनको समय पर सैलरी नहीं मिली। आज भी एकीकरण के नाम पर जब इस एमसीडी के अंदर ये चुनाव टाले गए हैं। आज भी कर्मचारियों को समय पर सैलरी नहीं मिल रही है। तो मैं ज्यादा लंबी-चौड़ी बात नहीं कहूंगा क्योंकि हम सभी लोग माननीय मुख्यमंत्री जी को भी सुनना चाहते हैं। तो मैं यही कहूंगा कि ये जो चुनाव ये टाले गए थे ये 9 मार्च का जो दिन था कि जिस दिन चुनावों की तारिखों का औपचारिक ऐलान होना था। वहां पर केन्द्र सरकार का फोन आता है और राज्य चुनाव आयोग दबाव में आकर एक अनैतिक पूरी तरीके से गलत फैसला लेते हुए इन चुनावों को टालने का उन्होंने जो पूरा षड्यंत्र रचा है दिल्ली की जनता ने इसको देख लिया है समझ लिया है और दिल्ली की जनता पूरी तरीके से मन बनाकर बैठी है चाहे इलेक्शन आप तीन महीने में कराए, दो महीने में कराए, चाहे एक साल में कराए अभी आपको अंदाजा हो गया होगा राजेन्द्र नगर के उपचुनाव के बाद कि दिल्ली की जनता ने पूरी तरीके से भारतीय जनता पार्टी को नकार दिया है और आने वाले समय के अंदर एमसीडी के अंदर जब भारतीय जनता पार्टी ये सुपड़ा साफ इसका हो जाएगा, आम आदमी की सरकार बनेगी तो निश्चित रूप से तमाम दिल्ली वासियों को राहत भी मिलेगी और तमाम तरह का जो भ्रष्टाचार इन्होंने खड़ा किया है उससे राहत भी मिलेगी। आखिर में एक बात कहूंगा जो भाई दुर्गेश पाठक जी ने कही थी कि इन्होंने बहुत

बड़ा काम किया है। ये तमाम कामों की लिस्ट भाई दुर्गेश पाठक जी ने अभी बताई थी लेकिन मैं एक काम कहूंगा जो सबसे बड़ा काम भारतीय जनता पार्टी ने 15 साल के अपने शासन के दौरान किया है कि एमसीडी को दुनिया के सबसे भ्रष्ट डिपार्टमेंट की सूची में पहले पायदान पर लाकर खड़ा कर दिया है ये आपका सबसे बड़ा काम है।...

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री रोहित कुमारः आपने मुझे बोलने का समय दिया बहुत-बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः राजेश गुप्ता जी 5 मिनट में कंप्लीट कीजिएगा।

श्री राजेश गुप्ताः धन्यवाद अध्यक्षा जी, आपने इस विषय पर बोलने का मौका दिया। अध्यक्षा जी, प्रजातंत्र में एक अधिकार के साथ में दो जिम्मेदारियां आती हैं और ये जिम्मेदारियां तय होती है चुनावों से। जनता इस बात को बहुत अच्छी तरीके से जानती है कि अधिकारी आज है नहीं है। हो सकता है तीन महीने बाद वो ट्रांस्फर हो जाए और जैसा कल आपने सुना ही कि यहां तो जियो के वैलिडिटी प्लान की तरह एक महीने 8 दिन, 3 महीने 6 दिन, 15 दिन ऐसे अधिकारी बदल दिए जाते हैं। ऐसे में जनता चाहती है कि वो अपने किसी चुने हुए प्रतिनिधि के पास जाए और अपनी बात को रखे। अगर वो प्रतिनिधि उस काम को कर देता है तो अगले 5 साल बाद में वो वोट मांगने का अधिकार रखता है और जनता उसे जिताती है और नहीं तो जनता उसको बाहर का रास्ता दिखा देती है। लेकिन जो सरकार चुनाव ही न होने दें उसे मैं तो कम से कम सरकार नहीं मानता ये एक अघोषित आपातकाल है। बिल्कुल वैसा ही आपातकाल बस ये भी जेलों में बंद करते हैं लोगों को, ये भी सरकार

को गिराते हैं, ये भी लोगों को डराते हैं और ये चुनाव नहीं कराते हैं। बिल्कुल साफ-साफ आपातकाल हिन्दुस्तान के अंदर चल रहा है। हम जो शास्त्रों के बारे में पढ़ते हैं क्योंकि इनको बड़ा शौक है वैसे तो ये घूमा-फिराकर शास्त्रों की बातें करते हैं। लेकिन रामायण में रावण हो या महाभारत के अंदर कौरव हो लड़ाई से तो वो भी नहीं डरे थे लड़े तो थे। जीत-हार देखी जाएगी मैदान में तो आओ कर्म बता देंगे आपके कितने और हमारे कितने हैं लड़ लो। अगर दिल्ली सरकार में हमने कोई काम नहीं किया होगा तो आप जीत जाना और आपने जो करा है जो अभी दुर्गेश पाठक जी बता रहे थे तो आपका सुपड़ा साफ होगा जैसा आपका दिल्ली में हुआ है। हालांकि मेरा ये मानना है कि ये चुनाव आप और एक-दो साल नहीं कराओगे क्योंकि मेरे बड़े साथी है वहां आपकी पार्टी में आप में से भी कुछ है और वो इसके सीधे-सीधे जिम्मेवार मान रहे हैं अब दुर्गेश पाठक जी को। जिस तरीके से आप इस चुनाव को हारे हो इतनी बुरी हालत कि आपने 40-40 आदमी स्टार प्रचारक लगाए 30 तो कभी आए नहीं। हम पोस्टर देखते थे स्मृति ईरानी जी आ रही हैं आ रही हैं-आ रही है आप भी वेट कर रहे थे हम भी वेट कर रहे थे लेकिन आई नहीं, कोई नहीं आया 5-7 आए बेचारे वो भी मुंह छिपा रहे थे। आपके अपने सांसद यमुनापार के बड़ा शोर मचा रहे थे अभी आप, वहीं रहते हैं सब, वहीं मकान है उनकी दो बहुत बड़ी-बड़ी कोठियां हैं वो ही नहीं दिखाई दिए। उस वार्ड को भी आप हारे हो, उस वार्ड को भी आप हार गए। आप गरीब आदमी कह रहे थे आप अमीर आदमी पर भी हारे हो, चेक कर लेना आपको पता होगा आप वहां के प्रभारी थे। तो अब एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी तो अब दुर्गेश पाठक जी को दे सकते हो कि भई आपने इतनी बुरी तरह हरा दिया तो दिल्ली

में हम क्या चुनाव लड़ेंगे और चुनाव के पीछे अब साजिश देखिएगा ये चुनाव किसी भी हाल में मई-जून में होने वाले नहीं थे। लेकिन इन्होंने चिट्ठियां लिखी और अपने मोटा भाई को बोला कि आप गर्मियों में चुनाव कराओ। हरियाणा में हमारी सरकार है हम पानी रोक देंगे इन्होंने एक-एक बूंद के लिए दिल्ली को तरसाया है एक बूंद के लिए। एक-एक बूंद के लिए दिल्ली तरसी पूरी दिल्ली का पानी इन्होंने बंद करा। आप यमुना को देख लो क्या हालात हैं। इन्होंने पहली बार ऐसा हुआ मेरे साथ में... हमारे चेयरमेन साहब बैठे हैं इन्होंने नहरों का पानी रोक दिया दिल्ली का ताकि दिल्ली में एक हालात बने कि राजेन्द्र नगर का ये चुनाव जीत जाए। ये लाष्ठों की राजनीति करते हैं गुजरात हो चाहे मुरादाबाद हो और इन्होंने यहां पर भी यही कहा, चाहे मुजफ्फरनगर हो, दिल्ली में भी यही करा कि लोग मर जाए इनको वोट मिल जाए बस। लेकिन बाबूजी अभी आपने बताया न आपकी कई राज्यों में सरकार है। तो दो राज्यों में हम आपसे लड़े थे दोनों में हमारी है पंजाब में और दिल्ली में और आप देखे जाओ अभी हिमाचल भी देखना, हरियाणा भी देखना और गुजरात में भी हम आ रहे हैं। वहां भी देखना आपके साथ क्या होगा क्योंकि आपने जिस जनता को बेवकूफ समझा हुआ है उसे जब तक विकल्प नहीं मिलता तो वो आपके झांसे में आती है। लेकिन जब उसे वो विकल्प मिला आम आदमी पार्टी का शिक्षा का, चिकित्सा का, सुरक्षा का उन्होंने आपके साथ क्या करा वो देख लो आप अपने आसपास देख लो कितने लोग आपके पास में आज हैं। ये जिस किस्म की राजनीति करते आए आज तक निगम में 15 साल जीतते रहे। इनको लगता है कि निगम में जीतना इनके लिए आसान है छोटी सीटें हैं ये दो-चार निर्दलीय खड़े कर देते हैं थोड़ा हिन्दू-मुस्लिम कर लेते हैं उससे

जीत जाते हैं। लेकिन अब की दिल्ली की जनता ने जो इनको देखा लगातार जो हमारे साथी बता रहे थे कि मकान पर लेंटर तो बहुत दूर की बात है जब ईंटें उतरती है किसी का बदरपुर उतर जाए तो इनका पार्षद पहले पहुंच जाता है। इनको हर चीज में हिस्सा चाहिए। दिल्ली की जनता ये देखती है कि जो इंसानों के काम है जो दिल्ली सरकार के काम है वो तो बहुत अच्छे हो जाते हैं। लेकिन जो कुत्ता, बिल्ली, मोर, बंदर, कबूतर ये जितने जानवरों के काम है, गाय ये सारे जो इन एमसीडी वालों के पास में आते हैं। एक भी काम के अंदर अब दिल्ली की जनता से पूछिए इन्होंने क्या हालत बना रखी है। एक सर्वे ये करा ले स्वच्छता का तो इन्होंने करा लिया जिसमें ये जीरो आए। नए-नए ड्रामे करते रहते हैं कभी झाडू लेकर खड़े हो जाते हैं। अभी आपने देखा एक टनल का उद्घाटन कर दिया इन्होंने जिसकी कोई तैयारी नहीं थी इनके पास में। पता नहीं क्या नक्शा बनाया था क्या नहीं बनाया था इनको कुछ मालूम नहीं वो भी राजेन्द्र नगर के चुनाव से पहले उसका भी उद्घाटन कर दिया शायद हजार-दो हजार वोट उस पर भी पड़ जाए। उसमें पानी भर गया जी चार दिन बाद, पानी भर गया तो कहते हैं दिल्ली सरकार दोषी है। भगवान तो इनके साथ कभी था ही नहीं, न कभी होंगे। जगह-जगह बोर्ड जो राम को लाए हैं हम उनको लायेंगे। मैंने तो पूछा कई लोगों ने मुझसे पूछा कि दशरथ जी चुनाव लड़ रहे हैं क्या? यार तुम्हें हर चुनाव में रामचन्द्र जी दिखाई देने लगते हैं, राम का नाम आदमी सबसे ज्यादा कहां लेता है पता है आपको? जब उसको पता होता है अंतिम समय आ गया तो वो राम नाम का जाप करने लगता है। अब आपने हमारी चिट्ठियों पर लिख दिया दो विधायकों का कि चिट्ठी लिख रहे हैं जी कह रहे हैं ट्रांस्फर करा रहे हैं। भाई हम

सबसे ज्यादा चिट्ठी देते हैं। देखो आप भी विधायक हो टाइम नहीं मिलता आप यहां पर बैठे हो कोई किसी की क्रिया हो आपके यहां तो वहां चिट्ठी भेज देते हैं रोज भेजते हैं है ना। तो उस क्रिया की चिट्ठी आप सबसे ज्यादा देते हो तो उसमें क्या करें नहीं लिखे कि भगवान इसकी आत्मा को शांति दें। उसमें भी कुछ प्रॉफिट मिल रहा होगा। उस पर भी सीबीआई को बिठा दो। क्या राजनीति है आपकी हमारी समझ से परे है। अब उसमें चौड़े हो-होकर बताते हो कि हमने पैसे नहीं दिए अरे भई हमसे ही सबकुछ चाहिए तो हमें एमसीडी दे दो न हम अपने आप दे देंगे जो हमें देना है तुम क्या करोगे उसके अंदर ये बताओ। पिछले 15 साल से एक काम बता दो उन्होंने बार-बार कहा हम रोज प्रैस कांफ्रेंस करके कहते हैं कि दिल्ली, तो एमसीडी ने कोई काम नहीं किया। आप एक प्रैस कांफ्रेंस कर लो अभी बाहर जाकर कर लो और बता दो आपने क्या किया है एक तो काम बता दो यार, कुछ एक तो करा होगा। एक इन्होंने पुल बनाया जी।...

माननीया अध्यक्षः कंप्लीट कीजिए।

श्री राजेश गुप्ताः वो हाईकोर्ट के... जो तीसहजारी वाला, आपको खाना खाकर उस पर जाना है कोई दवाई खाने की जरूरत नहीं है हाजमोला का काम करता है डग-डग-डग गाड़ी चलती है सब हजम। 15 साल में तो वो पुल बना इनसे। एक पुल है जो आदरणीय मुख्यमंत्री जी बार-बार बात करते हैं वजीरपुर के अंदर जो पहला पुल बना दिल्ली सरकार का। जिसकी लागत साढ़े तीन सौ करोड़ थी और जिसको 247 करोड़ में बना लिया। 103 करोड़ रुपये बचाये और पूरी दिल्ली के अंदर जो आप फ्री की दवाईयां देखते हो जो

हम देते हैं। उसका सारा खर्चा हमने एक पुल में से निकाल लिया। दूसरा पुल उन्होंने बनाया 15 साल में तो इनसे पुल बना और वो भी ये कहते हैं कि देखो हम भी दवाई दे रहे हैं हाजमोला दे रहे हैं। आप खाना खाओ इसके ऊपर चढ़ जाओ फिल्मिस्तान से चढ़ो और जब तक आप तीसहजारी उतरोगे आपका सारा खाना हजम, हाजमोला पुल है वो। उसका नाम रख दिया लोगों ने हाजमोला पुल।

श्री राजेश गुप्ताः आप यमुना पार के हैं, आप आना इधर। मैं आपको अपनी गाड़ी में ले चलूंगा। आपकी थोड़ी बैटर होगी मंहगी वाली होगी मुझे पता है लेकिन उस में भी आपको हाजमोला का पुरा स्वाद मिलेगा। तो यार...

माननीया अध्यक्षः गुप्ता जी कन्क्लूड करें अब।

श्री राजेश गुप्ताः कुछ काम कर लो। इतिहास आपको देख रहा है। हमें भी देख रहा है। हमारा क्या रजल्ट होगा वो आप लगातार तीन बार से देख रहे हो यहां पर। और आपके साथ क्या हो रहा है वो आपको पता है। एक बार आप आए थे। तीन मुख्य मंत्री बदलने पड़ गए। एक बार में तीन। बताओ अब तक आपकी सरकार होती तो आपकी पूरी भाजपा यहां लग चुकी होती, हर दो साल में बदल–बदल कर, बदल–बदल कर। कुछ काम करो, जनता देख रही है। चुनाव करा लो, दूध का दूध, पानी का पानी। खत्म करो काम। हम हार जाऐंगे हमें कोई दिक्कत नहीं है। लडो तो सही, मैदान में आओ तो सही। जिस धर्म की बात करते हो उसकी सुनो तो सही कि अर्जुन इस गांडीव को उठा तो ले, आओ युद्ध करो। आपने मुझे बोलने का मौका दिया। बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीया अध्यक्षः माननीय मुख्यमंत्री जी।

माननीय मुख्य मंत्रीः आदरणीय अध्यक्षा महोदया। दिल्ली में कोई भी देश भर से अगर आता है या दुनिया से कोई भी आता है, वो दिल्ली के स्कूल देखने जाता है। दांतों तले अंगुली दबा लेता है कि ऐसे भी सरकारी स्कूल हो सकते हैं। अस्पताल देखने जाता है सरकारी अस्पताल, बड़ा आश्चर्यचकित होता है कि ऐसे भी सरकारी अस्पताल हो सकते हैं। मोहल्ला क्लीनिक देखने जाता है। फिर जनता से बात करता है तो जनता कहती है यहां पर चौबीस घंटे बिजली आती है और जीरो बिल आते हैं। लोग दिखाते हैं जीरो बिल। पच्चहतर साल हो गए आजादी को आजतक देश में किसी भी राज्य में किसी के भी जीरो बिल नहीं आए, पहली बार जीरो बिल आ रहे है कि चौबीस घंटे बिजली आती है और जीरो बिल आते हैं। फिर जब वो दिल्ली में घूमता है तो सडकों पर चारों तरफ गंद ही गंद, गंद ही गंद, गंदगी ही गंदगी। कूड़े के पहाड़। बहुत दुख होता है कि हम दिल्ली को साफ नहीं कर पाए। बहुत मन होता है कि काश अगर हमारे पास एमसीडी होती तो हम दिल्ली को साफ कर देते। पन्द्रह साल से इनके पास एमसीडी थी, इन्होंने नहीं किया। अब ये लोग चुनाव भी नहीं करा रहे। मतलब जो सरेआम गुंडागर्दी होती है, लफंगई होती है वो मचा रखी है इन्होंने कि काम हम भी नहीं करेंगे और तुम को भी नहीं करने देंगे और देखते हैं दिल्ली कैसे साफ होती है। दिल्ली वालों से बदला निकाल रहे हैं। एक इनके सीनियर नेता से मैं पूछ रहा था मैंने कहा अरे ये कोई इतनी बात थोडी है दिल्ली को साफ करना। क्यों नहीं करते। कहते हैं जी दिल्ली के सफाई कर्मचारी काम चोर हैं। बीजेपी वाले कहते हैं कि दिल्ली के सफाई कर्मचारी काम चोर हैं। दिल्ली के सफाई कर्मचारी काम चोर नहीं हैं तुम चोर

हो, तुम डाकू हो। पहले इसी तरह की गंदी-गंदी, पहले इसी तरह की गंदी-गंदी भद्दी गालियां ये लोग टीचरों को दिया करते थे, सरकारी टीचरों को, डॉक्टरों को दिया करते थे। कहते थे दिल्ली के टीचर पढ़ाते नहीं है, निकम्मे हैं। टीचर आते हैं पेड़ों के नीचे बैठे रहते हैं। वो ही टीचर हैं हमने तो टीचर बदले नहीं। साठ हजार टीचर हैं, वो ही टीचर हैं, हमने तो बदले नहीं और उन्होंने क्रान्ति करके दिखा दी। वो ही डॉक्टर हैं, वो तो हमने बदले नहीं। इन्होंने... हमने क्रान्ति करके दिखा दी। एक बार एमसीडी हमारे हाथ में आ जाए। ये ही सफाई कर्मचारी हैं पूरी दुनिया के अंदर ये सफाई कर्मचारी दिल्ली का नाम रोशन करेंगे। ये फंड्स का रोना रोते रहते हैं। दिल्ली सरकार फंड नहीं देती, दिल्ली सरकार फंड नहीं देती, दिल्ली सरकार ने फंड रोक रखे हैं। हमने सारे फंड दे दिये पर चलो मान लिया पर अब तो केन्द्र के अंडर में आ गई एमसीडी, अब तो हमारा फंड देना बनता ही नहीं है। अब तो सारा फंड केन्द्र ने देना है, सेंटर ने देना है। सेंटर जब बिल लाई थी तो बोले थे भई दिल्ली सरकार ने बड़ा सौतेला व्यवहार कर रखा है अब हम अपने अंडर में ले रहे है तो सेंटर ने अपने अंडर में ले... अब ले लो फंड। अब हमारे पास किस लिए आ रहे हो। अब किस लिए गाली दे रहे हो। अब तो कुछ करके दिखा दो, अब सेंटर से लाओ फंड। अभी भी तनख्वाह नहीं दे रहे ये सफाई कर्मचारियों को। अभी भी उनके कर्मचारियों को ना तनख्वाह मिल रही है, ना फंड मिल रहा। लाओ अब सेंटर से फंड। अब तो दिल्ली सरकार का कोई रोल ही नहीं है। कोई फंड नहीं देना हमको। सारा फंड लाओ अब सेंटर... अभी भी कुछ नहीं काम कर रहे। ये चुनाव नहीं कराऐंगे। क्यूं नहीं कराऐंगे। एक पिक्चर आई थी अमिताभ बच्चन की, दीवार। देखी होगी आप सबने। उसमें अमिताभ बच्चन और शशी कपूर आपस

में बात कर रहे हैं। अमिताभ बच्चन कहता है तेरे को क्या मिला अपने असूलों से। मेरे पास धन है, दौलत है, ऐश्वर्य है, बंगला है, गाड़ी है, तेरे पास क्या है। शशी कपूर कहता है मेरे पास माँ है। आज ये बीजेपी वाले धमकी दे रहे है दिल्ली के लोगों को सरेआम धमकी दे रहे है दिल्ली के लोगों को, कहते हमारे पास ईडी है, इन्कम टैक्स है, सीबीआई है, दिल्ली पुलिस है सारी दौलत है। इतने बड़े-बड़े हर डिस्ट्रिक्ट में ऑफिस हैं, तुम्हारे पास क्या है। तो ये दिल्ली की दो करोड़ जनता एक साथ बोलती है, हमारे पास हमारा बेटा केजरीवाल है। इसीलिए डरते हैं ये लोग। वो गली का गुंडा होता है ना, जाता है किसी के घर में तेरे लड़के को बाहर निकाल। जनता कह रही है खबरदार तुमने केजरीवाल को हाथ लगाया तो। अपने बेटे से प्यार करती है जनता। घर का ख्याल रखा है मैने एक अच्छे बेटे की तरह। उन बच्चों को, अपने भाई बहनों को पढाता हूं, अच्छी शिक्षा देता हूं। घर में कोई बीमार हो जाए उनका इलाज कराता हूं। इस लिए ये कभी चुनाव कराऐंगे ही नहीं। इनको पता है कि दिल्ली की जनता हमेशा अपने बेटे और अपने भाई के साथ खडी होगी। अब इन्होंने नई धमकी देनी शुरू कर दी बीजेपी वालों ने। आप लोगों ने भी सुना होगा। खूब चल रहा है कि दिल्ली में अब अगले असेम्बली चुनाव ही नहीं होंगे। कह रहे हैं अब फुल युनियन टैरिट्री बनाऐंगे दिल्ली को। काफी चल रहा है आजकल कि फुल युनियन टैरिट्री अगले चुनाव ही नहीं होंगे। अब ये असेम्बली-वसेम्बली खत्म UT with Legislature खत्म, अब अगला। हद हो गई जी...

...व्यवधान...

माननीय मुख्य मंत्रीः ये क्या है, ये गुंडागर्दी...

...व्यवधान...

मननीया अध्यक्षः शांत।

माननीय मुख्य मंत्रीः केजरीवाल से नफरत करते-करते तुम लोग देश से नफरत कर बैठे। केजरीवाल आएगा जाएगा, केजरीवाल इम्पोर्टेंट नहीं है। लेकिन अगर आप लोग इस देश में चुनाव कराना खत्म कर दोगे, संविधान के चीथड़े कर दोगे, जनतंत्र को खत्म कर दोगे तो ये देश नहीं बचेगा। बिधूडी साहब हम रहे ना रहे आप भी कल नहीं रहोगे, मैं भी नहीं रहूंगा। हम अमर थोडी ही है। कल मैं भी मर जाऊंगा, आप भी मर जाओगे। आने वाली पुश्ते आप के बच्चे आपको गाली देंगे कि मेरे बाप ने सदन में खडे होकर कहा था कि दिल्ली के अंदर जनतंत्र खत्म कर देना चाहिए। आपके बच्चे गाली देंगे, मैं आपको लिखकर दे रहा हूं आज कि आपने सदन के अंदर खड़े होकर कहा था कि मेरे बाप ने कहा था सदन के अंदर खड़े होकर की जनतंत्र खत्म कर देना चाहिए इस देश से। आज देश में हमारे कट्टर विरोधी भी खुले आम चाहे जो मर्जी कह लें, प्राईवेट में बैठो तो कहते हैं यार लोग तो ईमानदार हैं ये। कट्टर ईमानदार हैं ये लोग। भ्रष्टाचार नहीं करते पैसे नहीं खाते, इनको ये चुभ रहा है बहुत बुरी तरह से। तो ये जबरदस्ती साबित करना चाहते हैं, नहीं-नहीं ये भी चोर हैं, हमारे जैसे ही ये भी। जैसे हम हैं वैसे ही ये हैं। तो ये जबरदस्ती करना चाहते हैं। सत्येन्द्र जैन को पकड़ लिया बताओ। एक पैसे का भ्रष्टाचार साबित नहीं कर पा रहे। सबसे कट्टर मैं समझता हूं वो देश के लिए काला दिन था, जिस दिन सत्येन्द्र जैन जिसने इस देश को नहीं दुनिया को मोहल्ला क्लीनिक का कॉन्सेप्ट दिया। पूरी दुनिया में, पूरी दुनिया में, देश में नहीं कह रहा, पूरी दुनिया में दिल्ली अकेला शहर है जहां दिल्ली के हर आदमी अमीर

हो या गरीब हो उसकी दवाईयां सारी मुफ्त है उसका सारा इलाज मुफ्त है। सत्येन्द्र जैन ने किया। पूरी दुनिया में क्या पूरी मानव सृष्टि के अंदर शायद दिल्ली पहला राज्य है जहां पर चौबीस घंटे बिजली आती है और मुफ्त बिजली आती है। दुनिया के किसी कौने में मुफ्त बिजली नहीं आती जी। सत्येन्द्र जैन ने किया है। सत्येन्द्र जैन ने किया। ऐसे आदमी को उठाकर ये लोग जेल में डाल देते हैं, केवल इस लिए कि वो साबित करना कहना चाहते हैं दुनिया को पर कोई मान ही नहीं रहा इनकी। सत्येन्द्र जैन को जेल में डाल दिया फिर भी लोग कहते है यार लोग तो ईमानदार हैं। अब कह रहे हैं ये...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये तरीका नहीं है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये तरीका नहीं है देखिये। ये कोई तरीका नहीं है। ये कोई तरीका नहीं है। बैठिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिए, सभी साथी बैठिए। बैठिए सभी साथी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बिधूडी जी। ये कोई तरीका नहीं है ना। ये कोई तरीका नहीं है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: ये कोई तरीका नहीं है। आपको कुछ बोलना है आप लिखकर दे दीजिए। सदन के नेता बोल रहे हैं। ये कोई तरीका नहीं है। नहीं। शांत।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: एक भी शब्द आगे नहीं। बिल्कुल शांत। बिल्कुल शांत।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: बिल्कुल शांत। सदन के नेता बोल रहे हैं। बिधूडी आप अपने कन्ट्रोल करें। जी सर।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: बिधूडी जी,

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: आप बैठिए सब।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: मेरा विपक्ष के साथियों से...

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्ष: बैठिए आप सब।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः शांत।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सभी सदस्य शान्ति बनाकर रखें। बिधूडी सुबह आप ही कुछ कह रहे थे और कम से कम वो ज्ञान अपने साथियों पर लागू करें फिर बाकियों से बाद में उम्मीद करें। आपको बोलने की आज्ञा नहीं है। बोलने की आज्ञा नहीं दी है।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः त्रिपाठी जी शांत।

माननीय मुख्यमंत्रीः अब ये लोग धमकी दे रहे हैं, कि अगस्त के अंत तक मनीष सिसोदिया को ये गिरफ्तार करेंगे।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये कोई तरीका नहीं हुआ ना।

माननीय मुख्यमंत्रीः ये कह रहे हैं मनीष सिसोदिया को गिरफ्तार कर..

...व्यवधान...

माननीय मुख्यमंत्रीः यार ये। शक्ल से ये चोर नजर आता है आपको।

...व्यवधान...

माननीय मुख्यमंत्रीः शक्ल से चोर नजर आता है। दिल्ली के 18 लाख बच्चों का भविष्य बनाया है इसने। तुम लोगों की ये, ओपन चैलेंज कर रहा

हूं तुम लोगों की, कह रहे हैं कितने 19 राज्यों में सरकारें है, तुम्हारे 19 राज्य एक तरफ दिल्ली एक तरफ। चैलेंज कर लो, 10 स्कूल तुम्हारे हम देख आते है, अभी आए थे बीजेपी के... गुजरात वाले आए थे देखने। गुजरात वाले गुजरात की एक 22 नेताओं की, बड़े-बड़े नेता उनके पूर्व शिक्षा मंत्री, फलांना, ढ़िमका सारे बड़े-बड़े नेता आए थे देखने गुजरात के। बोले हम पोल खोल के आएंगे हमने स्वागत किया उनका और स्वागत करके हमने कहा भई आओ देखो। वो देख के आए खुद ही हम नहीं गए उनके साथ खुद ही देख के आए। फिर उन्होंने कहा 3 बजे आज प्रेस कॉफ्रेंस है, प्रेस कॉफ्रेंस करेंगे, फिर प्रेस कॉफ्रेंस भी नहीं की। फिर बोले न, यहां नहीं करेंगे गुजरात जाके करेंगे। गुजरात जाकर भी नहीं करी... कुछ मिला ही नहीं उनको कोई कमी ही नहीं मिली। ऐसा आदमी जिसने 18 लाख बच्चों का भविष्य बनाया हो, उसको तुम भ्रष्टाचारी कहोगे और उसको जेल डालोगे, ये तो देश के लिये काला दिन होगा। और ये छोड़ो, पता नहीं हमारे अभी तक कितने, 20-22 एमएलएज को तो जेल भेज चुके। अब कुछ अमानत के खिलाफ भी नोटिस कर रखा है, आतिशी के खिलाफ भी नोटिस कर रखा है, कादियान के खिलाफ भी नोटिस कर रखा है, एफआईआर दर्ज कर रखीं हैं, दो-चार की, संजीव झा के खिलाफ, मुकेश अहलावत के खिलाफ कर रखा है और भी भई कइयों के। और कर लो गिरफतार। मतलब जब वो 22 नहीं टूटे, उनके जितने जजमेंट आए सारों में बरी कर दिया और कोर्ट ने ऐसा लताड़ा इन लोगों को की भई ये क्या झूठे-झूठे केस कर रहे हो, फिर भी अक्ल नहीं आई इनको। और कर लो। और अब तो इन्होंने हद कर दी, अभी तक तो ये मंत्रियों को और एमएलए को, अब हमारे कार्यकताओं को इन्होंने, ईडी ने पिछले हफ्ते 3 दिन तक, रोज 10-10 घंटे तक हमारे एक

ऐसे कार्यकर्ता को सम्मन करके बुलाया जिसका नाम आप में से कोई नहीं जानता। मेरे को पता चला मैंने पूछा भई अपना ये कार्यकर्ता कौन है। 10-10 घंटे तक रोज ईडी ने बैठाकर उसको interrogation करा, पता नहीं किसी फर्जी मामले में। सतेंद्र जैनवाले में नहीं, किसी फर्जी मामले में, कोई फर्जी मामला बना रखा है। ईडी के एक-एक, 10-10 घंटे बेचारे को ना खाने को दे रहे हैं, ना पानी दिया। आज इस सदन के माध्यम से मैं अपने सारे आम आदमी पार्टी के एमएलएज, मंत्री, सारे कार्यकताओं को जितने आम आदमी पार्टी के देशभर में कार्यकर्ता हैं उनको मैं अपील करना चाहता हूं, अपने-अपने घर में कह दो और तैयार हो जाओ जेल जाने के लिये। इनसे डरने की जरूरत नहीं है, इनसे डरने की जरूरत नहीं है तैयार हो जाओ जेल जाने के लिये। मैं खुद 15 दिन जेल में रह चुका कोई दिक्कत नहीं होती। और ये...

...व्यवधान...

माननीय मुख्यमंत्रीः सर, मेरे को बोलने दें...

माननीया अध्यक्षः बिधूड़ी जी ये कोई तरीका तो नहीं है आप तो बहुत सीनियर हैं।

माननीय मुख्यमंत्रीः और इनकी जांच कैसे होती है, क्या फर्जी जांच है इसकी मैं एक कहानी सुनाना चाहूंगा की इनकी जांच कैसे होती है। एक बार 3 देशों की पुलिस, उनमें काम्पीटिशन हुआ, भारत की पुलिस, अमेरिका की पुलिस और इंग्लैंड की पुलिस।... तो कम्पीटिशन ये था भई कौन से देश की पुलिस सबसे जल्दी चोर को पकड़ लेती है। तो पहले अमेरिका की पुलिस आई, उनको कहा गया ये-ये, फलांना-फलांना चोर है इसको पकड़ो। दो दिन में चोर को

पकड़कर ले आए। फिर इंग्लैंड की पुलिस आई उनको कहा गया भई चोर को पकड़ो वो एक दिन में चोर को पकड़कर ले आई। फिर भारत का नम्बर आया, बीजेपी वाले आ गए। बोले जी तुम्हारी पुलिस, बोले बस हमीं हैं। बोला हमारे यहां पुलिस-वलिस कुछ नहीं है बस हमीं है। सबकुछ हमीं है बताओ कौन... तो उनको बोला भई चोर पकड़ो, एक दिन हो गया, दो दिन हो गया, तीन दिन हो गए, आए नहीं आए नहीं तो सारे अमेरिका वाले, लंदन वाले वो सारे ढूंढ़ने निकले भई कहां रह गए ये भाजपा वाले, तो देखा एक जगह एक आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता को पकड़ रखा और पीट-पीट कर बोल रहें हैं बोल मैं चोर हूं, बोल मैं चोर हूं, बोल मैं चोर हूं, ऐसे इनकी जांच होती है। दोस्तो पूरे देश के अंदर आज एक-एक करके, एक-एक करके सारे पार्टियाँ टूटती जा रही हैं, सारी पार्टियाँ झुकती जा रही हैं, सारी पार्टियाँ गिरती जा रही हैं। इन्होंने सबको तोड़ लिया, आज पूरा देश आपकी तरफ देख रहा है। पूरा देश आम आदमी पार्टी की तरफ देख रहा है। केवल आम आदमी पार्टी है, आम आदमी पार्टी अकेली है जिससे इनकी पैंट गीली होती है। केवल आम आदमी पार्टी है जिससे इनके टॉप के दोनों नेता डरते है। तुम सारे मत टूटना किसी भी हालत में। अभी मैं गुजरात से वापस आ रहा था, मेरे बगल में एक आदमी बैठा था, गुजरात का था। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया कस के और मुझे कहता है कि सर कुछ भी करो, गुजरात को बचा लो इनसे। मैं सोच रहा था कि कितनी उम्मीद है लोगों को हम लोगों से, कितनी ज्यादा उम्मीद। मैंने उसको बोला यार तुम लोग कुछ क्यों नहीं करते, कहता है सर सारे डरे हुए हैं, सब डरे हुए हैं किसी की हिम्मत नहीं होती इनके खिलाफ बोलने की, सबको डरा रखा है। आज का ये दौर जो चल रहा है हमारे देश के अंदर, ये इतिहास

में काले अक्षरों से लिखा जाएगा और जब ये इतिहास के अंदर काले अक्षरों से लिखा जाएगा उस वक्त तुम लोगों का नाम स्वतंत्रता सेनानी के रूप में लिखा जाएगा। उस वक्त सत्येन्द्र जैन का नाम स्वतंत्रता सेनानी, मनीष सिसोदिया का नाम, संजीव झा का नाम, जितने तुम जेल गए हो सबका नाम। आज के जमाने के तुम सारे भगत सिंह हो, मरने के लिये, कटने के लिये तैयार रहना। आज मैंने अभी आने से पहले सुन रहा था कोई एक टीवी चैनल है बहुत बड़ा उस टीवी चैनल का कोई एंकर है, उस एंकर ने कोई फर्जी क्लीप दिखा दी। तो छत्तीसगढ़ की पुलिस उसको गिरफतार करने आई है। होना चाहिये गिरफतार क्यों नहीं होना चाहिये।...

श्री सौरभ भारद्वाजः वॉरंट है सर वॉरंट है।

माननीय मुख्यमंत्रीः वॉरंट लेकर आई है। उत्तर प्रदेश की पुलिस उसको बचाने पहुंच गई। अब दोनों राज्यों की पुलिस गुत्थमगत्था हो रही है। बताओं ये क्या हाल बना दिया देश का। चाइना से लड़ाई नहीं होती तुमसे, अपने देश के अंदर एक राज्य की पुलिस दुसरे राज्य की पुलिस से इन्होंने लड़ा रखी है। पंजाब की पुलिस दिल्ली से एक अपराधी को पकड़ने के लिये आई, दिल्ली पुलिस उसको बचाने पहुंच गई। तो ये क्या हाल बना दिया एक राज्य की पुलिस दुसरे राज्य। हम सारे आपस में लड़ेंगे क्या बैठकर। लोग आपस में लड़ेंगे, पुलिस, इसकी पुलिस उससे लड़ेगी। अरे यार सारे मिलकर चाइना से लड़ो ना, चाइना हमारे देश के अंदर घुस गया उसको बाहर भगाते हैं सारे मिलकर। बीजेपी वाले, कॉग्रेस वाले, आम आदमी पार्टी सारे इकट्ठे हो जाओ। सारे आपस में ही लड़ेंगे तो कैसे...

...व्यवधान...

नेता प्रतिपक्षः चाइना को कहीं हिन्दुस्तान की एक इंच धरती पर कब्जा हमने नहीं करने दिया...

...व्यवधान...

श्री राजेश गुप्ताः दुनिया भर की रिपोर्ट है

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये बिधूड़ी जी ये क्या तरीका है,

...व्यवधान...

श्री सौरभ भारद्वाजः बिधूड़ी जी झूठ बोल रहे हो। झूठ बोल रहे हैं बिधूड़ी जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये क्या तरीका है। ये कोई तरीका नहीं है। आप जाइए। जाइए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः ये कोई तरीका नहीं है। ये बैठिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सोमनाथ भारती जी, बैठिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिए सब लोग। सोमनाथ भारती जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सोमनाथ भारती जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः सोमनाथ भारती जी, सौरभ जी।

...व्यवधान...

(विपक्ष के सदस्यों द्वारा सदन से वॉक आउट किया गया।)

माननीया अध्यक्षः बाहर जाइए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बाजपेयी जी, अनिल बाजपेयी जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अनिल बाजपेयी जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः अनिल बाजपेयी जी।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिए आप लोग। बैठिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः नरेश यादव जी बैठिए। बैठिए।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः बैठिए आप लोग। बाजपेयी जी बैठना है तो आप आराम से बैठिए नहीं तो फिर आप जा सकते हैं।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः नहीं, आप बैठिए आराम से, शांति से।

...व्यवधान...

माननीया अध्यक्षः मेरा सभी साथियों से निवेदन है शान्ति बनाकर रखें क्योंकि सत्य हर किसी के बस की सुनना नहीं है। इसीलिए वो लोग चले गये हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी। सच हर किसी से बर्दाश्त नहीं होता।

माननीय मुख्यमंत्रीः अभी उदयपुर में एक बड़ी दर्दनाक घटना घटी जिसमें दो लोगों ने एक आदमी का सरेआम गला काटकर उसका कत्ल कर दिया। बड़ी गन्दी घटना है। बड़ी दर्दनाक घटना है। हमने उसकी कड़ी निंदा की। हमने माँग की भई दोषियों को सजा दो। जब पुलिस दोषियों को पकड़ने पहुँची तो पता चला अखबारों और टीवी और सोशल मीडिया के माध्यम से कि उन दो लोगों जिन्होंने कत्ल किया था इतना दर्दनाक तरीके से, उनमें से एक जो है वो भाजपा का निकला। अभी जम्मू के अन्दर दो दिन पहले एक लश्कर का बहुत बड़ा आतंकवादी पकड़ा गया है वो लश्कर का कमांडर बताया जा रहा है। वो बताते हैं कि भाजपा का एक वरिष्ठ नेता निकला। आज मैंने यहां आने

के पहले आप लोग भी करना एक गूगल करना। रेपिस्ट्स इन बीजेपी। एक बड़ी लम्बी लिस्ट आती है। बीजेपी के अन्दर कौन-कौन बलात्कारी हैं। उनकी लम्बी लिस्ट आती है। तो मैंने आप लोगों के कईयों की वो देखी थी प्रेस कांफ्रेंस वगैरह। आप लोग कहते थे बीजेपी लुच्चे, लफंगे, गुंडे, मवाली, बलात्कारियों की पार्टी है। इसमें अब आतंकवादी भी शामिल हो रहे हैं। पूरे देश में इन्होंने बड़े-बड़े जिला ऑफिस खोले हैं। अब समझ में आया किसलिए खोले हैं। कहीं किसी जिले में कोई अपराध हो जाये। मैं आपको गारण्टी दे रहा हूं सबसे पहले अगर वहाँ की पुलिस इनके जिला ऑफिस पर रेड मार दे, अपराधी वहीं मिलेगा। वहीं मिलेगा आपको अपराधी। कहीं कोई बलात्कार हो जाये, बीजेपी में मिलेगा। कहीं कोई मर्डर हो जाये। या तो बीजेपी का होगा या बीजेपी में जाकरके शामिल हो जायेगा। अभी थोड़े दिन पहले सिंगापुर के एम्बेस्डर मेरे से मिलने के लिए आये। उन्होंने कहा जी आपने दिल्ली के अन्दर बहुत शानदार काम किया है। उन्होंने हमारे, उनको सारा काम पता था अपना। उन्होंने बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्कूल, अस्पताल सबका जिक्र किया। उन्होंने कहा जी आप सिंगापुर सरकार की तरफ से मैं आपको इनवाइट करता हूं। आप सिंगापुर आयें और सिंगापुर में हमने दुनिया भर के सारे शहरों के मेयर, मुख्यमंत्री अलग-अलग शहरों के बुला रखें हैं आपको सुनने के लिए। आप वहाँ आयें और बतायें कि आपका दिल्ली मॉडल क्या है। मैं समझता हूं ये तो देश के लिए गर्व की बात है। पूरी दुनिया सुनती कि दिल्ली मॉडल क्या है। पूरी दुनिया सुनती कि दिल्ली के लोगों ने किस तरह से अपने स्कूल, अस्पताल अच्छे कर दिये। इन्होंने मेरी सिंगापुर वाली फाईल रोककर बैठ गये। सिंगापुर नहीं जाने दे रहे हैं। ये केजरीवाल से नफरत करते-करते इस देश के साथ नफरत करने लग गये। पूरी दुनिया के अन्दर

भारत का नाम नहीं होना चाहिए किसी भी हालत में। हर चीज में मिलेनिया ट्रम्प आयी। मिलेनिया ट्रम्प ने भी सुना था वहाँ पर कि इण्डिया के अन्दर दिल्ली में सरकारी स्कूलों में बहुत अच्छा काम हुआ है। मिलेनिया ट्रम्प दो साल पहले डोनाल्ड ट्रम्प जब आये थे उनके साथ उनकी धर्मपत्नी मिलेनिया ट्रम्प भी आयी थी। मिलेनिया ट्रम्प ने आकरके बोला मैं तो दिल्ली सरकार के स्कूल देखूंगी तो मोदी जी ने बहुत समझाया। बहन मान जा, तेरे को मैं अच्छा प्राईवेट स्कूल दिखा देता हूं। नहीं मानी। बोले तेरे को मैं केन्द्र सरकार का कोई स्कूल दिखा देता हूं। हमारे दूसरे कोई राज्यों का स्कूल, नहीं मानी बोली मैं तो केजरीवाल के स्कूल में जाउँगी। अच्छी बात है। देश का नाम होता है पर ये मेरे को पिछली साल कोपनहेगन में बुलाया गया कि भई दिल्ली ने प्रदूषण के उपर अच्छा काम किया। मैं ये नहीं कह रहा प्रदूषण सारा कंट्रोल हो गया अभी बहुत काम करना है लेकिन पहले जो हालत थी उससे काफी सुधार हुआ है। हम ठीक दिष्ठाा में जा रहे हैं। अभी और समय लगेगा। 70 साल का इन्होंने जो बेड़ा गर्क किया है वो पाँच साल में खत्म नहीं हो सकता। अभी कर रहे हैं लेकिन उनको पता चला, दुनिया को पता चला भई दिल्ली में प्रदूषण पर अच्छा। उन्होंने मेरे को बुलाया। इन्होंने जाने नहीं दिया। ये बड़े दुर्भाग्य की बात है। देश के लिए दुर्भाग्य की बात है कि ये किस तरह से मुझे लगता है कि 75 साल के भारत में पहली बार ऐसा हुआ होगा कि कोई प्रधानमंत्री किसी मुख्यमंत्री को जाने से, विदेश जाने से रोकता है। तो दोस्तों ये जो अभी हमारे सामने रिजोलूशन हैं मैं इसका समर्थन करता हूं कि एमसीडी में जल्दी से जल्दी चुनाव होने चाहिए पर मैं अभी ये कह दूं, ये कराने वाले नहीं है। हमें कोर्ट जाना पड़ेगा और कोर्ट जायेंगे और चुनाव टाईम पर करवाकर रहेंगे हम लोग।

माननीया अध्यक्षः बहुत-बहुत धन्यवाद। श्री जरनैल सिंह जी प्रस्ताव करेंगे कि ये सदन दिनांक 04 जुलाई, 2022 को सदन में प्रस्तुत कार्य मंत्रणा समिति के चौथे प्रतिवेदन से सहमत है।

श्री जरनैल सिंहः अध्यक्षा महोदया, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन दिनांक 04 जुलाई, 2022 को प्रस्तुत कार्य मंत्रणा समिति के चौथे प्रतिवेदन से सहमत है।

माननीया अध्यक्षः यह प्रस्ताव अब सदन के समक्ष है-

जो इसके पक्ष में है, वो हाँ कहें।

जो इसके विरोध में है, वो ना कहें।

(सदस्यों के हां कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता।

प्रस्ताव पास हुआ।

अब सदन की कार्यवाही को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित करने से पहले मैं सदन के नेता एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी, माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया जी, सभी मंत्री गण, माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी जी तथा सदन के सभी साथी सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करती हूं। इसके अलावा सत्र के संचालन में सहयोग देने के लिए विधान सभा सचिवालय तथा दिल्ली सरकार के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ विभिन्न विभागों और सुरक्षा एजेंसियों तथा मीडिया के

सभी साथियों का धन्यवाद करती हूं। अब मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करती हूं कि वो राष्ट्रगान के लिए खड़े हो।

(राष्ट्रगान)

अब सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित की गई।)

...समाप्त...

© दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र शासन अधिनियम, 1991 की धारा 18 (2) के उपबंधों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली विधान सभा प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली के नियम 281 (2) के प्रावधानों के अंतर्गत प्रकाशित तथा ग्राफिक प्रिंटर्स, 2965 /41, बीडनपुरा, करोल बाग, नई दिल्ली-110 005 द्वारा मुद्रित।